जनम क़ैद

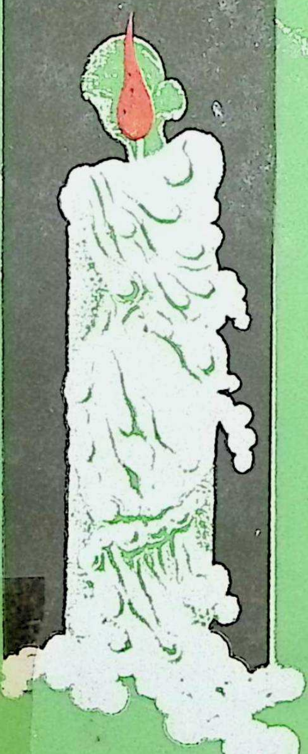

. ४३२
४२६ ज

गिरिजाकुमार माथुर

'जनम क़ैद' लेखकके श्रव्य नाटकोंका संग्रह है जो मूलतः उसी दृष्टिसे लिखे गये हैं। काव्यके अतिरिक्त साहित्यकी जिन अन्य दिशाओंमें लेखककी प्रतिभा क्रियाशील रही है उनमें नाटक, आलोचना तथा व्यक्तिलेख (पर्सनल एसे) प्रमुख हैं।

श्री माथुर पिछले १५-१६ वर्षोंसे नाटक लिखते रहे हैं, यहाँ कुछ चुने-चुने संग्रहीत हैं।

लेखकका दृष्टिकोण यथार्थमूलक रहा है, तथा विषय-भूमिके लिए उसने मध्यवर्गको चुना है। लेखककी शैली अधिकतर व्यंग्यमुखी है और उसने दैनन्दिन जीवनकी अनेक समस्याओंको इसी दृष्टिसे नाटकोंमें अंकित किया है।

प्रस्तुत संग्रह इस दृष्टिसे और भी महत्त्वपूर्ण है कि इसके नाटकोंमें श्रव्यशिल्पका सफल प्रयोग पाठकोंको मिलेगा। मध्यवर्गीय जीवनकी दैनिक प्रतिक्रियाओंके अतिरिक्त इस संग्रहमें कुछ नाटक ऐतिहासिक पीठिकापर भी आधारित हैं—जैसे 'संवत्सर' तथा 'कमल और रोटी।' अन्तिम नाटककी विशेषता यह है कि सन् १८५७ के विप्लवसे सम्बन्धित प्रसिद्ध ऐतिहासिक पात्रोंको न लेकर लेखकने उस समयके सामान्यवर्गके पात्र प्रस्तुत किये हैं और उनके माध्यमसे उन्नीसवीं शताब्दीके सामाजिक जीवन तथा चेतनाको अभिव्यक्ति दी है।

संग्रहका यह दूसरा संस्करण सामने प्रस्तुत है।

जनम क़ैद

गिरिजाकुमार माथुर

भारतीय राजदूतावास

डा. डिल्ली ... रेड्डी स्मारक
पुस्तकालय

भारतीय ज्ञानपीठ प्रकाशन

ज्ञानपीठ लोकोदय ग्रन्थमाला : ग्रन्थांक-८९

सम्पादक एवं नियामक :

लक्ष्मीचन्द्र जैन

Lokodaya Series : Title No. 98

JANAM KAID

(Radio Plays)

GIRIJAKUMAR MATHUR

Bharatiya Jnanpith

Publication

Second Edition 1966

Price Rs. 3.00

©

भारतीय ज्ञानपीठ प्रकाशन

प्रधान कार्यालय

९, अलीपुर पार्क प्लेस, कलकत्ता-२७

प्रकाशन कार्यालय

दुर्गाकुण्ड मार्ग, वाराणसी-५

विक्रय-केन्द्र

३६२०।२१, नेताजी सुभाष मार्ग, दिल्ली-६

तृतीय संस्करण १९६६

मूल्य ३.००

सन्मति मुद्रणालय, वाराणसी-५

डा० डिल्ली रमण रेड्डी
कल्याणी रेड्डी स्मारक
पुस्तकालय
9042

भारतीय ज्ञानपीठ
मूल्य
संशोधित
५-००

प्ररोचन

●

'जनम क़ैद' मेरे सात श्रव्य नाटकोंका संग्रह है। इन सभी नाटकोंमें श्रव्य चित्र ही अंकित मिलेंगे, दृश्यावलिके जो निर्देश स्थान-स्थानपर किये गये हैं वह मंचीय निर्देश न होकर नाटकके 'लोकेल' तथा वातावरण प्रस्तुत करनेके लिए दिये हैं। कविताकी भावनामयी भूमिके बाद वास्तविक दुनियाकी 'डिटेल-भरी' ज़मीनके लिए मुझे नाटकोंका माध्यम अच्छा लगता है। इसलिए मेरी रचना-प्रक्रियामें नाटक दूसरे स्थानपर आता है, आलोचना तीसरेपर।

नाटक लिखनेकी ओर मेरा झुकाव १९३६ में प्रसाद तथा शेक्सपीयरके सम्पर्कसे हुआ। हमारे घरमें पारसी स्टेज़पर अभिनीत 'बेताब' तथा आग़ा हश्रके नाटकोंकी कुछ पुस्तकें थीं जो कच्चे मकानके धूल-भरे वातावरणमें मुझे किताबोंमें इधर-उधर पड़ी मिल जाती थीं। उनकी भाषामें उर्दूकी भरमार रहती थी। इन नाटकोंके रुचिहीन वातावरण तथा इश्क़िया शेर आदिके कारण ही उन्हें बच्चोंकी पहुँचसे दूर रखा जाता था। उस समय नाटकोंकी कोई सुसंस्कृत परम्परा हमारे यहाँ बची नहीं थी और नाटक तथा नौटंकीके वातावरणमें बहुत अन्तर नहीं रह गया था। ऐसी स्थितिमें प्रसादजीकी साहित्यिक नाट्य कृतियोंने नाटकका

गरिमामय रूप प्रस्तुत कर एक नयी प्रेरणा प्रदान की। इसी प्रेरणासे इतिहासका विद्यार्थी होनेके नाते अपनी सांस्कृतिक विभूतिकी ओर मेरी दृष्टि गयी। किन्तु सुदूर पुरातनसे अधिक इतिहासके निकटतम पृष्ठ ही मुझे आकर्षित करते थे, विशेष रूपसे अठारहवीं और उन्नीसवीं सदीकी इतिहास-घटनाएँ। क्योंकि उनमें चमत्कारकी मात्रा नहीं थी तथा आदमीकी सामान्य भावनाएँ, राग-द्वेष इत्यादि अपने जीवनकी वास्तविकतासे ही मेल खाते थे। इस पृष्ठभूमिपर मैंने अपना सर्वप्रथम पंचअंकीय नाटक 'सिराजुद्दौला' लिखना आरम्भ किया। किन्तु न तो मैं ऐसे विषयका उस समय पूर्णतः निर्वाह कर सकता था और न लेखनीमें इतनी सामर्थ्य थी कि उसके विस्तारको ही सँभाल पाता। अतः 'सिराजुद्दौला' कभी पूरा नहीं हो सका। उसके बाद कितने ही नाटक मैंने लिखे और मुझे अनुभव हुआ कि एकांकी अथवा उससे भी लघु आकारके नाटक ही मेरी प्रकृतिके अधिक निकट हैं। ज़मानेकी तेज़ रफ़्तार और दबावोंके वही अधिक अनुरूप हैं। फिर जब बादमें मुझे श्रव्य-शिल्पका ज्ञान हुआ तो लगा कि मेरी नाट्य-भावनाकी ज़मीन वही है। श्रेष्ठ कला वह होती है जिसमें बाह्य उपादानोंका कमसे कम सहारा लिया जाता है। इस दृष्टिसे श्रव्य-शिल्पके आधारपर लिखे गये नाटकोंको मैं उत्कृष्ट कलाकी कोटिमें मानता हूँ।

अपने नाटकोंमें मैंने मध्यवर्गीय जीवनके 'सामान्य'को ही चित्रित किया है। वस्तुतः आम आदमियोंकी ज़िन्दगी विभिन्न रंगोंवाली सामान्य घटनाओंसे ही मिलकर बनती है, असामान्य या असाधारण बातें रोज़ नहीं होतीं और न उनके द्वारा जीवनकी स्वाभाविकताको आँका जा सकता है। वास्तविकता हमेशा सामान्य होती है और असामान्यता विकृति। यदि नाटकका माध्यम जीवनकी यथार्थताको अभिव्यंजित करनेके लिए है तो फिर उसे जीवनके सामान्य पक्षपर ही बल देना होगा। मैंने जीवनके विपर्ययोंको भी 'सामान्य' के माध्यमसे ही प्रस्तुत किया है। आम ज़िन्दगीमें

हम हमेशा रोते ही नहीं रहते, हँसी और उदासी डोरीमें बटे हुए धागोंके समान बराबर साथ साथ मिलकर चलती रहती है। 'कमल और रोटी'-जैसी ऐतिहासिक घटनापर आधारित नाटकमें भी सभी पात्र उस युगके सामान्य जीवनसे उठाये गये हैं और इतिहासप्रसिद्ध व्यक्तियोंके बदले साधारण जनोंके द्वारा क्रान्तिकी सामाजिक गन्ध देनेकी चेष्टा मैंने की है।

मैंने अपने अधिकांश नाटकोंको पारिवारिक जीवनमें ही प्रस्थापित किया है तथा मध्यवर्गीय गृहस्थीके छोटे-छोटे सुख-दुःखको नाटकोंका विषय बनाया है। यथार्थ जीवनके व्यंग्य-विपर्ययको मैंने सांकेतिक रूपसे व्यक्त किया है, उसे नाटकोंका सीधा आधार बनाकर एकाध मार्मिक स्थलपर प्रयुक्त किया है। पात्रोंकी भाषाको व्याकरण-सम्मत रखनेके बदले दैनिक जीवनकी बोलचालके निकट रखा है। इसी कारण वाक्योंमें जगह-जगह 'पेरेन्थेसिस' वाक्यांश, टुकड़ों आदिका प्रयोग मिलेगा। वास्तविक जीवनमें अमुक पात्र किस प्रकार बोलता, यही दृष्टि हर जगह रखी है।

नाटकोंकी पृष्ठभूमिके सम्बन्धमें केवल इतना ही, शेष बात नाटक स्वयं कहेंगे।

—गिरिजाकुमार माथुर

१. जनम क़ैद : ९
२. मध्यस्थ : ३७
३. बारात चढ़े : ६३
४. लाउड स्पीकर : १०३
५. संवत्सर : ११७
६. पिकनिक : १३५
७. कमल और रोटी : १६५
•
पात्र-परिचय : १९९

जनम क़ैद

(मनोवैज्ञानिक ट्रैजेडी)

•

दृश्य १

[स्थान : एक मध्यवर्गीय परिवारकी छोटे लॉनवाली कॉटेज और ड्राइंग-रूमका बरामदा। सन्ध्याका समय है, बरामदेमें कुछ फ्राकचेयर्स पड़ी हैं, बीचमें एक टेबिल। एक कोनेमें स्टूलपर फ़ोन रखा है। एक बड़ी आराम-कुरसीपर बलराजके वृद्ध रुग्ण पिता माथेपर हाथ रखे घोर चिन्तामग्न दिखाई देते हैं। हाथमें मुड़ा हुआ एक ख़त है जिसे अभी-अभी उन्होंने खोला है। मेज़पर पानीका एक गिलास, दवाकी शीशी और चम्मच रखा है। वहीं एक बड़ा-सा ख़ाकी लिफ़ाफ़ा पड़ा है और मेज़पर तथा नीचे फटी काग़ज़की चिंदियाँ। सामनेकी कुरसीपर बुश्शर्ट और पैण्ट पहने सतीश बैठा है—स्वस्थ, सुन्दर, नौजवान। यह बलराजका मित्र और सत्याके पति कैप्टेन महेन्द्रका सहपाठी है। पीछे ड्राइंगरूमका दरवाज़ा है जिसके परदेको खोलकर बलराज आता है]

बलराज : क्या खबर है पिताजी !

पिता : वही हमेशाका मज़मून है। पता नहीं लगा। तलाश जारी है। बलराज, मालूम होता है इण्टेलिजेन्सवालोंने एक ही मज़मूनके खत छपा रखे हैं। जैसे पहलेसे लिखकर रख लिये हों। इतने महीने गुज़र गये, लड़ाईमें पकड़े हुए तमाम क़ैदी वापस चले आ रहे हैं लेकिन [साँस लेकर] महेन्द्रका अबतक कोई पता नहीं। सत्याकी क़िस्मत ही ऐसी थी।

बलराज : बहनको क़िस्मतको क्यों दोष दे रहे हैं, पिताजी ! इसमें क़िस्मतकी क्या बात है ! क्यों न सतीश ?

सतीश : हाँ, सत्या भाभीकी क़िस्मतको क्या, महेन्द्रकी क़िस्मत कहिए। सारी लड़ाई क़रीब-क़रीब खत्म हो चुकी थी तब-तक उन्हें फ़्रण्टपर जानेका हुक्म न मिला और मिला तो शादीके ठीक एक हफ़्ते बाद । [साँस भरता है]

बलराज : क्या बतायें सत्या तो एक हफ़्ते भी सुख न देख सकी । [ठहरकर] आज सुबहसे अबतक रो रही हैं । जबसे वह खत पढ़ा है कि क़ैदियोंका हर कैम्प ढूँढ़ लिया गया पता नहीं चला, तबसे उसके आँसू थमते ही नहीं । शोभा समझा-समझाकर हार गयी । मुझसे तो बहनका दुःख नहीं देखा जाता.......

पिता : बलराज, मुझे इस बातका पहले ही से डर था । फ़ौजी ज़िन्दगीका क्या ठिकाना है । आज आरामसे बैठे हैं कल सामने मौत नाच रही है । [साँस भरकर] लेकिन अब तो सब बातें अपने मनकी होती हैं, बुज़ुर्गोंकी कौन सुनता है !

बलराज : पिताजी, अब गुज़री हुई बातोंकी याद करनेसे क्या फ़ायदा ? यह तो है नहीं कि फ़ौजवालोंकी शादियाँ न होती हों । फ़ौज भी एक कैरियर है ।

सतीश : नहीं बलराज, बाबूजी ठीक कहते हैं । महेन्द्रने जब फ़ौजमें नाम लिखाया था तब सभीने मना किया था । उन्होंने तो मुझे भी भरती हो जानेको बहुत मजबूर किया था । लेकिन मैंने कहा, न बाबा, मैं तो यहीं रहकर बिजनेस करूँगा । [किंचित् हँसकर] मैं चूँकि उम्रमें ज़रा छोटा था इस-लिए बेवक़ूफ़ करार दिया गया ।

बलराज : खैर ऐसे छोटे भी नहीं थे । महेन्द्र और तुममें दो ही सालका तो फ़र्क़ था ।

पिता : नहीं सतीश, तुम्हीं अच्छे रहे। यहीं रहकर लड़ाईका पूरा फ़ायदा उठाया और अच्छी तरह अपना काम जमा लिया। अच्छा किया जो फ़ौजमें भरती नहीं हुए। [साँस लेकर] महेन्द्र बड़ा धोखा दे गया हम सबको। अराकान पहुँचते ही जापानियोंका क़ैदी हुआ। वहाँसे वे उसे बटेविया ले गये। क़ैदमें जाने क्या-क्या मुसीबतें झेली होंगी। सतीश, हम और तुम तो यहाँ आरामसे बैठे रहे, पर महेन्द्रपर क्या-क्या गुज़री होगी, यह कौन जानता है। अराकानसे बटेविया…और अब…अब कहाँ है?

सतीश : क्या बताया जाये बाबूजी, हम लोग भरसक कोशिश तो कर रहे हैं। चारों तरफ़ खतोंका जाल बिछा रखा है। अपनी तरफ़से तो हम कोई ऐसी जगह न छोड़ेंगे जहाँ महेन्द्रके पाये जानेकी ज़रा भी सम्भावना हो। आगे हमारी क़िस्मत……

पिता : लेकिन सतीश, इन दो बरसोंमें इतनी जगहें ढूँढ़ ली गयीं, जहाँ-जहाँ फ़ौजी क़ैदियोंके कैम्प थे वहाँकी नयी-पुरानी सभी लिस्टें देख ली गयीं, पर सब बेकार। अब यह टोकियोका खत भी देख लो। एकदम वही पुराना मज़-मून है।

बलराज : [झुँझलाकर] पिताजी, आप तो वही बात बार-बार सोचते हैं और घबराते हैं। यह सही है कि महेन्द्रको अब-तक वापस आ जाना चाहिए था पर अब क्या किया जाये। हर तरहसे पता लगा लिया। कोशिश करना ही तो हमारे हाथ है। [ठहरकर] लेकिन मेरा मतलब तो यह है कि आखिर हम कबतक सोचते रहेंगे। इस तरह हमने सत्याकी ज़िन्दगी अधरमें अटका रखी है।

सतीश : हाँ, यह तो सच है, उनकी ज़िन्दगी एक उलझन बनकर रह गयी है।

पिता : इसी उलझनको तो दूर करना है सतीश। उसकी हालत मुझसे नहीं देखी जाती। न खाती है न पीती है, दिन-भर सिवा रोनेके और कुछ नहीं, रातमें मुश्किलसे सोती है।

[शोभा आती है]

सतीश : नमस्ते शोभा भाभी !

शोभा : नमस्ते।

पिता : शोभा बेटी, क्या हाल है सत्याका, दिनमें कुछ सोयी या नहीं ?....

शोभा : क्या सोती हैं, आँखें बन्द करके पड़ी रहती हैं। हम समझते हैं सो गयी होंगी, लेकिन थोड़ी देर बाद देखो तो जाग रही हैं और आँसू बह रहे हैं।

सतीश : [साँस भरकर] कितना दुःख उठा रही हैं। मैं भी इतना समझाता हूँ लेकिन कोई असर नहीं होता।

शोभा : यह तो जिन्दगी-भरका दुःख हो गया है सतीश बाबू ! लेकिन फिर भी आपके समझानेका सबसे ज्यादा असर होता है। हमसे तो वह किसी तरह नहीं समझतीं। [ठहरकर] क्या कोई नयी ख़बर है पिताजी ?

पिता : कोई खबर नहीं है शोभा ! रंगून, बर्मा, मलाया, सिंगापुर, सुमात्रा, जावा, फिलीपीन, जापान सब जगह ढूँढ़ ली गयीं, सब जगहोंसे न पाये जानेके खत आ गये....फिर महेन्द्र कहाँ है ?

बलराज : यह सवाल मत पूछिए पिताजी ! मेरी समझमें तो अब ढूँढ़ना बेकार है। न जाने यह दुविधा कब मिटेगी।

शोभा : तो क्या, यह समझ लें कि....

बलराज : [बात काटकर] कुछ समझनेको ज़रूरत नहीं है शोभा····
तुम जाओ सत्या अकेली है···अकेलेमें घबरायेगी। उसने कुछ खाया ?

शोभा : मैं तो कहकर थक गयी, कुछ नहीं खाया अबतक। आप ही देखिए।

बलराज : अच्छा, मैं देखता हूँ। सतीश, तुम यहाँ हो ना ?

सतीश : हाँ, हाँ, तुम देख आओ····[बलराजका प्रस्थान]

पिता : सतीश बेटा, उसने कुछ नहीं खाया····उफ़ मैं क्या करूँ, खुद बीमार रहता हूँ। [खाँसता है] आज बलराजकी माँ होती तो [गला भर आता है] तो सत्याकी यह हालत····कैसे बरदाश्त होती उसे ?

सतीश : बाबूजी, आप फ़िक्र क्यों करते हैं, हम लोग तो मौजूद हैं। उनकी देख-रेखकी आप कोई चिन्ता न करें, आपकी तबीयत तो ठीक है न ?

पिता अब क्या ठीक होगी सतीश ! [हँसकर धीरेसे] यह घाव तो शायद अब ज़िन्दगीके साथ ही जायेगा। बुढ़ापेमें यह भी देखना नसीब था ! भाग्यने उम्रपर जो मुहर लगा दी है वह तो मिट नहीं सकती। यह देखो—[लिफ़ाफ़ा उठाता है] यह ख़ाकी लिफ़ाफ़े आज दो सालसे लगातार चले आ रहे हैं। हर बार लगता है जैसे महेन्द्रकी खबर अब लाये····अब लाये ····लेकिन [ठहरकर] सबमें एक ही मज़मून होता है। दो सालसे कोई फ़र्क़ नहीं···इन लिफ़ाफ़ोंमें सत्याकी ज़िन्दगी····

सतीश : [बात पलटकर] अरे हाँ, वह तो मैं कहना भूल ही गया था बाबूजी····चीनके कौन्सल जनरलका खत आया है···· उन्होंने निजी तौरपर हमें मदद देनेका वायदा किया है····मैं काफ़ी दिनोंसे वहाँसे पत्रव्यवहार कर रहा था।

पिता : [ज़रा स्वस्थ होकर] क्या लिखा है उन्होंने····मुझे तुमने पहले नहीं बताया । कहाँ है वह ख़त···

सतीश : अभी दिखाता हूँ [पोर्टफ़ोलियोसे ढूँढ़कर ख़त निकालता है और खोलकर वृद्धके हाथोंमें देता है] लिखा है कि हम पूरी तरह चीनमें भी ढूँढ़नेकी कोशिश करेंगे····शांघाईके पास फ़ौजियोंका एक कंसन्ट्रेशन कैम्प था । वहाँ शायद पता लग जाये । मैंने उत्तर दे दिया है ।

पिता : [पुनः उदास होकर] दे दो सतीश । लेकिन जवाब मैं जानता हूँ । [साँस भरकर] जवाबमें जो कुछ होगा वह मुझे अभीसे पता है । [खाँसता है] उफ़····आज खाँसी फिर बढ़ गयी [बलराज वापस आता है]

सतीश : घबराइए मत बाबूजी, अभी हम चीनमें और तलाश करायेंगे····तबतक निराश होनेसे कोई फ़ायदा नहीं है···· बलराज !

बलराज : हाँ । लेकिन सतीश, कितनी तलाश अभी और की जायेगी ? इस तरह सत्याकी सारी ज़िन्दगी घुल-घुलकर तलाश ही में बीत जायेगी····और आखिरी फ़ैसला कभी न होगा ।

पिता : क्या फ़ैसला करना चाहते हो बलराज ? आजकल तुम्हारी कोई बात मेरी समझमें नहीं आती । [ठहरकर] खैर··· यह बताओ, सत्याने कुछ खाया ?

बलराज : नहीं, कुछ नहीं खाया । मेरे जाते ही उसने फिर रोना शुरू कर दिया । मुझसे तो यह अब बरदाश्त नहीं होता । यह दो साल इसी तरह आँसुओंमें बीते हैं । अब यह सब ज़ब्तके बाहर हो गया है पिताजी ।

पिता : तो बेटा, तुम्हीं बताओ क्या करें ?

बलराज : [ठहरकर] अगर हम यह मान लें कि महेन्द्र [विराम] अब इस संसारमें नहीं है····

पिता : [हाँफकर] बलराज !····

बलराज : तो सत्या कमसे कम अपनी आइन्दा ज़िन्दगी फिर बना सकती है, फिर बसा सकती है ।

पिता : बलराज !

बलराज : मैं ठीक कहता हूँ पिताजी, नाराज़ न होइए । इसीमें सत्याकी भलाई है। आख़िर उसकी शादी हुई न हुई बराबर थी। और अभी तमाम ज़िन्दगी उसके सामने है । सतीश भाई, तुम क्या कहते हो, तुम्हारी राय सबसे ज्यादा ज़रूरी है ।

सतीश : यह तो सही है बलराज कि उनकी हालत नहीं देखी जाती····[संकोचसे] उनकी आइन्दा ज़िन्दगी किसी तरह फिर बन जाये, इसमें हम सबको खुशी ही होगी । लेकिन, लेकिन····

पिता : नहीं, यह नहीं हो सकता, बलराज ! नहीं हो सकता । महेन्द्र ज़रूर वापस आयेगा । तुम नहीं····नहीं समझ सकते बलराज, इस समस्याका यह हल कभी नहीं हो सकता । यह जन्म-भरका काँटा है । महेन्द्रके वापस आनेमें ही सत्याकी भलाई है । महेन्द्रको वापस आना ही पड़ेगा ।

बलराज : और अगर वापिस न आये तो···

पिता : तो····तो क्या ! नहीं नहीं, उसे वापस आना पड़ेगा (गला भर आता है) सतीश !

सतीश : बाबूजी !

पिता : सतीश, मेरे पास आ जाओ बेटा । तुम्हें देखकर दिल भर जाता है । जाने क्यों विश्वास-सा होने लगता है कि महेन्द्र मिल जायेगा ।

सतीश : मैं यहीं तो हूँ बाबूजी, आप घबराइए मत····

पिता : मेरा हाथ पकड़ लो सतीश····हाँ अब ठीक है। ओह, महेन्द्र जब मेरा हाथ पकड़कर उठाता था, कुछ ऐसा ही लगता था।

बलराज : महेन्द्रके इतने गहरे दोस्त जो ठहरे।

पिता : [ग़ौरसे देखकर] तभी बलराज, तभी। ओह····[खाँसता है] महेन्द्रने तो हमारी कमर ही तोड़ दी। ज़िन्दगीकी सारी उम्मीदें खत्म हो गयीं।····अब तो मुझसे चला भी नहीं जाता बेटा, सतीश !

सतीश : आराम कीजिए बाबूजी ! [आरामकुरसीपर सँभाल कर लिटा-सा देता है] बलराज भाई, शोभा भाभी वहाँ उनके पास हैं न ?

बलराज : हाँ, समझानेकी कोशिश कर रही है। देखिए पिताजी, अब भी सोचनेका मौक़ा है। हम लोग यूँ ही दिन बिता रहे हैं। महीनोंपर महीने निकलते जाते हैं लेकिन कोई पता नहीं चलता। आख़िर कबतक सत्या इस तरह रहेगी। यह हाल रहा तो मुझे लगता है वह ज़्यादा ज़िन्दा भी नहीं रह सकती।

सतीश : बलराज भाई, तुम तो सबसे ज़्यादा घबराते हो।

बलराज : माफ़ करो सतीश, मेरा मन ठिकाने नहीं है। क्या करूँ, बहनकी हालतने मुझे पागल कर दिया है। [सोचकर] लेकिन सतीश, मैं जो कहता हूँ उसीसे यह दुःख मिट सकता है। और कुछ समझमें नहीं आता। अब महेन्द्रकी तलाशमें हमें ज़्यादा उम्मीद नहीं रखनी चाहिए।

सतीश : लेकिन सवाल तो उनको समझानेका है, उनके मान जानेका है। और ऐसी हालतमें उन्हें किस तरह यह सलाह

दी जा सकती है ? कहेगा भी कौन ?

बलराज : तुम ! तुम्हारी ही बात सत्या सबसे ज्यादा मानती है।

सतीश : [सोचकर] उनसे कहूँ.....नहीं नहीं [ठहरकर] इतना तो न घबराओ बलराज, इस तरह हताश मत होओ। सब ठीक हो जायेगा।

पिता : सच बेटा, सब ठीक हो जायेगा [साँस भरकर] अबतक तो सब ग़लत हुआ है।

सतीश : आप तो निराशावादी हो गये हैं पिताजी ! [सोचकर] यह ठीक है बलराज कि यों उनकी जिन्दगी बरबाद होते देखी नहीं जा सकती। पर....मैं तो यह कह रहा था पिताजी कि वह....क्या कह रहा था....हाँ वह चीनी कौन्सल जनरलका खत....

बलराज : [किंचित् झुँझलाकर] देखो सतीश, यह इतने दिन क़रीब-क़रीब इसी तरहके सोच-विचारमें निकल गये हैं और अबतक कोई फ़ायदा नहीं हुआ। इधर सत्या दिन-दिन घुलती जा रही है। न रातको चैन, न दिनको। यह तो ठीक है कि दुःख इनसानपर ही आते हैं, लेकिन बड़ी-से बड़ी घटना घटती है और खत्म हो जाती है। थोड़े दिन उसकी अपार पीड़ा होती है, दुःख होता है फिर धीरे-धीरे आदमी भूलने लगता है, धीरे-धीरे दुनियाके सब काम करने लगता है। यह भूल न होती तो आदमी ज़िन्दा न रहता। सत्याके केसमें इसका बिलकुल उलटा है। एक घटना दो सालसे लगातार घटती जा रही है, न घटनाका अन्त होता है, न दुःखका और न उस दुःखको भूलनेका मौक़ा आता है। इस तरह कितने दिन उसकी ज़िन्दगी और चल सकेगी ?

पिता : [घबड़ाकर] सतीश बेटा, बताओ क्या किया जाये। [हाथ मलकर फिर मुट्ठियाँ बाँधते हुए] क्या किया जाये। हे भगवान्....

सतीश : यह तो मैं मानता हूँ बलराज कि उनकी हालत बड़ी नाज़ुक हो गयी है। मैं भी देख रहा हूँ कि उनकी सेहत दिन-दिन गिरती जा रही है। बिलकुल पीली पड़ गयी हैं, वरना अभी कुछ दिन और....

बलराज : तो उसे दिन-दिन इसी तरह गिरने दिया जाये और हम हाथपर हाथ रखे बैठे रहें ?

सतीश : हाथपर हाथ रखे तो नहीं बैठे। इतनी दौड़-धूप तो जारी है।

बलराज : यह हाथपर हाथ रखना ही है। हमारी आँखोंके सामने वह एक टूटे फूलकी तरह मुरझायी चली जा रही है और हम कुछ नहीं कर सकते। उसके मुरझानेका क्रम नहीं रोक सकते—बस यही खयाल मुझे पागल बना देता है और मैं चाहता हूँ कि उसे जैसे भी हो, बचा लूँ। एक ही बहन है।

पिता : सत्याके बारेमें ऐसा मत कहो बेटा ! उसे कुछ नहीं होना चाहिए। उसकी ज़िन्दगीपर कोई आँच नहीं आनी चाहिए। वर्ना इससे पहले मेरी ज़िन्दगीका खात्मा समझो।

सतीश : नहीं बाबूजी ! आप विश्वास रखें। उन्हें कुछ नहीं होगा।

बलराज : लेकिन जो हालत है उससे तो हम देखतेके देखते रह जायेंगे।

सतीश : नहीं-नहीं, ऐसी बात नहीं होगी।

पिता : [सतीशका हाथ पकड़कर] हाँ, ऐसे ही कहो बेटा। सत्याके बारेमें कुछ भी और सोचना....[गला भर आता है]

बलराज : पर बात यही है सतीश। असलियतको हम कबतक टालते रहेंगे, अब सच्चाईका सामना करना ही पड़ेगा। महेन्द्रकी तलाशमें अब जितने दिन और गुज़रेंगे, यह समझ लो, सत्याके जीवनकी उतनी घड़ियाँ घट जायेंगी। अब तो एक ही चारा है···इधर या उधर।

पिता : यही ख़याल तो मुझे और खाये जा रहा है। उधर महेन्द्रके न मिलनेका दुःख, इधर सत्याकी दिन-दिन गिरती हालत। सतीश, यह ऐसी मजबूरी है जिससे भगवान् ही पार लगाये तो लग जाये, वर्ना नावमें तो पानी भर ही चुका है।

बलराज : मेरे कहनेका तो यह मतलब है कि दिन फ़िज़ूल गुज़रते चले जा रहे हैं। हमें आगेका ध्यान भी तो कभी-न-कभी करना ही पड़ेगा। आज नहीं कल। मान लीजिए महेन्द्र नहीं मिले और जिसका हमें डर है वही निकला। तब हमारे सामने यह सवाल फिर आयेगा। उसे आज ही सोचना क्या बुरा है। आख़िर तब भी हमें सोचना ही पड़ेगा।

पिता : कैसे सोच लें बलराज। यह कैसे मान लें कि महेन्द्र—नहीं-नहीं····[कुरसीसे आधा उठ-सा जाता है]

बलराज : पिताजी, आप तो एकदम भावावेशमें बह जाते हैं। सतीश, भाई तुम भी अपनी राय दो न। तुम इस बारेमें बिलकुल ख़ामोश हो।

सतीश : कुछ समझमें नहीं आता, क्या राय दूँ ! इधर उनका दुःख भी सिरसे ऊपर हो गया है उधर महेन्द्रका अबतक कुछ पता नहीं। ऐसी हालतमें क्या किया जाये ?

बलराज : जो मैं कहता हूँ। सत्याको फिरसे नयी ज़िन्दगीके लिए तैयार किया जाये।

पिता : [काँपकर] बलराज !

बलराज : पिताजी, आप ज़रा ग़ौर कीजिए।

[कुछ देरके लिए एकदम सन्नाटा छा जाता है]

पिता : [साँस भरकर] जब तुम लोगोंकी यही राय है तो दिलपर पत्थर रखकर इस बातपर भी, [रुककर] इस बातपर भी [एकदम पलटकर] कैसे ग़ौर करूँगा सतीश ?

सतीश : बाबूजी, आप, आप ज़रा, [वृद्धको बिठाते हुए और शीशी खोलकर चम्मचसे दवा निकालते हुए] लीजिए, यह दवा पी लीजिए।

बलराज : आप समझते होंगे मैं कितना नीच हूँ····जो महेन्द्रके बारेमें अभीसे ऐसा सोचता हूँ····लेकिन सत्याकी हालतने मुझे मजबूर कर दिया है कि मैं उसे फिरसे खुश देखनेके लिए कुछ भी कर डालूँ।

[शोभा घबरायी हुई आती है]

शोभा : सत्या बहनको जाने क्या हो गया है, अबतक चुप थीं और आंसू भी पोंछ डाले थे।····अब जाने क्या-क्या बातें कर रही हैं। कभी कहती हैं, खाकी दीवार नहीं टूटती। फिर कहने लगीं, भाभी····घरमें जितने लिफ़ाफ़े हैं सबको जला दो····

पिता : [चौंककर] क्या, क्या हुआ ? बलराज जल्दी जाकर देखो। सतीश, डॉक्टरको फ़ोन कर दो। खाकी दीवार और लिफ़ाफ़े उफ़····

शोभा : मुझे बताइए क्या करूँ ! वह तो जाने क्या-क्या कहे जा रही हैं····

[बलराज फ़ोनके पास जाता है]

पिता : [आधा उठते हुए] जाओ बेटा सतीश, जल्दीसे जाओ, तुम जाकर देखो····

सतीश : अच्छो बात है [वृद्धको फिर कुरसीपर लिटाकर] आप मत उठिए बाबूजो ! घबराइए मत । मैं अभी देखता हूँ ।
[परदा उठाकर जाता है । कुछ देरके लिए सन्नाटा]

बलराज : [फ़ोन बिना किये वापस आता है] तो बोलिए पिताजो····इस उलझनको और अधिक बढ़ानेसे क्या फ़ायदा है ?

शोभा : क्या कोई खास बात है, मैं भी सुन सकती हूँ ?

पिता : क्या बताऊँ बेटी शोभा ! बलराजने ऐसा सवाल खड़ा कर दिया है जिसको न सोचते बनता है न छोड़ते । इधर कुआँ है उधर खाई····

बलराज : अब कुआँ और खाईका सवाल ही नहीं है । अब तो सिर्फ़ एक ही सवाल है····सत्याकी ज़िन्दगी····

शोभा : तो फिर आप क्या करनेको कहते हैं····उपाय ही क्या है ?

बलराज : उपाय है····पिताजी मान जायें तो····

पिता : [सिर पकड़कर] मेरे मानने न माननेसे क्या होता है । [सिर झँझोड़कर] मुझसे यह सब मत कहो । मैं न सुन सकता, न यह सोच सकता ।

शोभा : लेकिन बात क्या है ? क्या उपाय आप बता रहे हैं ?

बलराज : यह कि सत्या अपनी ज़िन्दगी फिर शुरू करे । महेन्द्रके लिए अब और ठहरना सत्याकी ज़िन्दगी खत्म कर देना है ।

शोभा : कैसी बातें कर रहे हैं आप [हँसकर] बहन और भाई दोनों एक-से हो रहे हैं ।

बलराज : नहीं शोभा, यह हँसीकी बात नहीं है । ग़ौर करनेको बात है ।

शोभा : लेकिन ऐसा क्या हो गया। क्या महेन्द्रजीके बारेमें पता लग गया कि····

बलराज : लग गया ही समझो। अबतक नहीं लगा, अब आगे क्या लगेगा। अब तो चाहिए कि सत्या फिरसे शादी कर ले और महेन्द्रको भूल जाये।

शोभा : औरतके लिए भूलना सम्भव नहीं है।

बलराज : तुम तो पुराने ख़यालातकी ही रहीं।

शोभा : लेकिन सत्या बहनसे कैसे यह बात कही जायेगी ? कौन कहेगा ?

बलराज : कहनेको क्या है ? धीरे-धीरे उसके मनमें यह बात बिठानी पड़ेगी।

शोभा : लेकिन कहेगा कौन ?

बलराज : सतीश।

शोभा : [धीरेसे] यह तो मैं जानती थी।

बलराज : [चौंककर] क्या जानती थीं ?

पिता : [आँखोंपर-से हाथ हटाकर] क्या जानती थीं बेटी ?

शोभा : [रुककर] कुछ नहीं····यही कि [सोचते हुए] आप एक-न-एक दिन यही सोचेंगे।

बलराज : अच्छा, मैं तो समझा कि····[सोचते हुए] ख़ैर। तो बोलिए पिताजी ! आप क्या चाहते हैं ?

पिता : क्या कहूँ बेटा, मुझे यह भी देखना नसीब था। [साँस लेकर फिर सख़्त होकर] बलराज, तुम यह सब सोच तो रहे हो, लेकिन कौन ग़ैर आदमी शादी करनेको राज़ी हो जायेगा ? और ऐसी अनहोनी सूरतमें [फिर सिर पकड़ लेता है]

बलराज : ग़ैर आदमीकी कोई बात नहीं।

शोभा : तो और कौन ?

बलराज : आदमी तो घरमें ही हो सकता है। आप लोगोंके समझने और माननेकी बात है।

पिता : [ताज्जुबसे] तुम्हारा मतलब है कि····

बलराज : हाँ सतीशसे। बोलिए, क्या कहते हैं····

पिता : हे भगवान् ! यह मैं क्या सुन रहा हूँ। [खाँसता है] सतीशसे सत्या····उफ़····नहीं, नहीं। नहीं [हाथोंसे मुँह ढक लेता है]

[दरवाज़ेपर खटखट होती है]

शोभा : बलराज, जल्दी देखो कौन है [खाँसता है, साँस बढ़ गयी है]

[बलराज बाहर चला जाता है]

शोभा : साँस बढ़ रही है पिताजी, आप उठिए नहीं। एक चम्मच दवा दूँ।

पिता : [खाँसते हुए] नहीं, रहने दो। दवासे अब कुछ न होगा।

शोभा : ऐसा मत सोचिए पिताजी ! [शीशी खोलकर] एक चम्मच पी लीजिए।

पिता : मैं कुछ नहीं सोच रहा शोभा। कुछ भी नहीं सोच रहा। दिमाग़ बिलकुल खाली हो गया है। वह तो मैं इसलिए कह रहा था कि दवामें अब कुछ असर नहीं रहा। [बनावटी तरहसे किंचित् हँसकर] बहुत दिनसे पी रहा हूँ न ?

बलराज : [वापस आते हुए] इण्टेलिजेंसवालोंका खत है पिताजी !

पिता : [घबराकर] क्या लिखा है ? महेन्द्रका पता चल गया ? इधर लाओ [पढ़कर] उफ़ [खाँसता है] उम्मीद

रखना बेकार है। पूरा खयाल है कि लड़ाईमें ही काम आये—[खाँसकर] बलराज [ज़ोरसे] शोभा !

[आवाज़ सुनकर अन्दरसे सतीश जल्दी-जल्दी आता है]

सतीश : [आते हुए] क्या हुआ ?

बलराज : यह खत आया है।

[सतीश ख़त पढ़ता है]

सतीश : [साँस भरकर और माथेपर हाथ रखकर] क़िस्मतके आगे क्या चारा है !

बलराज : खैर सतीश, तुम सत्याके पास ही रहो—हम लोग यहाँ पिताजीको देखते हैं।

सतीश : अच्छी बात है।

[सतीश फिर भीतरके कमरेकी ओर वापस चला जाता है]

दृश्य–२

[भीतर आँगन पार करके एक सजा हुआ सोनेका कमरा, जिसके एक कोनेमें तकियेदार पलंग है। कोनेमें लम्बे शीशेवाली ड्रेसिंग टेबिल जिसके सामने छोटा कुशन रखा है। पलंगके पास एक छोटी टेबिल है जिसपर लिफ़ाफ़ोंका ढेर लगा है, इनमें ज़्यादातर ख़ाकी लिफ़ाफ़े हैं। कुछ पलंगपर भी पड़े हैं। पलंगके पास एक गद्दीदार कुरसी है जिसपर सतीश बैठा है। पलंगपर सत्या कुहनी टिकाये अधलेटी है। सामने तिपाईपर चाय रखी है। बातके बीचमें परदा खुलता है]

सतीश : ज़रा समझनेकी कोशिश करो सत्या !

सत्या : [चौंककर] क्या ? तुमने मेरा नाम लिया। सत्या भाभी नहीं कहा ? क्यों नहीं कहा ? क्यों ?

सतीश : नहीं, अब नहीं। देखो मेरी तरफ़। यह बात ठीक नहीं कि तुम खाना न खाओ। इससे क्या फ़ायदा है। इसके मानी यह हैं कि मैं भी आजसे अनशन शुरू कर दूं। और घरके सब लोग भी।

सत्या : तुम क्यों शुरू कर दोगे अनशन ?

सतीश : मेरी मर्ज़ी। मैं अब तुम्हारा दुःख बँटा लेना चाहता हूँ, इसलिए।

सत्या : [साँस लेकर] नहीं सतीश, मेरा दुःख कोई नहीं बँटा सकता। यह ग़लत है और जो चीज़ ग़लत है वह सही नहीं हो सकती। इस तरह मेरा दुःख और बढ़ेगा।

सतीश : लेकिन तुम चाहती ही यह हो। दूसरे भी आपके साथ ही साथ घुलेंगे यह विश्वास रखिए।

सत्या : क्यों घुलेंगे ? मैं ही खुद घुल जाना चाहती हूँ। मेरा दुःख तो अब शायद ही दूर हो सके। मैं तो अब कुछ नहीं चाहती सतीश। ज़िन्दा भी रहना नहीं चाहती [आवाज़ एकदम करुण हो जाती है]

सतीश : यह नहीं हो सकता, यह कभी नहीं हो सकता। हमारे यहाँकी यह फ़िलॉसफ़ी नहीं है। कष्टोंसे ऊपर उठकर जीवित रहना, दुःख-सुखको एक परछाईंकी तरह आता-जाता समझना हमारा सारा दर्शन, सारा फ़लसफ़ा रहा है। सोचो सत्या।

सत्या : [काँपकर] फिर तुमने सत्या कहा ! सतीश, तुम यह क्या कर रहे हो ?

सतीश : मैं ठीक ही कर रहा हूँ। मेरी तरफ़ देखो।

सत्या : नहीं। [मुँह फेरकर] नहीं। पहले बताओ तुम क्या चाहते हो ?

सतीश : अनजान बननेसे क्या फ़ायदा है, सत्या। खैर, इस वक़्त तो मैं यह चाहता हूँ कि यह चाय ठण्डी हो रही है और हमारी राह देख रही है।

सत्या : देखने दो। मैं भी तो अबतक राह ही देख रही थी। सतीश, ज़िन्दगीमें अब कुछ बाक़ी नहीं, जो मैं फिरसे वही सब करने लगूँ। दो सालसे ज़्यादा हो गये और कोई खबर नहीं।

सतीश : राह देखना अब बेकार है। महेन्द्रको अब तुम भूल जाओ। यह देखो, अभी-अभी यह लिफ़ाफ़ा आया है। इसीसे तुम्हें मालूम हो जायेगा।

सत्या : [एकदम चौंककर] लिफ़ाफ़ा ! ओह, नहीं-नहीं; उसे मत निकालो। मत निकालो उसे। मैं नहीं देख सकती।

सतीश : [ताज्जुबसे] क्यों, क्या बात है ? इसमें क्या है। तुम चुप क्यों हो गयीं सत्या ?

सत्या : नहीं-नहीं, मैं इसे हर्गिज़ नहीं देख सकती। [आँखें हाथोंसे बन्द कर लेती है] इसे अपनी जेबमें रखो सतीश ! छिपा लो। बहुत दूर, वहाँ, वहाँ ले जाओ। मैं नहीं देखूँगी।

सतीश : बात क्या है ? इतना क्यों डर गयीं ? खैर····यह लो। मैंने रख लिया। अब तो आँखें खोलो।

सत्या : [साँस लेकर] उफ़ ! आँखें बन्द कर लेनेपर भी चारों तरफ़ वही दिखते हैं। सपनोंमें भी हज़ारों खाकी लिफ़ाफ़े। वह भी ऐसा ही लिफ़ाफ़ा था जिसमें उन्हें एकदम लड़ाई-पर चले जानेका हुक्म मिला था। उस दिनसे इन लिफ़ाफ़ों-ने आज तक पीछा नहीं छोड़ा। लिफ़ाफ़ोंकी दीवार।

सतीश, इस दीवारको तोड़ दो। इस दीवारको तोड़ दो किसी तरह। यह दीवार नहीं टूटती, सतीश। वह, वह, इस दीवारमें वह बन्द हो गये हैं सतीश—

सतीश : सत्या, यह तुम क्या कह रही हो?

सत्या : मैं कुछ नहीं कह रही। कुछ नहीं। कहाँ कह रही हूँ। वह, वह, वह दी-वा-र [काँपती है]

सतीश : आँखें खोलो सत्या, ऐसी कोई दीवार नहीं है। कहीं कोई दीवार नहीं है।

सत्या : नहीं, वह दीवार नहीं टूटती। काश, उसे कोई तोड़ पाता। खाकी दीवार। उनकी वर्दी भी खाकी थी। उस दिन वह पूरी वर्दी पहनकर गये थे।

सतीश : सत्या [ज़ोरसे] देखो, मैं उस दीवारको अभी तोड़े देता हूँ। लो देखो, अभी तोड़ता हूँ। आँखें खोलो।

सत्या : [आँखें बन्द किये हुए] तुम तोड़ दोगे? सच। कैसे?

सतीश : ऐसे [लिफ़ाफ़ा फाड़ देता है। सत्या आँखें खोलती है] ऐसे और ऐसे! इसी तरह यह दीवार खण्ड-खण्ड होकर टूट जायेगी।

सत्या : [शान्तिकी साँस]

सतीश : मैं यह दीवार तोड़ दूँगा। बिलकुल इसी तरह। क्या तुम्हें मुझपर विश्वास नहीं। बोलो सत्या!

सत्या : हाँ, मुझे सत्या ही कहो। कहो। मुझे और कुछ किसीने नहीं कहा। उन्होंने तक नहीं।

सतीश : पहले तुम मुझे सतीश कहो।

सत्या : [बिलकुल सुदूर खोयी हुई आवाज़में] सतीश!

सतीश : सत्या!

सत्या : [चौंककर] नहीं-नहीं। मेरा हाथ छोड़ दो। यह क्या

हो गया सतीश ? यह तुमने क्या किया ? नहीं, यह ग़लत है । यह नहीं हो सकता । यह अब कभी नहीं हो सकता ।

सतीश : क्यों नहीं हो सकता ! सत्या यही होना चाहिए । तुम अपनी ज़िन्दगी कबतक बरबाद करोगी ? ऐसे कबतक चल सकता है ?

सत्या : नहीं, [हाथ छुड़ाकर] हमेशा ऐसे ही चलेगा । सतीश' मेरी ज़िन्दगीमें अब ऐसा कुछ नहीं रहा जो मैं किसीको दे सकूँ। यह ज़िन्दगी खाली हो गयी है, खत्म हो गयी है। अब इसके बारेमें सोचना फ़िज़ूल है । मैं शून्य हूँ और शून्यसे कोई क्या पा सकता है ?

सतीश : तुम क्या जानो । तुम क्या नहीं दे सकतीं । तुम्हें पाकर क्या नहीं मिल जायेगा । मैं तो इसकी कल्पनासे ही सिहर उठता हूँ। तुम कहती हो, तुम शून्य हो— सत्या, पर शून्यसे ही सारा निर्माण हुआ है, सारी दुनिया निकली है । इसी शून्यमें फिर एक नया स्वर्ग बस सकता है । सिर्फ़ तुम्हारे इशारेकी देर है ।

सत्या : यह क्या कह रहे हो सतीश? मत कहो, काश, इस समस्याका यह हल हो सकता । [साँस भरकर] लेकिन अब तो ज़िन्दगी सिर्फ़ राह देखनेमें ही खत्म होगी। इसका सिर्फ़ यही हल है ।

सतीश : कबतक राह देखोगी ? सत्या, इससे तो अब कोई फ़ायदा नजर नहीं आता ।

सत्या : ज़िन्दगी-भर राह देखनी पड़ेगी । वह कभी भी आ सकते हैं । किसी दिन भी लौट सकते हैं । अगर वह लौट आये तो ।''''तो नहीं सतीश—इस समस्याका कभी अन्त नहीं होगा ।

सतीश : कैसे नहीं हो सकता ? इस तरह तुम्हारी फूल-सी ज़िन्दगी बरबाद हो जाये, यह मैं नहीं देख सकता। मुझे तुम्हारी हालतने मजबूर कर दिया है कि····सत्या ज़रा समझनेकी कोशिश करो।

सत्या : क्या कोशिश करूँ !

सतीश : क्या मैं फिर कहूँ ? मेरी तरफ़ देखो। तुम्हें मैं बहुत-बहुत सुख दूँगा।

सत्या : सुख ! शादी ? नहीं-नहीं। किसकी शादी होगी [आँखें बन्द कर लेती है] शादी [खिलखिलाकर हँस पड़ती है] [फिर चुप होकर और सोचकर] मैं जानती हूँ कि मेरा जीवन तो बरबाद हो ही चुका है लेकिन मुझे किसी दूसरे-की ज़िन्दगी बरबाद करनेका क्या हक़ है !

सतीश : दूसरेकी ज़िन्दगी खराब होगी या अच्छी, इसका फ़ैसला तो किसी दूसरेपर छोड़ दो। देखो सत्या, दुनियाका यह नियम है कि विनाशके बाद ही रचना होती है। पतझर-पर ही वसन्त आता है—और फिर जो एक हफ़्तेकी विवाहित रहे—वह कोई विवाहित है ?

सत्या : नहीं सतीश, नहीं।

सतीश : सोचो सत्या, एक बार सब पिछला भूलकर ज़रा सोचो तो सही। तुम तो सोचनेसे भी इनकार कर रही हो।

सत्या : क्या सोचूँ ?

सतीश : यही जो मैं कह रहा हूँ····अच्छा, एक बार मेरी तरफ़ देखो।

सत्या : नहीं।

सतीश : क्यों ?

सत्या : मुझे डर लगता है।

सतीश : [ख़ुश होकर] तुम्हें मुझसे डरका अहसास हो रहा है सत्या ! तो इसका मैं यह अर्थ समझूँ कि····

सत्या : [बात काटकर] जो चाहो समझो [ठहरकर] तुम यह सब क्या कर रहे हो सतीश !

सतीश : [पास आकर] सूखी लता फिरसे हरी हो रही है सत्या [हाथ थाम लेता है]।

[दूरसे चूड़ियोंकी आवाज़ आती है]

सत्या : हटो, शोभा भाभी आ रही हैं।

दृश्य–३

[बाहरी ड्राइंगरूम, जिसमें आज सजावट अधिक है। एक ओर एक बड़ी-सी टेबिल लगी है जिसपर चीनीके बरतन रखे हैं, और चायका सामान। ड्राइंगरूममें बलराज और सतीश बैठे हैं। शाम छह बजेका समय]

बलराज : रमेश और मोहन अबतक नहीं पहुँचे सतीश। पाँचका वक़्त दिया था।

सतीश : आते ही होंगे। इन्तज़ाम तो ठीक है न।

बलराज : सब ठीक है। कल सिर्फ़ गिने-चुने बीस-पच्चीस मेहमानोंको बुला लेंगे। ज़्यादा शोर मचानेसे क्या फ़ायदा है [साँस लेकर] चलो अच्छा हुआ। सत्या मान गयी, वर्ना उसकी ज़िन्दगी बेकार बरबाद हो जाती। [शोभा आती है] शोभा, सत्या तैयार हुई ? तुम उसके पास ही रहना। कहीं अकेलेमें फिर कुछ और न सोचने लगे।

शोभा : तैयार हो रही हैं, मैं वहीं थी। वैसे तो ख़ुश ही नज़र आती हैं। ····तो क्या [ठहरकर] आज चायपर सिर्फ़ शादीकी खबर ही देंगे अपने दोस्तोंको ? और रजिस्ट्रेशन ?

सतीश : रजिस्ट्रेशन कल हो जायेगा। उसमें क्या देर लगती है। सारी बात तो सत्याके मान जानेकी थी।

शोभा : [धीरेसे] सुनिए····आपने महेन्द्रजीकी खोज करनेके लिए चीन लिखा था····कहीं ऐसा न हो कि····

बलराज : शोभा; अब फिर महेन्द्रका नाम न लेना। भूलकर भी वह चर्चा मत चलाओ। हर्गिज़····सतीश तुम सत्याके पास जाओ।

सतीश : अच्छी बात है। लो वह तो यहीं आ रही हैं। बलराज, तुम लोग ज़रा हट जाओ। [बलराज, शोभा चले जाते हैं]

[सत्याका प्रवेश]

सतीश : ड्रेसिंग हो गया रानीका ?

सत्या : सतीश, यह सब क्या हो रहा है ? मेरी समझमें कुछ नहीं आ रहा है। कुछ भी नहीं।

सतीश : सब ठीक हो रहा है सत्या ! कैसी चाँद-सी लग रही हो। यह बिन्दी कितनी ख़ूबसूरत लगती है तुम्हें। अच्छा लाओ, यह फूलोंके गजरे भी पहना दूँ।

सत्या : पहन लूँगी। मन नहीं होता।

सतीश : लाओ मैं पहना दूँ। आज मेरे हाथसे पहन लो। इधर लाओ····

सत्या : क्या कर रहे हो सतीश ! मेरा मन जाने कैसा हो रहा है। समझ बिलकुल काम नहीं कर रही।

सतीश : अब कलसे हमारी नयी ज़िन्दगी शुरू होगी। सत्या···· [साँस भरकर] कितना भाग्यशाली हूँ मैं। तुम नहीं समझ सकोगी।

सत्या : मुझे तो कुछ समझमें नहीं आ रहा है। सब लोग मुझे

इस तरह देखकर क्या कहेंगे ?

सतीश : कहेंगे एक चांदकी जगह दो हो गये ।

[बाहर बरामदेमें कुछ आवाज़ें]

बलराज : आओ भाई रमेश, नमस्ते मोहन ! आओ-आओ ।

रमेश : हलो सतीश ! भाई, बहुत अच्छा हुआ । चाहिए भी यही था । आखिर सत्याजीकी ज़िन्दगी बेकार ही बरबाद हो जाती । क्यों न मोहन ?

मोहन : मुझे तो यह सुनकर बड़ी ही ख़ुशी हुई । शादी कब है ?

बलराज : क़ल रजिस्ट्रेशन हो जायेगा । और शामको दावत ।

रमेश : भाई कांग्रेचुलेशन्स !

मोहन : सत्याजी, आपको भी मुबारिक हो ।

[सब बैठते हैं । भीतरसे शोभा अपनी दो मित्रोंसहित आती है । नमस्कारके उपरान्त]

सतीश : बैठो भाई । शोभा भाभी, तो फिर देर क्यों की जाये ? चाय बनाइए न ?

शोभा : अभी लीजिए ।

रमेश : भई सतीश, हमें सुनकर बड़ी ख़ुशी हुई । और सत्याजी, आपने भी बिलकुल ठीक किया । आखिर इस तरह....

शोभा : हाँ, हाँ, और क्या । शुगर कितनी....

रमेश : एक चम्मच !

सतीश : मुझे तो तीन ही दीजिएगा ।

मोहन : सतीश, बड़े होनेपर भी तुम्हारी चीनीकी लत नहीं छूटी....

सतीश : भाई, बिना शक्करकी मिठासके तो ज़िन्दगी बिलकुल ही कड़वी हो जाये ।

[सब हँसते हैं]

शोभा : ये लीजिए····

रमेश : तो पहले टोस्ट तो प्रपोज़ किया जाये····क्यों मोहन !

मोहन : हाँ, हाँ ।

रमेश : अच्छा तो [विराम] मिस्टर सतीश और मिसेज़ सत्याकी सेहतके लिए····

मोहन
बलराज
शोभा
कल्पना
रेखा } —आमीन । [दरवाज़ा खटकता है]

[करुण पृष्ठ संगीत आरम्भ होता है]

सत्या : कौन है ? दरवाज़ा किसने खटखटाया ?

सतीश : कोई भी नहीं है ।

सत्या : नहीं, कोई है । देखो, ज़रूर कोई है ।

सतीश : कोई नहीं है । बलराज, ज़रा देख लो ।

बलराज : अच्छा [बलराज बाहर जाता है, फिर एक लम्बा ख़ाकी लिफ़ाफ़ा हाथमें लिये लौटता है । लिफ़ाफ़ा खोलनेकी आवाज़] कुछ नहीं, खत है ।

सत्या : [सोफ़ेसे खड़े होकर] ख़ाकी लिफ़ाफ़ा····उफ़ उसे यहाँ मत लाओ····मत लाओ भैया····

सतीश : कोई बात नहीं है सत्या ! जरा मुझे दो बलराज ।

सत्या : नहीं, नहीं, मैं इस लिफ़ाफ़ेको नहीं देख सकती । इसे फाड़ दो····जला दो····

सतीश : ठीक है बलराज ! फाड़ दो, क्या ज़रूरत है ।

सत्या : भैया, वही खाकी लिफ़ाफ़ा, वही, उफ़····

सतीश : बलराज, क्यों खोल रहे हो ? मैं कहता हूँ ले जाओ उधर न ! फाड़ दो ।

सत्या : नहीं, नहीं; फाड़ो मत। देखने दो। भैया, ज़रा बताओ। इस लिफ़ाफ़ेमें क्या है? भैया....

सतीश : सत्या, पागल मत बनो। बलराज, भाई क्यों पढ़ रहे हो? फाड़ दो न!

बलराज : भाई, कोई ऐसी बात नहीं है। सब ठीक है। पढ़नेमें क्या हर्ज है?

सत्या : लिफ़ाफ़ोंकी दीवार....सतीश....नहीं....नहीं। यह सब क्या हो रहा है? क्या हो रहा है—[गिरने-सी लगती है]

रमेश : सतीश, ज़रा सँभालो सत्याको!

सतीश : यह क्या कर रही हो सत्या! आँखें खोलो।

बलराज : सत्या, सुनो डरनेकी कोई ज़रूरत नहीं है। इसमें लिखा है....

सत्या : मत पढ़िए, मत पढ़िए भैया!

बलराज : कुछ नहीं सत्या। घबराओ मत। इण्टेलिजेंसवालोंका ख़त है। लिखा है, आपके पिछले ख़तका हम अबतक कोई जवाब न दे सके। कैप्टेन महेन्द्रका कोई पता नहीं है और आइन्दा भी कोई उम्मीद नहीं। इसलिए अब उनकी फ़ाइल क्लोज़ की जा रही है। सत्या, देखो यह तो अच्छा ही हुआ।

सतीश : सत्या, आँखें खोलो।

[पृष्ठ संगीत ऊँचा हो जाता है]

सत्या : नहीं सतीश, अब नहीं। मुझे माफ़ करो। उनकी फ़ाइल ही क्लोज़ हो गयी। उफ़, खाकी लिफ़ाफ़ेमें यह लिखा है। [रोकर] सतीश, उस फ़ाइलके काग़ज़ोंमें मेरी ज़िन्दगी भी क़ैद हो गयी है। हमेशाके लिए क़ैद हो गयी है....

[पृष्ठ संगीत अधिक ऊँचा होकर धीरे-धीरे कम होता हुआ विलीन हो जाता है। परदा गिरता है]

मध्यस्थ

(सामाजिक व्यंग्य)

दृश्य-१

[एक मध्यवर्गीय घरका बेडरूम, जिसमें दो खिड़कियाँ दिखाई देती हैं। खिड़कियोंपर रंगीन परदे पड़े हुए हैं। कमरेमें दो दरवाज़े हैं, एक जो ड्राइंगरूममें खुलता है और दूसरा बीचकी गैलेरीमें। रातका वक्त है। कमरेमें दो अच्छे पलंग बराबर-बराबर बिछे हुए हैं। एक पलंगपर मनोहर चादर ओढ़े सोता नज़र आता है। उसकी पीठ दूसरे पलंगकी ओर है। इस दूसरे पलंगपर लीला बैठी स्वेटर बुन रही है। एक कोनेमें पलंगोंसे कुछ दूर रेडियो रखा है। गैलेरीका जो हिस्सा दरवाज़ेसे दिखाई देता है उसमें एक टेलेफ़ोन रखा नज़र आता है। कार्निसपर एक टाइम-पीस रखी है। जिसमें रातके ग्यारह बजा चाहते हैं। रेडियो धीरे-धीरे चल रहा है और अन्तिक एनाउन्समेण्टकी आवाज़ आती है।]

रेडियो : इस समय रातके ग्यारह बजा चाहते हैं, अब हमारी तीसरी सभाका कार्यक्रम समाप्त होता है।

[रेडियोको विलीन होती ध्वनि। हलके ख़र्राटेकी आवाज़]

लीला : [उठकर रेडियो बन्द करती है। फिर पलंगपर आकर बैठ जाती है। फिर धीरेसे कहती है] देखना, क्या सो गये !

मनोहर : [नींदमें ही] हूँ...ऊँ....

लीला : बड़ी जल्दी नींद आ गयी आज। [विराम, जिसमें नींदकी साँसें सुनाई दें] इतनी जल्दी सो गये ?

मनोहर : [ऊँघते हुए] ऐं····हाँ····

लीला : मैंने कहा बड़ी जल्दी सो गये····ग्यारह ही तो बजा है।

मनोहर : ऊँ····हूँ····सोने दो लीला।

लीला : मालूम होता है, आज कुछ काम नहीं करना, अभीसे सो गये।

मनोहर : क्या कह रही हो ?

लीला : मैंने कहा आज जल्दी नींद आ गयी। अभी तो ग्यारह ही बजा है।

मनोहर : तो क्या रात-भर जागता रहूँ ? [जम्हाई लेकर] सुबहसे शाम तक तो दफ़्तरमें जुता रहा। बस अब मैं सोऊँगा, बोलो मत !

[जम्हाई लेकर फिर सोनेकी कोशिश करता है]

लीला : मुझे तो नींद नहीं आ रही। मैं क्या करूँ [ठहरकर] देखना, कल तुम दफ़्तरमें सरलाकी शादीको बात ज़रूर पक्की कर लेना।

मनोहर : हूँ, अच्छा····

लीला : सुना भी कि यों ही कह दिया, अच्छा। रोज़ रातमें कह देती हूँ और तुम सुबह दफ़्तर जाकर भूल जाते हो। आज फिर मौसीका टेलेफ़ोन आया था। सरलाको शादीके लिए बहुत फ़िक्र है।

[ख़र्राटेकी आवाज़]

लीला : फिर सो गये। सोते-सोतेमें सुनते हैं नहीं और रोज़ कह देते हैं 'अच्छा'। सरलाको बात कह रही हूँ मैं।····

मनोहर : [फिर जागकर ऊँघते हुए] क्या कहा ?

लीला : मैंने कहा मौसीका टेलेफ़ोन आया था।

मनोहर : [घबराकर] क्या दफ़्तरसे टेलेफ़ोन आया है ? [चादर

सिरसे हटाकर] किसका है ?

लीला : दफ़्तरसे नहीं, मौसीका टेलेफ़ोन।

मनोहर : [झुँझलाकर] एख्खे, मौसाका टेलेफ़ोन। खामखाह ऐसी अच्छी नींदसे जगा दिया। आया है तो मैं क्या करूँ, तुम सुन लो मुझे सोने दो।

लीला : अभी नहीं, दिनमें आया था। सरलाकी शादीके लिए बहुत फ़िक्रमें हैं।

मनोहर : तो मैं क्या करूँ ? इस वक़्त मुझे नींद आ रही है।

लीला : तुम्हें रोज़ याद दिला देती हूँ कि ब्रजमोहनलालके लड़केसे सरलाकी पक्की कर लो, पर तुम वापस आकर कह देते हो, आज भूल गया, कल ज़रूर बात कर लूँगा। तुम्हारे ही दफ़्तरमें साथ काम करते हैं और तुम्हें इतनी-सी बात करनेकी फ़ुरसत नहीं मिलती।

मनोहर : [चिढ़कर] तुम्हें क़सम है जो मुझे सोने दो।

लीला : [खिसियाकर] मैं सोनेके लिए मना तो नहीं कर रही। सो जाओ पर यह बात जरा ध्यानसे सुन लो। यह काम जैसे भी हो कराना है—

मनोहर : [पूर्ववत् चिढ़कर] अभी जाऊँ ब्रजमोहनलालके घर ?

लीला : तुम भी हद कर देते हो। [खिसियानी हँसीके साथ] अभी जानेको मैं कब कह रही हूँ।

मनोहर : नहीं-नहीं अभी चला जाऊँ ? तुम्हारा यही तो मतलब है ! तभी तो अंकुश लिये पीछे पड़ी हो। न तुम्हें चैन न तुम्हारी मौसीको।

लीला : [नरम पड़कर] बात यह है कि ब्रजमोहनलालका लड़का बहुत अच्छा है-। कितने ही घरोंसे उसकी बात चल रही है। तुम देरपर देर करते जा रहे हो, फिर ऐसा अच्छा

डा॰ डिल्ली रमण रेग्मी
कल्याणी रेग्मी स्मारक
पुस्तकालय
9042

लड़का हाथसे निकल जायेगा। इसलिए कहती हूँ कि उनसे पक्की कर लो। तुम्हारे दोस्त भी हैं, तुम्हारा कहना नहीं टालेंगे।

मनोहर : अच्छा बाबा, अच्छा। डेढ़ महीनेसे तुमने मेरा पीछा लिया है। हर रोज़ वही क़िस्सा, और वह भी जब मुझे अच्छी नींद आने लगती है तभी तुम छेड़ती हो। दिन-भर कुछ नहीं कहतीं।

लीला : दिन-भर तुम घरपर ही तो बैठे रहते हो जो तुमसे कहूँ। न तुम्हें फ़ुरसत मिलती न मुझे चैन। एक टाँगसे सुबहसे इतनी रात तक फिरती रहती हूँ। अब जाके वक़्त मिलता है तो तुम कहते हो नींद खराब कर दी। मुझे तो मौसीसे यह कहते अब शर्म आने लगी है कि तुम आज भी भूल गये, कबतक कल-कल कहूँ।

मनोहर : तो तुम क्या करनेको कहती हो, कहो तो अभी चला जाऊँ। कह तो दिया।

लीला : बेकार नाराज़ क्यों होते हो। आरामसे सो जाओ। बस कल दफ़्तर जाते ही सारी बात पक्की कर लेना। सरलाकी जन्मपत्री भी उस लड़केसे बहुत अच्छी जुड़ी है। कहीं तुम्हारी भूलसे लड़का हाथसे न निकल जाये। मुझे तो बड़ी फ़िक्र है।

मनोहर : मेरी भूलसे। यह अच्छी रही। शादी हो तो मेरी वजहसे, न हो तो मेरी वजहसे। लड़का हाथ-बातसे कुछ नहीं निकलेगा मैंने कह दिया। मैं जब चाहे तै करा दूँगा, किसी दिन भी, पर रातको सोते वक़्त नहीं।

लीला : तुम तै करा दो तो देखना, मौसी जनम-भर तुम्हारा एहसान नहीं भूलेंगी। सच कहती हूँ, वह तो इतनी-इतनी तुम्हारी

तारीफ़ करती हैं कि बस क्या बताऊँ ?

मनोहर : एहसान नहीं भूलेंगी तो मुझे क्या कुछ खज़ाना दे देंगी ।

लीला : इसमें लेने-देनेकी क्या बात है जी, जैसी मेरी बहन वैसी तुम्हारी। बस तुम फ़ौरन पक्की करा दो फिर इन्हीं जाड़ोंमें मौसी शादी कर देंगी। हमें भी तो कुछ-न-कुछ तैयारी करनी पड़ेगी। मुझे तो बड़ी घबराहट हो रही है। इतना सारा काम सिरपर है। सभी सामान बाज़ारसे जाकर लाना है। सबके कपड़े, अपनी तैयारी, फिर [रुककर] सरलाके लिए साड़ियाँ और एकाध ज़ेवर भी तो तुम दोगे न ?

मनोहर : [व्यंग्यसे] कपड़े, सामान, ज़ेवर, हूँ ! और वह भी अभीसे। सरलाके पैदा होते ही तुमने नहीं कहना शुरू किया, यही ताज्जुब है। शादी भी तै करवाऊँ, दौड़-धूप भी करूँ, और ऊपरसे साड़ी, ज़ेवरका चन्दा भी दूँ। खूब रही।

लीला : अरे-ऽ तो क्या तुम सरलाको साड़ी ज़ेवर भी नहीं दोगे ? मौसी तो तुम्हारी तारीफ़ोंके पुल बाँधती रहती हैं। तुम अपनी बदनामी कराओगे ?

मनोहर : देखो लीला, मुझे ऐसी बदनामी-नेकनामीका कोई डर नहीं। [साँस लेकर] डर सिर्फ़ मुझे इस वक़्त अपनी नींदकी तरफ़से है जिसे आज तुम क़त्ल करनेपर तुली हुई हो।

लीला : क्या बुरी-बुरी बातें करते हो। अच्छा, सो जाओ अब। बिलकुल नहीं बोलूँगी, रात भी बहुत हो गयी है।

मनोहर : [मुँह ढाँककर] चलो तुम्हें यह खयाल तो हुआ।

लीला : हाँ, लेकिन देखना, कल भूलना मत। ब्रजमोहनलालसे

ज़रूर बात कर लेना ! मौसी टेलेफ़ोनपर फिर मुझसे पूछेंगी। उनका दिनमें कई बार टेलेफ़ोन आता है।

मनोहर : [जम्हाई लेते हुए] अच्छा भाई, अच्छा।

[मुँह ढँककर, दो-चार करवटें लेकर सो जाता है। लम्बा विराम जिसमें घड़ीकी टिक्-टिक् सुनाई देती है। फिर टेलेफ़ोनकी घण्टी कुछ देर तक बजती रहती है।]

मनोहर : [ऊँघते हुए] क्या है ?

[कोई नहीं बोलता].

[फिर कुछ जागकर] क्या कह रही हो। [पूर्ववत् मौन जिसमें फ़ोनकी घण्टी सुनाई दे] यह टेलेफ़ोन कहाँ बज रहा है। [फिर एकदम जागकर] एख्खै, यह तो हमारा ही है, नाकमें दम कर दिया। जाने कौन है इस वक़्त। [ठहरकर] मैंने कहा लीला, ए लीला, जरा टेलेफ़ोन तो जाकर देखो।

[लीलाकी झपकी लग गयी है]

मनोहर : अरे क्या सो गयीं लीला ? [ठहरकर] मुझे जगाकर और आप सो गयीं। वाह....वा....वा। जाने किसका फ़ोन है। यह कम्बख़्त सोने थोड़ी देगा। बजने दो मैं क्या करूँ, रातमें भी लोगोंको चैन नहीं। लीला, ए लीला ! [लीला पूर्ववत् सोती रहती है]

सोती हो तो सोती रहो। मैं भी नहीं उठता। मुँह ढँकके सोये जाता हूँ जो सुनाई न दे। बजता रहे मेरी बलासे....

[करवट बदलकर और चादर कसकर लपेटकर लेट जाता है। टेलेफ़ोनकी घण्टी निरन्तर बज रही है।]

[झुँझलाकर, चादर फेंककर] एख्खे, जान ले ली, अब क्या खाक नींद आयेगी। कोई फ़ोन नहीं उठाता, लेकिन

फ़ोन करनेवालोंको इससे क्या पड़ी है····[मुँह चिढ़ाकर] बस लिये खड़े हैं, देखें कबतक कोई नहीं उठायेगा। बड़ा वक़्त है इन फ़ोन करनेवालोंके पास। इतनी मरतबा लीलासे कहा कि रातको दस बजेके बाद फ़ोनका रिसीवर नीचे उठाकर रख दिया करो। मगर, म····म····गर मैं कहता हूँ लीला, क्या बनकर सो रही हो कि मेरी ही नींद हराम हो। लीला, ए लीला [हिलाता है] अरे, यह तो बिलकुल सो गयी। चलो सोने दो बेचारीको। दिन-भरकी थकी है। मैं ही देखूँ।

[उठकर चप्पल पहनता है और बदन झटकाता हुआ गैलरीमें जाता है। टेलेफ़ोनका रिसीवर झटकेसे उठाकर ज़ोरसे बोलता है।]

जी, जी, हाँ—कहाँसे बोल रही हैं आप। अच्छा···· अच्छा जी-जी-जी—मैं मनोहर हूँ फ़रमाइए—जी नहीं, रातकी कोई बात नहीं····तकलीफ़····[किंचित् हँसी] नहीं-नहीं····कोई बात नहीं····जी ? जी हाँ, हाँ सो गयी···· हाँजी, बच्चे भी। हाँ-आँ····रात काफ़ी हो गयी, ज़रा जल्दी सो जाते हैं। सुबह स्कूल दफ़्तरके लिए जल्दी उठना पड़ता है। नहीं····नहीं····कोई बात नहीं····हाँऽऽ अभी तो ग्यारह ही बजा है···जी हाँ सारी रात पड़ी है। फ़रमाइए इस वक़्त कैसे टेलेफ़ोन किया····हाँ····हाँ····बच्चे सब ठीक हैं····क्या कहा आपने? जो··· रिजल्ट ? किसका····रिजल्ट ? दिनेशका रिजल्ट ? जी हाँ, वह तो कभीका आ चुका···· हाँ तिमाही इम्तिहान था····उसको तो डेढ़ महीना भी हो गया····हाँ [जम्हाई-सा लेता हुआ] अच्छे नम्बरोंसे पास हुआ। लेकिन यह तो उसका इण्टरनल, मेरा मतलब

भीतरी ए····ए···घ····घरेलू इम्तिहान था—

[फ़ोनपर हाथ रखकर]

एखले सारे घरकी कथा पूछेंगी, अपनी नहीं कहेंगी। नहीं····नहीं····नहीं····आपसे बात नहीं है। मैं आपसे अपनी किसी वातके बारेमें नहीं कह रहा था। वह तो यों ही ए····ए····मैं कह रहा था कि····क्या कह रहा था, हाँ! वह दिनेशके इम्तिहानकी बात। जी····जी····आपकी दुआ है····हाँऽऽ दफ़्तर तो मैं रोज़ ही जाता हूँ। क्यों, कोई खास बात है? जी हाँ····मैंने कहा न बच्चे सो गये हैं, हाँ लीला भी [अचकचाकर] मेरा मतलब 'वो' भी सो गयीं [संकोचसे] जगाऊँ? जी आप कहें तो जगाऊँ। क्या मुझसे? हाँ हाँ फ़रमाइए क्या बात है, मुझे बता दीजिए मैं लीला [जल्दीसे] मेरा मतलब उनसे कह दूँगा····अच्छा कोई बात नहीं····जी हाँ ब्रजमोहनलाल हाँ, हाँ मेरे दफ़्तरमें ही काम करते हैं····हाँ बता चुकी हैं। उनसे मैंने बात की? जी क्या कहा? हाँ, हाँ, वो-वो मैंने बात की थी····और-और····कर लूँगा····जल्दी····कल ····हाँ····कल ही लीजिए····बात यह है कि दफ़्तरमें ज़रा काम ज्यादा रहता है फ़ुरसत नहीं मिल पाती और यह फ़ुरसतकी बातें हैं····नहीं आप बेफ़िक्र रहें····नहीं, नहीं भूलूँगा····चायपर बुला लूँ? किसको? ब्रजमोहनलालके लड़केको? अच्छा····ब्रजमोहनलालको खुद····अच्छा, ठीक है देखूँगा····न होगा तो ऐसा ही करूँगा। और फ़रमाइए···· हाँ-आँ····खयाल तो है तै हो जायेगी····मेरी तारीफ़ क्या है जी, वाह····मैं किस क़ाबिल हूँ। सब आप बुज़ुर्गोंकी कृपा है····हाँ-हाँ····ज़रूर खयाल रखूँगा···जी नमस्ते।

[फ़ोन पटक देता है]

घत् तेरेकी हद हो गयो। इतना लम्बा फ़ोन और आधी रातको। हे भगवान्, तुमने यह फ़ोनको अवतार क्यों दिया ? और बात क्या, वही कुत्तेकी तीन टाँग। [दाँत पीसकर] जीमें आता है इन्हें रात-भर फ़ोन करता रहूँ हर पाँच मिनिटपर।

लीला : [करवट लेती है, फिर ऊँघती हुई धीरेसे] किससे बातें कर रहे थे ?

मनोहर : जी, आपकी महामाया मौसीजीसे। आप भी कहें तो नम्बर मिलाऊँ ?

लीला : [घबराकर] मौसीका ? क्या हुआ ?....उन्हें कुछ हो तो नहीं गया।

मनोहर : उन्हें तो कभी कुछ नहीं होगा, लीला, वह तो अमरबेल खाकर आयी हैं पर मुझे ज़रूर कुछ हो जायेगा।

लीला : क्यों बुरी-बुरी बातें करते हो। बेचारी बहुत फ़िक्रमें हैं। क्या करें तुम उनका काम कर नहीं देते और उनकी घबराहट बढ़ती जाती है। घबराहटमें आके फ़ोन कर दिया होगा।

मनोहर : उनकी घबराहट बढ़ रही है तो मुझे अपनी ज़िन्दगीसे क्यों घबराये दे रही हैं।

लीला : अच्छा चलो सो जाओ। जिसके सिरपर बीतती है वही जानता है। जब तुम अपनी रानीका ब्याह करने खड़े होगे तब पता चलेगा।

मनोहर : अभी तो उसके लिए दस साल हैं। लेकिन तुम चाहो तो मुझे अभीसे कहना शुरू कर दो। दस सालकी हर रातमें कुड़ेंच लगाओ ताकि हर रात ऐसी ही बीते।

लीला : अच्छा, अच्छा, क्यों अपनी नींद खराब करते हो। सो जाओ।

मनोहर ; [साँस लेकर] अब क्या करूँगा सोकर? एक बार तुमने कहा सरलाके लिए, एक बार लम्बी अलिफ़ लैला बयान करके उन्होंने याद दिला दी, अब एक बार तुम फिर मुझे याद दिला दो, अभी तो रात बहुत पड़ी है।

लीला : [हँसकर] अब सो भी जाओ न !

मनोहर : ऐक्खे, सोचता हूँ····कलसे लम्बी छुट्टी ले डालूँ····और अब यही काम तबतक करता रहूँ जबतक कि तुम्हारी बहन, भतीजी, मौसी, बुआ, चाची, ताई, माई, वग़ैरह-वग़ैरह – यहाँतक कि पड़ोसियों तककी लड़कियोंकी शादियाँ न हो जायें।

लीला : सो जाओ, सो जाओ।

मनोहर : [साँस लेता है] सोऊँगा, लेकिन अभी तो शुरूआत है जागनेकी।

[फ़ोनकी घण्टी फिर बजती है]

फिर बजा लीला फ़ोन ! अच्छा तुम ठहरो, कल टेलेफ़ोन न कटवा दूँ तो मेरा नाम नहीं····[फ़ोन तक जाता है।] हलो···हलो····हलो जी—जी हाँ मैं मनोहर····हाँ····हाँ जाग रहा हूँ····नहीं अभीसे कैसे सो जाता····नहीं मुझे अभी नींद नहीं आयी····मैं तो बड़ी देरसे सोनेका आदी होता जा रहा हूँ····जी हाँ बड़ी देरसे····जी-ई-ई-जल्दी सो जानेका कहा था? जी ग़लती हुई····जी क्या? लीला मेरा मतलब उनसे····अच्छा-अच्छा····कह दूँगा। कोई और हुक्म····आपकी मेहरबानी है····

[फ़ोन बन्द कर देता है]

लीला : [गुस्सेसे] अब यह किसका फ़ोन था ?

मनोहर : [गैलरीसे आते हुए] श्रीमती लीलादेवीकी परमपूज्या एक हज़ार एक सौ आठ मौसीजी महारानीका ।

लीला : [गुस्सेसे] उन्होंने फिर फ़ोन किया । मुझे क्यों न बुलाया !

मनोहर : उन्होंने सिर्फ़ यह कहनेको फ़ोन किया था कि लीलासे कह देना कि कल सुबह उन्हें टेलेफ़ोन कर ले ।

लीला : क्या ?

मनोहर : [बैठते हुए] जी, आप चाहें तो अभी फ़ोन कर लीजिए ।

लीला : [उठकर गैलरीकी ओर जाते हुए] अच्छा तुम अब सो जाओ । मैं अब सुबह ही उनसे बात करूँगी ।

मनोहर : लेकिन तुम जा कहाँ रही हो क्या मौसीके घर ?

लीला : नहीं फ़ोनका रिसीवर नीचे उतारकर रखनेको ।

मनोहर : नहीं-नहीं अभी चार-छह फ़ोन और आ जाने दो। मज़ा तो तब है जब पहले उनका नौकर, फिर लड़का, फिर ख़ुद तुम्हारे मौसाजी इस वक़्त आयें और बादमें सुबहके पाँच बजे तुम्हारी मौसी भी आ जायें ।

लीला : ख़ैर, अब कुछ ऐसी बात नहीं होगी । तुम जल्दीसे यह काम कर दो, तो तुम्हारी मुसीबत भी मिटे, उनकी भी ।

मनोहर : भई कह तो दिया कि कर दूँगा । कितनी बार कहोगी । न हो इसी बातका एक रिकार्ड बनवा लो ।

लीला : हाँ-हाँ वह तो तुमने कह दिया । बस कल····

मनोहर : अच्छा हुज़ूर सलाम ! [चादर ओढ़कर सो जाता है]

[दृश्य परिवर्तन । चार महीने बाद । स्थान वही । सिर्फ़ कमरेकी जगह अब ड्राइंगरूम है । शामका वक़्त है । लीला बैठी हुई पूर्ववत् बुन रही है ।]

लीला : अबतक दफ़्तरसे नहीं आये। साढ़े सात बज चुका, जाने कहाँ रोज़ रह जाते हैं।

[दरवाज़ेपर आवाज़ होती है। दरवाज़ा खुलता है। मनोहरका प्रवेश]

आ गये, आज फिर तुमने इतनी देर कर दी। कहाँ रह गये थे ?

मनोहर : [बदन अकड़ाकर और अँगड़ाई लेकर] ऐ-हे-हे—

[कोट उतारता और वहीं कोचपर फेंक देता है]

लीला : क्या बात है, तबीयत तो ठीक है न ?

मनोहर : एख्खे, ए-हे-हे।

लीला : बात क्या है, जरा हाथ दिखाना बुखार तो नहीं है।

मनोहर : [कराहते हुए] हाँ, बुखार है। बड़ी देरसे चढ़ा है।

लीला : [हाथ थामकर] हाथ तो ठण्ढा है, यों ही कहते हो।

मनोहर : [कराहकर] हाथ ठण्ढा है तो क्या हुआ लीला, दिल और दिमाग़पर तो भरपूर एक सौ आठ डिग्री बुखार चढ़ा है—

लीला : कुछ बताओगे भी या यों ही—

मनोहर : देखो, लीला चार महीने पहले ही मैंने कह दिया था कि मुझपर यह बुखार मत चढ़ाओ वर्ना जिन्दगी-भर नहीं उतरेगा।

लीला : क्या हुआ ?

मनोहर : वही जो होना था। इतनी दौड़-धूप करके सरलाकी शादी पक्की की, फिर शादी हुई, दुनिया-भरके झगड़े निबटाये, रात-दिन जागा, पागलोंकी तरह मारा-मारा फिरा। अब शादी हो गयी। सब काम ठीक निबटा दिया तब भी चैन नहीं है। अब उनके रोज़के झगड़ों-शिकायतोंको सुनो,

पेशी करो, आज ब्रजमोहनलालके घर जाओ तो कल सरलाकी माँको समझाओ। फ़ुल टाइम सर्विस है यह, समझीं। तुम यहाँ आरामसे हो, लड़की-लड़केवाले वहाँ आरामसे हैं और सरला व सरलाके दूल्हेका तो पूछना ही क्या ? [साँस लेकर] लेकिन मेरी शामत नहीं मिटी। दोनों तरफ़से तुहमत, दोनों तरफ़का बीच-बचाव। अच्छा बे-पैसेका नौकर उनको मिल गया।

लीला : आज फिर कुछ बात हो गयी क्या ?

मनोहर : होती किस दिन नहीं है यह क्यों नहीं कहतीं। एक दफ़्तर शामको पाँच बजे तक वहाँ करता हूँ, दूसरा कभी ब्रज-मोहनलालके घर, कभी तुम्हारी मौसीके घर।

लीला : मौसी कल कह तो मुझसे भी रही थीं कि अच्छे भिख-मंगोंसे पाला पड़वाया। रोज़ कुछ-न-कुछ माँग पेश करते रहते हैं। आज यह भेजो, कल वह, यह नहीं दिया वह नहीं दिया, और जो भेजा जाता है वह उन्हें एक आँख नहीं सुहाता। हर बातमें नुकता-चीनी। पर मैंने तुमसे डरके मारे नहीं कहा। कल सुबह ही तो उन दोनोंको तुमने एक घण्टे तक समझाया था। मौसी कह रही थीं कि ये लोग ऐसे निकलेंगे, यह नहीं मालूम था। ब्रजमोहनलाल तुम्हारे दोस्त हैं, तुम्हें तो सब मालूम था।

मनोहर : हाँ, कह तो दिया सारा क़सूर मेरा ही है। किसीको लड़की ब्याह गयी, किसीको सामान मिला, किसीको सुन्दर-सी बीवी मिल गयी, क़सूर मेरा हो गया। मुझे तोहमत मिली।

लीला : इसमें तोहमतकी क्या बात है जी, तुमसे तो यों कहते हैं कि तुमपर लड़के-लड़कीवाले दोनोंको विश्वास है।

मनोहर : बड़ा विश्वास है। चार-पाँच महीनेसे ज़िन्दगी तबाह है।

हर वक़्त यही सुनता रहता हूँ कि अच्छे नीचोंसे पाला पड़वाया। मैं सब कुछ जानता था इसलिए क़सूर मेरा है। तुम्हारी मौसीके घरसे यही बात, ब्रजमोहनलालके घरसे भी और अपने घरमें तुम भी यही कहती रहती हो। तिसपर रोज पेशियाँ, रोज़ झगड़ोंके निबटारे, रोज़ भागदौड़, रोज़ टेलेफ़ोन।

[टेलेफ़ोनकी घण्टी बजती है]

लो फिर बजा फ़ोन। ज़रूर यह दोनोंमें-से किसी एकका होगा। जाओ तुम ही सुनो [कराहनेका नाट्य करते हुए] मुझसे तो उठा भी नहीं जाता। अभी वहींसे आया हूँ।

लीला : हाँ, मैं जाती हूँ।

[टेलेफ़ोन]

हाँ, मैं लीला हूँ मौसी····क्यों, क्यों, क्यों, अरे तुम तो रोने लगी। इसमें रोनेकी क्या बात है····घबराओ मत मौसी, मैं इनसे अभी कहती हूँ····फ़ोन करके बता दूँगी····[फ़ोन बन्द कर देती है] [आते हुए] मौसीका फ़ोन था····रो रही थीं कि सरलाको बुलाया था पर उसकी सासने मना कर दिया। ऐसी ही तकलीफ़ देती रहती है वह सरलाको। रो रही थीं····सरलाका बहुत मन था आनेको—

मनोहर : [मुँह चिढ़ाते हुए] क्यों झूठ बोल रही हो। जिस दिनसे शादी हुई है सरला तो वहाँसे आनेका नाम भी नहीं लेती। ज़रूर इसमें सरलाकी भी मरजी होगी। नयी-नयी शादी है, मियाँ बीवीमें सलाह हो गयी होगी। चन्द्रमोहन उसे एक दिनको नहीं छोड़ना चाहता।

लीला : फ़िज़ूल बात मत करो। तुमसे मौसीने यह कहा है कि

तुम अभी व्रजमोहनलालके घर जाकर उनकी बीवीको समझाओ।

मनोहर : अच्छा। आँय मैं तो नहीं जाता [कराहनेका नाट्य] मुझे बुखार चढ़ा है—हाँऽऽ।

लीला : क्यों बेकार बात करते हो। चले जाओ बड़े अच्छे हो। मौसी फूट-फूटकर रो रही थीं।

मनोहर : तो शादी क्यों की थीं अपनी बेटीको। घरपर ही उम्र-भर क्यों न रखा? मैं तो नहीं जाता।

लीला : अभी तो कपड़े पहने हुए हो। ज़रा देरको चले जाओ।

मनोहर : लीला! तुम मुझे देख रही हो—हाँ [कराहकर]

लीला : क्या मतलब?

मनोहर : मेरी सूरत इन चार महीनोंमें तुमने ग़ौरसे देखी····हाँ आँ।

लीला : हाँ देख तो रही हूँ, क्या है?

मनोहर : तुम्हें कोई फ़र्क़ नहीं लगता। पता है इसी भागदौड़में मेरा दस पौण्ड वज़न कम हो गया है····

लीला : [घबराकर] सच? मैंने तो ग़ौर नहीं किया।

मनोहर : सच लीला, इसीलिए तो कहता हूँ····ऊँ····कि कुछ मेरी तरफ़ यानी अपनी तरफ़ यानी अपने घरकी तरफ़ भी तो देखो···

[फ़ोन फिर बजता है]

हद हो गयी फ़ोन करनेकी भी। कल कनेक्शन न कटवा दिया तो मेरा नाम नहीं। जाओ लीला सुनो····

[लीला फ़ोनके पास जाती है]

लीला : फ़ोर-एट-फ़ाइव-नाइन! जी, जी हाँ, जी नमस्कार! हाँ जी हैं। अभी बुलाती हूँ····[वापस आकर]

व्रजमोहनलालका फ़ोन है वह तुम्हें बुला रहे हैं।

मनोहर : कुछ कहते भी हैं या सिर्फ़ 'बुला' रहे हैं।

लीला : यही कहा कि बुला दो बड़ा ज़रूरी काम है। तुम्हें शायद उनके घर जाना पड़े।

मनोहर : क्या खाक काम है। वही झगड़ा होगा। मैं तो नहीं जाता।

लीला : तो मैं क्या कह दूँ ?

मनोहर : कुछ कह दो, गुसलख़ानेमें हैं, खाना खा रहे हैं, सो गये या मर गये, कुछ भी कह दो।

लीला : ठीक बताओ क्या कह दूँ ? फ़ोन अभी रखा है। जाओ दो मिनिट बात कर लो।

मनोहर : मैं हरगिज़ नहीं जाऊँगा लीला !

लीला : तो फिर जल्दी बताओ क्या कह दूँ ? इतनी देरसे फ़ोन रखा है।

मनोहर : [सोचते हुए] ओफ़्फ़ो–इ–त–नी दे–र–से फ़ो–न। [एक दम मुसकराकर और चुटकी बजाकर] यह ठीक है.... लीला कह दो कि सरला और चन्द्रमोहनको इसी वक़्त यहाँ भेज दीजिए।

लीला : [अचरजसे] क्या कहा ? सरला और चन्द्रमोहनको। वह यहाँ क्या करेंगे ?

मनोहर : चाय पियेंगे, खाना खायेंगे, गप लड़ायेंगे। कुछ-न-कुछ करेंगे। कह दो यह बहुत ज़रूरी है। आज सारा फ़ैसला यहीं होगा।

लीला : [संकोचसे] तो कह दूँ। पर मैंने तो खानेकी कुछ तैयारी नहीं की। मुझे तो घबराहट होने लगी। [जाती है]

मनोहर : और हाँ, कह देना कि सरलाकी सासको भी भेज दें क्योंकि तुम्हारी मौसी भी यहाँ अभी आयेंगीं।

लीला : [वहींसे] मौसीसे तुमने कहा है यहाँ आनेको ?

मनोहर : नहीं कहा तो अब कह दूँगा। जाओ, जल्दी फ़ोन खत्म करो।

[लीला चली जाती है]

लीला : हलो, जी ? जो नहीं···मैं ही हूँ। वह कह रहे हैं कि आप मिसेज़ लाल, सरला और चन्द्रजीको अभी यहाँ भेज सकें तो अच्छा हो। जी हाँ, ऑफ़िससे अभी ही आये हैं····कुछ नहीं। ज़रा ऐसे हो, बैठेंगे, चाय पियेंगे। भेज दें तो अच्छा होगा। तबीयत ज़रा ठीक नहीं है। वही दोनों आ जाते तो अच्छा रहता····जी हाँ, इन्तज़ार करेंगे। क्या कहीं और जा रहे थे, दोनों ? [फ़ोनपर हाथ रखकर मनोहरको देखती है]

मनोहर : [दूरसे ही कहता है] तो क्या हुआ इधरसे होते जायें। ज़्यादा देर नहीं रोकेंगे।

लीला : [पूर्ववत् फ़ोन करते हुए] ये कह रहे हैं कि इधर होते हुए चले जायें। हाँ ज़रूर भेज दीजिए। अच्छा, नमस्कार।

[वापस आती है]

मनोहर : कह दिया ? क्या बोले ब्रजमोहनलाल ?

लीला : कुछ पसोपेशमें पड़ गये, फिर कहने लगे कि ऐसी ही ज़रूरी बात है तो अभी भेजता हूँ पर शायद उनकी बीवी नहीं आ पायेंगी।

मनोहर : अब मज़ा आया, अब पता लगा कि दिन-भर काम करनेके बाद भागदौड़ कैसी होती है। कितनी देरमें आयेंगे सरला-चन्द्रमोहन ?

लीला : बस अभी जल्दी ही आ जायेंगे। कहीं और जानेकी तैयारी-में थे। अब इधर होकर जायेंगे। तबतक कुछ नाश्तेका

इन्तज़ाम करूँ। तुम भी हाथ-मुँह धो लो।

मनोहर : पहले एक प्याला गरम चाय मुझे दे दो।

लीला : अच्छा, [नौकरको आवाज़ देकर] नन्दू....ऐ नन्दू ! चाय ले आ।

[भीतरसे आवाज़ आती है]

नन्दू : ला-रा हूँ साब !

मनोहर : तुम्हीं ला दो एक प्याला बनाकर। ज़रा जल्दीसे। मैं भी तबतक वाश कर लूँ।

[नौकर चायकी ट्रे लेकर आता है और मेज़पर रख देता है। लीला चाय बनाती है। इतनी देरमें मनोहर, जो कोट वहीं फेंककर बैठ गया था, कोट उठाकर अन्दर टाँगता है। फिर ड्राइंगरूममें आकर टाई उतारता है। लीला उसे चाय देती है]

लीला : अरे नन्दू, डबल रोटी मक्खन है या नहीं ?

नन्दू : है साब। अभी तो आधीसे जादा रखी है।

लीला : तो जल्दीसे टमाटर और ककड़ी ले आ। मैं काटकर उनको सेण्डविच बना दूँ।

नन्दू : अच्छा साब ! कुछ और बनाना है, हलुआ-अलुआ ?

लीला : हाँ हलुआ और बेसनकी पकौड़ी, जा जल्दीसे बना। तब-तक मैं सेण्डविच बना दूँ। सब्ज़ीकी टोकरी ले आ।

नन्दू : लाया साब।

[जाता है और टोकरी ले आता है]

[इतनी देरमें लीला कोचके कवर और बैंकरेस्ट ठीक करती है]

मनोहर : [चायका प्याला रखते हुए] सरला आज पहली मर्तबा शादीके बाद यहाँ आयेगी। मेरे खयालसे कुछ प्रेज़ेण्ट

देना चाहिए न ? क्यों ?

लीला : अच्छा, उस दिन याद है प्रेज़ेण्टके नामसे कितने नाराज हुए थे । अब इस वक़्त कहाँसे प्रेज़ेण्ट दोगे ? वह दोनों अभी आते ही होंगे । अब बाजार जानेका वक़्त है !

मनोहर : अभी उस दिन तुम तीन नयी साड़ियाँ लायी हो, उसीमें-से एक अच्छी-सी दे दो न ! है तो तुम्हारी बहन ही ।

लीला : [टमाटर काटते हुए] अच्छा जी, यह खूब रही । मेरी ही जूती मेरे ही सिर ।

मनोहर : अब तुम ज़्यादा गड़बड़ न करो । जाओ जल्दीसे निकाल-कर लाओ तो एक सिलेक्ट कर लें ।

लीला : भई, यह बहुत गड़बड़ है । तुम तो सब काम आखिरी वक़्त करते हो । अब नाश्तेका इन्तज़ाम करूँ या साड़ी निकालूँ ।

मनोहर : ये छोड़ दो । नन्दू कर लेगा । जाओ तुम साड़ियाँ निकाल लाओ । तबतक मैं कपड़े बदल लूँ ।

[लीला नौकरको टोकरी देती है । नौकर चला जाता है । लीला फिर अन्दर जाती है, फिर तीन साड़ियाँ निकालकर ले आती है और मनोहरको दिखलाते हुए]

लीला : लो देख लो, तुम्हीं चुन लो, मुझे तो सभी पसन्द हैं ।

मनोहर : भई ये काम अपने बसका नहीं है । आदमी चाहे कुछ करे औरतके व्यक्तित्वमें झाँक नहीं सकता और फिर औरतोंकी पसन्द ? इस जगह तो बड़े-बड़े एक्सपर्ट पानी भरते नज़र आयेंगे ।

लीला : अब ज्यादा वक़्त खराब मत करो । सरला आती ही होगी । न तो मुझे काम करने देते हो न खुद अपना काम करते हो ।

[मनोहर अन्दर जाते हुए]

मनोहर : यह सब काम तुम्हारा है, तुम जानो।

[लीला साड़ियाँ उलटती-पलटती है और उनमें-से एक पसन्द करके एक बड़े-से रेशमी स्कर्टमें उसे सँभालकर बाँध देती है। नौकरको आवाज़ देती है जो आकर सब्ज़ीकी टोकरी ले जाता है। मनोहर कपड़े बदलकर बाहर आ जाता है। और कोचपर बैठकर अख़बार पढ़ने लगता है]

लीला : अख़बार-वख़बार बैठकर न पढ़ो।

मनोहर : ऐख्खे, तो क्या टहल-टहलकर पढ़ूँ ?

लीला : अच्छा, अच्छा !

[दरवाज़ेपर आवाज़ होती है। दरवाज़ा खुलता है। चन्द्रमोहन और सरलाका प्रवेश]

चन्द्रमोहन : नमस्ते मनोहर चाचा !

मनोहर : आओ चन्द्रमोहन आओ। अच्छे वक़्तपर आ गये। सरला, अच्छी तो हो ?

सरला : जी हाँ, जीजाजी।

मनोहर : बैठो, बैठो। सरला चाय पिओगी ?

चन्द्रमोहन : जी नहीं, अभी पीकर आये हैं।

मनोहर : सवाल किससे और जवाब किसका ! हाँ भई क्यों न हो····

लीला : अच्छा····अच्छा····एक प्याला तो पियें आप भी, चन्द्रजी !

मनोहर : पहले चाय पियो, फिर खाना खाओ, और आज रात तुम दोनों यहीं रहो।

चन्द्रमोहन : घरपर सब राह देखेंगे। रहनेके लिए आप क्यों तकलीफ़ करते हैं।

मनोहर : ऐख्खे, यह क्यों नहीं कहते कि यहाँ रहनेमें तुम दोनोंको तकलीफ़ होगी। तभी तो जल्दीसे घर वापस जाना चाहते

हो। [हँसता है]

चन्द्रमोहन : नहीं तो, यह बात नहीं।

लीला : हद करते हो तुम भी····

मनोहर : अच्छा चाय तो पियो। [चाय पीनेका दृश्य, फिर चाय पीते हुए] सरला, खुश तो हो न ?

सरला : [संकोचसे] जो ?

मनोहर : बहुत खुश—हाँ भई क्यों न हो। चन्द्रमोहन अच्छे लगे न ?

सरला : [हँसकर] आप भो जीजाजी [लज्जित हो जाती है]

मनोहर : और चन्द्रमोहन तुम ! सरला कैसी लगीं। [हँसकर] ऐखबे, सरलाके नामसे तो बाँछें खिल जाती हैं। हाँ भाई क्यों न हो।

लीला : क्या हो रहा है तुम्हें, मैं सरलाको भीतर ले जाती हूँ। सरला, चलो इन्हें तो मजाक़ सूझ रहा है।

मनोहर : अरे नहीं, नहीं, नहीं। ठहरो, ठहरो। देखो लीला, मैं कहता था न कि दोनोंके मनमें कितनी मिसरी घुल रही है। तभी तो सरला वहांसे आनेका नाम नहीं लेती थी।

सरला : [संकोचसे] यह बात तो नहीं है। पर कोई आने दे तब न !

मनोहर : [हँसते हुए] हाँ, हाँ यही तो मैं भी कह रहा हूँ। [किंचित् मुड़कर] देखो चन्द्रमोहन, तुम दोनोंको मैंने इसलिए बुलाया है कि मैं जो कहूँ वह तुम कहोगे।

चन्द्रमोहन : जो कहें। आपको आज्ञा हो तो मैं····

मनोहर : हाँ वह तो मैं जानता हूँ। अच्छा, मैं तुम दोनोंसे कुछ कहलवाना चाहता हूँ। कहोगे ?

चन्द्रमोहन : जो !

मनोहर : और तुम सरला ?

सरला : [धीरेसे] मैं····जीजी, मैं कुछ नहीं कहूँगी।

मनोहर : यह नहीं हो सकता। अच्छा चन्द्रमोहन, तुम ज़रा सरला-की तरफ़ देखो—

चन्द्रमोहन : [लज्जित होकर] जी।

मनोहर : जी क्या, देखो न! घरमें तो रात-दिन देखते रहते होगे, यहाँ एक मिनिट नहीं देख सकते। देखो। अच्छा ठीक। अब मैं जो कहूँ, वह कहो। कहो, सरला, तुम मेरी पत्नी हो या हनी, बर्डी, स्वीटी कुछ कह दो आजके फ़ैशनमें। कहो—कहो न!

चन्द्रमोहन : पर चाचाजी, बात क्या है?

मनोहर : पहले कहो तो सही।

चन्द्रमोहन : अच्छा लीजिए [कुछ लज्जित होकर, फिर कुछ रुककर] 'तुम मेरी पत्नी हो।'

मनोहर : 'सरला' भी तो कहो!

चन्द्रमोहन : अच्छा–स–र–ला।

मनोहर : ठीक। अब सरला तुम कहो : चन्द्रमोहन, तुम मेरे पति हो या डियर, डार्लिंग, प्रियतम, कुछ सही।

सरला : जीजी, अन्दर चलो।

मनोहर : जा नहीं सकतीं। पहले कह दो। कहो।

सरला : मैं तो नहीं कहती।

मनोहर : ऐख्खे, यहाँ नहीं कहतीं और घरपर?

सरला : जीजी, मैं भीतर जाती हूँ।

मनोहर : यों नहीं जा सकतीं। अच्छा, कुछ भी कह दो।

सरला : मुझसे नहीं कहा जायेगा जीजी····

मनोहर : कुछ भी कह दो–कह दो 'ए जा' [हँसता है] कहो 'ए जी' तुम····

सरला : जीजी, क्या करूँ ?

लीला : कह दे न, उसमें क्या हर्ज है, कह दे ।

सरला : ए जो [शरमा जाती है]

मनोहर : अच्छा फिर यही सही । देखो चन्द्रमोहन, यह तुम्हारी पत्नी हैं या हनी, बर्डी, स्वीटी कुछ सही····और सरला यह तुम्हारे पति हैं या डियर डार्लिंग, ए जी सही । तुम पति यह पत्नी, लेकिन मैं कम्बख्त बीचमें कौन हूँ ।

चन्द्रमोहन : आप, यानी क्या मतलब ?

मनोहर : मतलब यह है कि जब तुम्हारी शादी भी नहीं हुई थी तबसे अबतक मुझे चैन नहीं मिला । अब शादी भी हो गयी, तब भी तुम्हारी माँ और सरलाकी माँ मुझे चैन नहीं लेने देतीं । भई, यह तुम्हारा मामला है, तुम पति-पत्नी हो । अब इसे सँभालो । वर्ना कहो तो मैं अपना ट्रान्सफ़र यहाँसे करा लूँ ।

चन्द्रमोहन : क्या, क्या बात हो गयी चाचा जी····

मनोहर : रोज ही होती रहती है । तुम्हारी माँ और तुम्हारी सासकी रोज कुछ-न-कुछ शिकायतें, झगड़े, मुक़दमे, और बीचमें घसीटा मैं जाता हूँ ।

चन्द्रमोहन : जी अच्छा ! मुझे मालूम नहीं था । बताइए मैं क्या करूँ ?

मनोहर : तुम सब कुछ कर सकते हो । नम्बर एक, अपने घरका फ़ोन हटवा दो ।

सरला : पर जीजाजी, इससे तो बड़ी तकलीफ़ हो जायेगी ।

मनोहर : अच्छा, नहीं हटा सकते तो उसमें ताला डाल दो और चाभी अपने पास रखो, यह तो ठीक है ।

चन्द्रमोहन : हाँ, यह हो सकता है ।

मनोहर : नम्बर दो, अपनी माँके खत सरलाकी माँके नाम उनसे

		डाकमें डालनेके लिए खुद लिया करो। और बाहर जाकर उनकी चिमनी फाईलिग कर दिया करो।
चन्द्रमोहन	:	यानी।
मनोहर	:	यानी फाड़ दिया करो, जला दिया करो। ताकि वह तुम्हारी सासके पास न पहुँचे और क़िस्से न चलें।
चन्द्रमोहन	:	अच्छा, यह भी सही।
मनोहर	:	और तीसरे यह कि सरलाको अभी हफ़्तेमें कमसे कम एक बार और बादमें महीनेमें कमसे कम दो बार एकाध-दिनकी कैज़ुअल लीव देकर इनके घर भेज दिया करो।
लीला	:	बड़े खराब हो तुम। कैसी-कैसी बातें कहते हो।
मनोहर	:	भई, क्या करें। हमें अपनी जिन्दगी भी तो रखनी है। और फिर हम कौन? न तीनमें न तेरहमें। तुम जानो और सरला जाने।
चन्द्रमोहन	:	तीन तेरहमें क्यों नहीं, आप उन दोनोंके बीचमें हैं चाचाजी!
मनोहर	:	नहीं भाई, सच कहता हूँ यह बीचका रास्ता बड़ा खतरनाक होता है।
		[सब हँसते हैं। यवनिका]

■

बारात चढ़े

[एक मध्यवर्गीय घरका भीतरी बरामदा। तीसरे पहरका वक़्त है। बरामदेमें एक होल्डाल बाँधा जा रहा है। एक ट्रंक तथा छोटा अटैची खुला रखा है। कपड़े, सामान बिखरे पड़े हैं। प्रकाश भाग-दौड़ कर रहा है। बीच-बीचमें आवाज़ें लगाता जाता है। रामसिंह, अरे कहाँ चला गया, क्लॉकमें चारके घण्टे बजनेकी आवाज़.]

प्रकाश : [सामान जमाते हुए बदहवासीमें] लो, साढ़े चार तो यहीं बज गये, डेढ़ घण्टा आगरेकी ट्रेन छूटनेका रह गया और रामसिंह अबतक नहीं आया, बारात स्टेशनपर ज़रूर चली गयी होगी। रमा, अरे भई रमा, तुम कहाँ हो। मुझे जल्दी हो रही है और आप जाने किस मटरगश्तीमें लगी हैं। यह नहीं कि झटपट सारा सामान ठीक करके बँधवा दें। रमा, मैं कहता हूँ रामसिंह कहाँ गया है। [झुँझलाकर] रमा, किधर चली गयीं।

रमा : शोर क्यों मचाते हो। तुम्हारे पीछे ही तो खड़ी हूँ।

प्रकाश : अरे भाई, 'हाँ' तो कह दिया करो। मुझे जल्दी पड़ी है, पुकार रहा हूँ और आप चुपचाप पीछे खड़ी हैं। हाँ कहनेमें तोले-भरकी जबान हो तो हिलती है। रामसिंह कहाँ है ?

रमा : तुम्हींने तो उसे लाण्ड्रीसे कपड़े लाने भेज रखा है। अब पूछते हो कहाँ है।

प्रकाश : तो अबतक क्यों नहीं आया। पहले ही क्यों न बता दिया। अब क्या करें····सारी क़मीज़ें और पेण्ट तो लाण्ड्रीमें

हैं। तुमने मेरा होल्डाल भी नहीं सजाया····

रमा : पीछे मुँह करके देखो, सब सजा दिया है।

प्रकाश : देखूँ····वाह बडा अच्छा सजाया है। कम्बल सबसे नीचे घुसा दिया। दरी सबसे ऊपर। अहा हा····बड़ा अच्छा सजाया है। क्या कहने हैं। और चादरें कहाँ हैं गद्देसे नीचे।

रमा : नहीं, सिरहाने, तकियोंके नीचे रखी हैं।

प्रकाश : कहाँ हैं [खखोलकर] इस ऊपरवाले खानेमें तो नहीं हैं।

रमा : उधर तकिये कहाँ हैं। चादरें तकियोंके नीचे इधर रखी हैं।

प्रकाश : वाह, बड़ी अच्छी नीचे रखी हैं। पैतानेके खानेमें तकिये रख दिये।

रमा : होल्डालमें सिरहाना पैताना क्या होता है जी ? दोनों तरफ़ एक-सा बोरा होता है।

प्रकाश : धन्य हो महाराज, होल्डाल बोरा होता है। क्या कहने हैं, बोरा होता है। अरे, जिस खानेके नीचे उठानेका हैण्डिल लगा होता है वह सिरहाना होता है, दूसरा पैताना, समझीं। अच्छा, चादर कितनी रख दीं।

रमा : दो चादर रख दीं।

प्रकाश ; [अचम्भेसे] क्या, सिर्फ़ दो। मैंने तो कहा था कि छह चादरें रखना।

रमा : बारात ठहरेगी तीन दिन और उसके लिए छह चादरें। क्या एक दिनमें दो चादरें बदलोगे।

प्रकाश : अरे भाई, कह तो दिया बारातका मामला है। दो तो आने-जानेमें ही मैली हो जायेंगी। रह गयीं चार, तो तीन दिनके लिए तीन और एक एक्स्ट्रा····इमरजेन्सीके लिए।

रमा : मुझे क्या है एक दर्जन ले जाओ।

प्रकाश : एक दर्जन तो मैंने तौलिये रखनेको कहे थे। रख दिये ?

रमा : एक दर्जन तौलिये ? हाय अम्मा। एक दर्जन तौलिये क्या तुम लड़कीवालेके घर बाँटने ले जा रहे हो ?

प्रकाश : तुम मुझे बारातमें जाने नहीं दोगी। मालूम हो गया। अब क्या खाक जाऊँगा, न चादरें रखीं, न तौलिये, न क़मीज़ें आयीं, न पतलून, न रामसिंह आया और न तुम····मेरा मतलब है कि ख़ैर तुम तो यहीं हो।

रमा : और यह गरम सूट क्यों सूटकेसमें भर लिये हैं ? अब गरम सूटका मौसम है ?

प्रकाश : तुम तो समझती नहीं रमा, कभी रातमें बारिश हो जाये तब ? उस वक़्त गरम कपड़े निकालने पड़ेंगे या नहीं। बस बातें बन्द करो और मेरी तैयारी हो जाने दो। तीन बार मुन्शीजीके घरसे बुलावे आ चुके हैं, बारात ज़रूर स्टेशनपर चली गयी होगी।

रमा : मैं कहती हूँ तुम बेकार बारातमें जा रहे हो। सीधे-सीधे घर बैठो। मुसीबत मोल लेना है तो तुम जानो····

प्रकाश : क्या कहने हैं तुम्हारे रमा। अरे एक तो अपने जिगरी दोस्त और साथी राजूकी शादी, दूसरी तरफ़ तुम्हारी रिश्तेदारी भी। मैं उसकी बारातमें न जाऊँगा तो ज़िन्दगी-भरकी तोहमत हो जायेगी।

रमा : पूरनकी बारातमें भी जब तुम ज़िद्दम-ज़िद्दा गये थे तब भी यही कहते थे, जिगरी दोस्तकी शादी। फिर जब बारातसे लौटे तबकी याद है। दरवाज़ेपर तुमको देखकर एक मिनिट मैं पहचान भी नहीं पायी थी। बालोंमें धूल, शेव बढ़ी, मुंहपर इंजिनके कोयलेकी स्याही, आँख सूजी हुई क्योंकि कोयला पड़ गया था, उँगलीपर खिड़की गिर

जानेसे पट्टी बँधी, कपड़े हलवाइयोंसे भी ज्यादा चीकट, पैरोंमें चट्टियाँ पहने क्योंकि नये जूते कोई चुरा ले गया था। देखकर हैरान रह गयी थी कि यह तुम हो या कोई उचक्का है। फिर तीन दिन बुखार चढ़ा रहा।

प्रकाश : भाई, तुम तो समझती नहीं। हर वक़्त ऐसी दुर्गति थोड़े ही होगी। एक तो वह गरमियोंकी बारात थी। अब कौन गरमी है। फिर बारात आगरे-जैसे शहरमें जा रही है। अतरौली थोड़े ही जा रही है।

रमा : अच्छा जी, तुम जानो। कह दिया अपना फ़र्ज़ पूरा किया। [**पीछेके कमरेमें चली जाती है। दूरसे**] इतना बड़ा सूटकेस ले जा रहे हो और अटैची भी। [**फिर वापस आकर**] लो यह तुम्हारे एक दर्जन तौलिये।

प्रकाश : मैं सोचता हूँ कि अब आठ ही ले जाऊँ, काफ़ी होंगे। रामसिंह नहीं आया अबतक। और हाँ, तुमने खानेके लिए सब चीज़ें टिफ़िन कैरियरमें रख दीं न ?

रमा : रख तो दीं, पर तुम बारातके साथ खाना क्यों ले जा रहे हो ? एक चीज़ भी तुम्हारे पल्ले नहीं पड़ेगी। अरे बारातमें जाओ तो बारातके साथ खाओ।

प्रकाश : क्या कहने हैं तुम्हारे रमा। तभी तो कहता हूँ कि तुमने हाईजीन ग़ौरसे नहीं पढ़ा। बारातका खाना तो मास प्रोडक्शन होता है। हम अपनी साफ़ चीज़ें खायेंगे। और हाँ, फलोंकी टोकरी और ऊपरका नाइट बेग कहाँ है ?

[**दरवाज़ा खटकता है…रामसिंहका प्रवेश**]

प्रकाश : बड़ी जल्दी आया तू रामसिंह। एक घण्टा लाण्ड्रीमें लगा दिया। तुझसे कहा था कि दस मिनिटमें सारे कपड़े लेकर वापस आना। एं….

रामसिंह : शाब, हम उधर गिया तो कपड़ेपर इशतिरी नहीं बना था।

प्रकाश : तो अबतक इस्तरी ही करा रहा था। क्या कहने हैं। हद हो गयी !

रामसिंह : नहीं शाब, उधर सादीके घरका छोटा भाई भी वहाँ खड़ा रखा था।

[प्रकाश, रमा हँसते हैं]

प्रकाश : खड़ा रखा था। क्या खड़ा रखा था ?

रमा : राजूका भाई होगा। वह भी अपने कपड़े लाण्ड्रीसे लेने आया होगा।

प्रकाश : [चुटकी बजाकर] तो इसका मतलब यह है कि बारात अभी स्टेशन नहीं गयी....मज़ा आ गया। जल्दी करो, जल्दी करो। रामसिंह तू अटैची इधर उठा ला। [रामसिंह जाता है] रमा, ज़रा मेरा शेवका सामान देना। हाँ जल्दी, ओ रामसिंह।

राम० : [पिछले कमरेसे तेज़ीसे वापस आकर] जी शाब !

प्रकाश : ज़रा लोटा गिलास भी ले आ।

राम० : जी शाब ! अभी लायगा। [दौड़कर जाता है]

प्रकाश : [फिर पुकारकर] ए रामसिंह !

राम० : हाँ शाब ! [लौट आता है]

प्रकाश : [स्वतः] सेण्टकी शीशी कहाँ गयी ?

राम० : नहीं मालूम शाब !

प्रकाश : अरे तुझसे नहीं पूछता। तू होल्डाल बाँध दे।

राम० : शमेट रखा है साब !

प्रकाश : नहीं होल्डाल नहीं...हाँ गिलास रख दे।

राम० : होगा शाब !

[दरवाज़ा खटकता है]

प्रकाश : रमा, देखना कौन है, रमा, मेरे छह जोड़ो रेशमी मोज़े किधर चल गये····सूटकेसमें हैं ही नहीं, रेशमी रूमाल भी ग़ायब हैं ।

[प्यारेमोहनकी आवाज़]

प्यारे : अजी प्रकाश साहब, झटपट दरवाज़ा खोलिए····

रमा : राजूके बहनोई प्यारेमोहन मालूम होते हैं····। रामसिंह दरवाज़ा खोल दे····

प्यारे : हुज़ूरेवाला, तशरीफ़ ले आऊँ भीतर ?

प्रकाश : आइए, आइए प्यारेमोहनजी [दरवाज़ा खुलता है]

प्यारे : [खाँसते हुए प्रवेश] आ जाऊँ, लाइन क्लियर है न ?

प्रकाश : आइए तशरीफ़ लाइए । बस मैं जल्दी-जल्दी तैयारी हो कर रहा था । तैयार हो समझिए । अब कुछ देर नहीं । रामसिंह मेरे जूते ले आ···

प्यारे : वल्लाह, प्रकाश बाबू, आपने तो बारातमें जानेकी वह ज़ोरदार तैयारी की है मानो आप अपनी ही शादी करने जा रहे हैं···

प्रकाश : [किंचित् हँसी] अजी अपनी हुई की तो याद भी अब नहीं रही । दूसरोंकी शादीमें ही आनन्द लेना रह गया है ।

प्यारे : तो एक दफ़े फिर अपनी शादीकी याद ताज़ा कर लो । रमाजीसे फिर रचा लो ।

प्रकाश : अब क्या ज़रूरत है उसकी, पुरानी बात फिरसे नयी तो हो नहीं सकती ।

प्यारे : जनाबेमन, ऐसा मत कहिए, सच तो यह है कि शादी चीज़ ही ऐसी है । मेरा मतलब है कि जो बिन ब्याहे हैं उनका मन तो करता ही है कि देर-सवेर वह भी दूल्हा बनें, मगर जो ब्याहे हुए हैं उनका भी दिल धड़क-धड़ककर कहता

रहता है कि एक बार फिर दूल्हा बना जाये, चाहे बाबा वही रहे। उसमें कोई हर्ज नहीं। दूल्हा बननेका मज़ा हो ऐसा है, हुज़ूरेवाला कि जो अबतक दूल्हा नहीं बना वह भी पछताता है और जो बन चुका है, फिर नहीं बन सकता वह भी पछताता है।

प्रकाश : लेकिन बड़े भाई, दोनोंके पछतावे अलग-अलग क़िस्मके होते हैं यह आप क्यों भूले जा रहे हैं। शादी होनेके बाद जो बरबादी गले पड़ती है....उसे बरबादी कहिए चाहे गृहस्थीकी आबादीका जंजाल....वह भी तो खयालमें रखिए। आपके पछतावेवाली बातको मैं ज़रा दूसरे पहलूसे देखता हूँ। यानी क्वाँरा ज़रूर यह सोचकर पछताता है कि मैं अबतक दूल्हा क्यों न बना, पर ब्याहा इसलिए पछताता है कि मैं दूल्हा बनकर दूल्हा हो बना क्यों न रहा, यह बाक़ीकी मुसीबत क्यों गले पड़ गयी ?

प्यारे : देखिए हुज़ूर, यह फ़िलासफ़ीकी झाड़-पोंछ आप करते रहेंगे, तो हम आप दोनों राजूकी बारातसे झड़-पुँछ जायेंगे यानी मेरा मतलब यह कि बारात चली जायेगी और छिप-कलीकी दुमकी तरह हम आप यहीं तड़पते रह जायेंगे इसलिए रामसिंह....

राम० : खड़ा हूँ शाब !

प्यारे : शाहबका शामान बाहर कारमें रखो। टैम नहीं रहा प्रकाश बाबू, जल्दी चलिए शाब।

[सब हँसते हैं]

प्रकाश : चलिए, अब मैं बिलकुल तैयार हूँ।

प्यारे : [कानमें] बारातमें जानेके पहले हर बारातीको चाहिए

कि अपनी शादीको याद ताज़ा करके चले। तभी वह दूसरेकी शादीका आनन्द ले सकता है। इसलिए चलनेके पहले ज़रा भीतर जाकर सलाम तो कर आओ।

[प्रकाश हँसता है]

प्रकाश : ख़ूब याद दिलायी। बारात चढ़नेकी बदहवासीमें सब कुछ भूल गया था। चार दिन तक घरके इन्तज़ामके लिए··· ऐं····अरे मेरा पर्स कहाँ है ?

प्यारे : देखा, कह रहा था न कि सलाम कर आइए। असली माल तो भीतर ही रह गया है।

प्रकाश : [हँसता हुआ भीतरके दरवाज़ेमें चला जाता है] 'मिस' [इस बीच प्यारेमोहन एक प्रचलित गानेकी ट्यून गुनगुनाता है और बाहरसे ड्राइवरको बुलाकर उसके हाथ सामान देता जाता है। थोड़ी देर बाद प्रकाश तथा नौकरका प्रवेश]

प्रकाश : हाँ, और देखो रामसिंह, बहुत ध्यानसे रहना। समझे। लो यह दो रुपये तुम्हारे लिए।

राम० : शाब, जरूर शाब, मक्खी भी नहीं चींकेगा।

प्रकाश : चलिए प्यारेमोहनजी, मैं हाज़िर हूँ।

प्यारे : ये कहिए कि तनसे। मन तो पीछे ही छूट गया। [दोनों हँसकर चले जाते हैं]

[शोरग़ुल, शहनाईकी आवाज़, औरतोंके गानेकी आवाज़]

आवाज़ १ : सब सामान ट्रकमें लद गया कि नहीं ?

आवाज़ २ : एक ट्रक तो गयी दूसरी तैयार है।

आवाज़ ३ : अरे खानेके टोकरे। किधर गये, चाची ?

स्त्री-स्वर : ये हैं इधर। उठा ले जाओ जल्दी।

आवाज़ १ : और सुराहियाँ।

स्त्री-स्वर : अरे-अरे यह सोभेका बक्स मत उठाओ। यह मुन्शीजीके साथ रहेगा। मैं कह रही हूँ, मत उठाओ। श्यामू ए श्यामू, अरे जाने कहाँ चला गया।

आवाज़ २ : राजू कहाँ है, जीजी जल्दी करो भाई, गाड़ीका वक़्त हो गया, रस्में अब खत्म करो''''उठाओ नौशेको। मोटर तैयार है।

[गानेकी आवाज़ें तेज़ हो जाती हैं]

आवाज़ ३ : सुनती नहीं हो, मुन्शीजी नाराज़ हो रहे हैं, बस रीतें अब बन्द करो। फिर बारात नहीं जा पायेगी।

मुन्शी : [आते हुए] बस बन्द करो यह औरत पुराण। बहुत रीतें हो चुकीं। समझीं, ट्रेन टाइम निकला जाता है।

[गाना मन्द पड़ जाता है]

मुन्शी : श्यामू, कहाँ हैं तेरे शौकतराय।

मामा शौकतराय : जी, जी, जी फ़रमाइए, मैं यहीं हूँ।

मुन्शी : भई, कुछ वक़्तका भी खयाल है, बन्द करवाइए यह सब और नौशेको कारमें बिठवाइए। बारातियोंकी लिस्ट कहाँ हैं, सब आ गये कि नहीं, नाम मिला लिये सबके।

मामा शौकतराय : जी, लिस्ट मिला ली, गोया चैक कर ली। इन औरतोंने नाकमें दम कर दिया, ग़लत कहता हूँ जी ? नौशे-को निकलने ही नहीं देतीं।

मुन्शी : मैं पूछता हूँ सब बाराती आ गये हों तो फ़ौरन स्टेशनके लिए रवाना होइए, वक़्त नहीं रहा।

मामा : जी रवाना होइए ? एक खेप तो चली गयी। असबाब और बाराती दोनोंकी। अब हमीं लोग रह गये हैं।

मुन्शी : और कोई तो नहीं रहा। लिस्ट दिखाइए····

मामा : [काग़ज़ निकालकर] जी, यह देखिए, सब टिक लगा दिये हैं।

मुन्शी : हूं, अपने, मेरे, श्यामू, राजू, रामू और बिल्लूके नामपर भी आपने 'टिक' लगा रखा है, यह क्यों ?

मामा : अजी हम तो गये ही समझिए। ग़लत कहता हूँ जी ?

मुन्शी : हूं, सभी तो आ गये मगर प्रकाश और प्यारेमोहन दिखाई नहीं देते। ये लोग कहाँ हैं ?

मामा : जी प्रकाश और प्यारेमोहन। हाँ, यह लोग नहीं दिखे। नाकमें दम कर दिया। पता नहीं कहाँ हैं ? श्यामू, अरे श्यामू !

श्यामू : [बाहरसे] जी मामा जी।

मामा : अरे श्यामू, प्रकाश और प्यारेमोहन अभी आये कि नहीं ?

श्यामू : नहीं मामाजी, मैंने प्रकाशके नौकरको अभी लाण्ड्रीमें देखा था····

मुन्शी : कमाल हो गया। अभी उनके कपड़े लाण्ड्रीसे ही आ रहे हैं। अब क्या उन्हें खाक गाड़ी मिलेगी। तंग कर दिया। शौकतराय, भाई किसी आदमीको जल्द उनके घर भेजिए।

मामा : अजी, दो बार आदमी भेजा, कोई हद भी हो। बादमें प्यारेमोहनने कहा कि मैं खुद प्रकाशको लाता हूँ। वह भी वहीं चिपक गये। नाकमें दम कर दिया, ग़लत कहता हूँ जी ?

मुन्शी : जी ! उनके लिए बारात नहीं रोकी जा सकती। चलिए, नौशेको कारमें बिठाइए, असबाब जो रह गया है उसे डिस्पैच करवाइए। बहूके ज़ेवर और कपड़ोंका सन्दूक़ अपने पास ही रखिए। समझे····

मामा : बहुत अच्छा। अभी लीजिए। देर तो इतनी हो गयी है कि ट्रेनमें सब असबाब बारातियोंको चढ़ाते-चढ़ाते कमर टूट जायेगी। ग़लत कहता हूँ, जी? प्रकाशबाबू और प्यारेमोहनका पता ही नहीं है। श्यामू, असबावकी लिस्ट निकालो ज़रा एक बार फिर चैक कर लें।

श्यामू : आप इधर ही आ जाइए मामाजी, मैं चैक कर रहा हूँ। ये लीजिए लिस्ट। आप बोलते जाइए, मैं गिनता जाता हूँ।

मामा : लाओ लिस्ट, हाँ, गिनो होल्डाल चालीस। गिने।

श्यामू : अब इतनी जल्दी चालीस कैसे गिनूँ।

मामा : गिनो-गिनो। जल्दी करो। हाँ, और अटैची बाईस।

श्यामू : ठहरिए, होल्डाल चालीस। ठीक हैं। अटैची बाईस?

मामा : बक्से उनसठ।

श्यामू : अटैची तो अठारह ही हैं।

मामा : ठीकसे गिनो, नीचे दब गये होंगे।

श्यामू : अच्छा ठीक है, सिर्फ़ दो कम हैं।

मामा : अच्छा लिख लेता हूँ दो कम हैं। बक्से गिनो।

श्यामू : ऐ भोला, अरे हज्ज़ाम, तू उधर बक्से गिन।

भोला : हज्जाम-अज्जाम मत कहियो भैया। मैं तो नाई-ठाकुर हूँ।

श्यामू : अच्छा-अच्छा चल गिन, इधर मेरी तरफ़ बत्तीस बक्से हैं।

मामा : टोकरी पन्द्रह, कनस्तर सत्रह, पोटलियाँ तेरह।

श्यामू : धीरे-धीरे बोलिए। कोई मशीन तो हूँ नहीं।

मामा : आजकलके लड़के बड़े मुँहज़ोर हो गये हैं। ग़लत कहता हूँ जी?

श्यामू : हाँ, बिलकुल ग़लत कहते हैं। आगे तो बोलिए। देर हो जायेगी।

मामा : बड़े बदतमीज़ हो। हाँ पोटलियाँ तेरह।

श्यामू : यह तो बादमें हैं मामाजी।

मामा : बादमें क्या लिखा है, क्या ? कनस्तर सत्रह, पोटलियाँ तेरह····प्रकाशबाबू, प्यारेमोहन, जीजाजी····यह सब क्या गोलमाल है। असबाबकी लिस्टमें प्रकाशबाबू कहाँसे आ गये····

[प्यारेमोहन तथा प्रकाशका प्रवेश]

प्यारे : लीजिए मामा साहब, यह प्रकाशबाबू आ गये। असबाबकी लिस्टपर 'टिक' लगा दीजिए।

मामा : क्या मतलब ? ओ हो प्रकाशबाबू, आपने तो औरतोंके साज-सिंगारको भी मात कर दिया, इतनी देरमें आप तैयार हो पाये, कमाल है भाई। आजकलकी हवा क्या है बस, ग़लत कहता हूँ जी ?

प्रकाश : नमस्ते शौकत मामा····

श्यामू : मुझे दीजिए लिस्ट मामाजी, प्रकाशबाबूका नाम इसमें कहाँसे हो सकता है। आपने दूसरी तरफ़ काग़ज़ उलट लिया होगा।

मामा : ज़बान न चलाओ। असबाबकी ही लिस्ट है।

प्यारे : [चुटकी बजाकर] मज़ा आ गया। देखा प्रकाशबाबू···· देरमें आनेका नुक़सान। आप असबाबकी लिस्टमें दर्ज हैं ताकि कहीं छुट न जायें।

श्यामू : [हँसकर] ओ हो बड़ी ग़लती हो गयी। असबाबकी लिस्ट तो ऊपर ही खतम हो गयी है। नीचे जगह थी। जब आप दोनों नहीं आये तो मुन्शीजीके कहनेपर याददिहानीके लिए आप दोनोंका नाम मैंने लिख दिया था।

प्यारे : यानी कि मेरा नाम भी। मैं कोई होल्डाल हूँ ?

मामा : या कनस्तर। कोई बात नहीं। यह आजकलके लड़के, बस कुछ न पूछो बिलकुल पलीता हैं। ग़लत कहता हूँ, जी ?

प्यारे : जी ! देखा प्रकाशबाबू, श्यामूकी नज़रमें मैं हूँ होल्डाल और आप हैं कनस्तर [हँसी]

प्रकाश : [झेंपते हुए] अजी जो चाहे कहिए। अभी तो बारात चढ़नेकी शुरूआत है। सिर मुड़ाते ही ओले पड़ रहे हैं।

मामा : अच्छे खासे बाल और जुल्फ़े बनाये खड़े हैं और कहते हैं कि सिर मुँड़ा रखा है।

प्रकाश : मामा शौकतराय, आप नहीं समझ सकते। यह नये ज़मानेकी बातें हैं।

मामा : अच्छा-अच्छा, जेबमें रखो अपना नया ज़माना। भोलाराम कहाँ गया, श्यामू, तुम प्रकाशबाबूका सारा सामान ट्रकमें रख दो।

श्यामू : हाँ, रख रहा हूँ।

प्रकाश : अरे-रे, क्या करते हो श्यामू। मैं अपना सामान अपने साथ ही रखूँगा। अरे ठहरो, वह अटैची तो ऊपर ही रहने दो। सुनो तो, अरे भाई, मैं कह रहा हूँ कि तुम तो मालगाड़ीकी तरह सारा सामान ट्रकमें फेंक रहे हो। देखो-देखो, वह नाइट-बैग मैं ऊपर ही रखूँगा और अटैची भी।

श्यामू : ऊपर कोई सामान नहीं रह सकता। सब एक साथ ही रहना ठीक है वर्ना किसीका भी सामान नहीं मिलेगा, समझे प्रकाशबाबू !

प्रकाश : अरे भाई, मुझे रेलमें बैठते ही चैंज करना पड़ेगा। दो-एक कपड़े हैण्डी चाहिए। वह अटैची और ओवर नाइट-बैग मेरे साथ ही रहने दो।

श्यामू : अच्छा बस, यह नाइट-बैग ले लीजिए। वह डे-बैग

सामानके साथ गया। ड्राइवर, चलाओ ट्रक।

प्रकाश : अरे, अटैची तो निकाल लेने दो।

प्यारे : श्यामू, भाई, तुम समझते नहीं, बारातमें जा रहे हैं। सज-धजके जाना चाहिए। क्रीम सेण्टकी ख़ुशबू कहाँसे उड़ेगी अगर वह अटैची प्रकाश बाबूसे अलग हो गयी। आखिर नौशेका तो मुँह ढका ही रहता है। नौशेकी शान-शौकत ख़ूबसूरती तो बारातियोंसे ही जानी जाती है न?

प्रकाश : अजी छोड़िए सजधजको। हम तो बाराती हैं। ख़ूबसूरत तो उसे लगना चाहिए जिसकी शादी हो रही हो। अगर बारातका हर आदमी नौशा लगने लगा तो लड़कीवालेकी मुसीबत ही समझिए।

प्यारे : तभी तो मैंने कहा प्रकाशबाबू, ज़रा सँभलकर चलिएगा। कहीं आपपर वहाँ किसीकी नज़र पड़ गयी और किसीने पसन्द कर लिया तब? तब क्या होगा?

[सब हँस पड़ते हैं]

मुन्शी : [द्वारसे आते हुए] बस जिधर देखो उधर मटरगश्ती ही नज़र आती है। शौकतराय, अब क्यों देर लगायी जा रही है।

मामा : ये प्रकाशबाबू अब आये हैं। इनका सामान रखा जा रहा था। सामानकी ट्रक गयी। बस अब आप कारमें बैठिए।

मुन्शी : कमाल करते हैं आप भी प्रकाशबाबू। अच्छा अब फ़ौरन चलिए।

[गाना ऊँचा हो जाता है]

मामा : लीजिए नौशा आ रहा है। प्रकाशबाबू चलिए, अपने राजूसे तो मिलिए। आइए प्यारेमोहनजी, अपना नेग तो ले लीजिए।

मुन्शी : नेग-दस्तूर ही चलते रहेंगे। वहाँ लड़कियाँ सब नौशेको रोके खड़ी हैं, बर-रुकाईके पाँच सौ माँगती हैं····यानी हर बहनके सौ रुपये। प्यारेमोहनको वहाँ ले जाइए, वह भी शामिल हों। वक़्तका कोई ध्यान नहीं, शौकतराय जल्दी करो।

प्यारे : अजी हमें कुछ नहीं चाहिए। बस बारात चढ़ जाये।

मामा : लड़कियो, बस बहुत देर हो गयी, नौशेको कारमें बैठने दो।

लड़कियाँ : तो दो न मामाजी आप ही पाँच सौ।

मुन्शी : शौकतराय, जाओ सौ देकर मामला निपटाओ, समझे।

[गाना तेज़ होता है]

भोला : मेरी भी नेग मिले मुन्शीजी। घरके नाईको काहे भूल जात हो।

मुन्शी : अरे चल, तुझे तो बादमें भी मिल जायेगा। पण्डितजी चलिए मन्त्र पढ़िए।

भोला : सिलककी क़मीज़, धोती जोड़ा, गरम कोट और पच्चीस रुपैया।

मुन्शी : अच्छा ले यह पाँच रुपये। चलो शौकतराय, बैण्ड बजवाओ। प्रकाशबाबू, आप राजूके साथ बैठ रहे हैं न, श्यामू तुम, बच्चे प्यारेमोहन और शौकतराय उस कारमें चलो····

[बैण्ड बजता है, मुसाफ़िर विरामके बाद स्टेशन इफ़ेक्ट]

प्यारे : अजी उतरिए प्रकाशबाबू, राजूको भी उतारिए, ट्रेन तैयार खड़ी है, अब बारातियोंकी चाल छोड़ दीजिए।

प्रकाश : आप तो जनाब मज़ाक़की हद कर देते हैं, हर वक़्तकी हँसी भी ठीक नहीं होती। उतर रहा हूँ।

प्यारे : अर रररर, रूठ गये, जनाब, मज़ाक़ शादी-विवाहमें ही

नहीं होगा तो कब होगा, इतनी-सी बातपर बिगड़ेंगे तो आगे क्या होगा, खैर, आगे-आगे देखिए होता है क्या ?

प्रकाश : अब तो कमर कस ही ली है, जो होगा देखा जायेगा। चलिए अब।

प्यारे : आप नौशेको लेकर आगे चलिए। हम श्यामू और बच्चे आते हैं।

[शोरग़ुल]

मुंशी : [घबराये आते हैं] अरे पण्डितजो कहाँ गये। पण्डितजी कहीं दिखाई नहीं पड़ते। ट्रेन छूटनेमें सिर्फ़ बीस मिनिट बाक़ी रह गये हैं, अब क्या होगा ! बारात कैसे जायेगी, शौकतराय, तुम कहाँ भागे जा रहे हो ?

मामा : वह खानेके टोकरे बाहर ही रह गये हैं, रास्तेमें कैसे काम चलेगा ?

मुन्शी : ग़ज़ब हो गया, और सोभेका सन्दूक़ कहाँ है।

मामा : सन्दूक़....सन्दूक़ तो आपवाली कारमें था।

मुन्शी : शरम नहीं आती आपको, आपसे कहा था अपने ही पास उस सन्दूक़को रखिए, जाइए दौड़कर देखिए, वह खो गया तो बस।

मामा : तो वह खानेकी टोकरियाँ....

मुन्शी : भाड़में गयी टोकरियाँ....यहाँ हज़ारोंका माल खोया जा रहा है, आप सन्दूक़को देखिए, प्यारेमोहन, अरे श्यामू, तुम सब कहाँ गये ? [भोला दौड़ा आता है]

भोला : क्या है मुन्शीजी ?

मुन्शी : भोला, तू दौड़के जा, खानेके टोकरे बाहर रह गये हैं।

भोला : अच्छा मुन्शीजी।

मुन्शी : अरे देख, जल्दी आना, ट्रेन छूटनेका वक़्त हो रहा है !

भोला : बहुत अच्छा मुन्शीजी ।

मुन्शी : अरे पण्डितजी तो वह उधर आसन लगाये बैठे हैं । ओ पण्डित, ओ पोंगा । [पास आकर]

अरे पण्डितजी ट्रेन छूट रही है, और तुम यहाँ समाधि लगाये हो''''यह क्या हो रहा है ?

पण्डित : यात्रापर प्रस्थानके पूर्व प्राणायाम करना आवस्यक होता है, मुनसीजी, जिशशे शमश्त यात्रा मंगलमय हो । मैं श्वश्ति कामना कर रहा था, चलिए अब बिलम्ब क्या है । लग्न-शारिणीके अनुशार इश शमय वारसूल, दिसासूल, नक्षत्र-सूल, समयसूल, जोगिनी वाश आदि सब सुभ हैं, विवाह अत्यन्त सुभ होगा मुनसीजी ।

मुन्शी : अति शुभ तो होगा ही मगर अभी तो नाकों चने चबाने पड़ रहे हैं । इधर आप ट्रेन टाइमपर समाधि लगानेके लिए ग़ायब, उधर सोभेका सन्दूक़ नहीं मिल रहा है ।

पण्डित : चिनता मत कीजिए मुन्सीजी, मुहूर्त अति उत्तम है । सन्दूक कहीं नहीं जा सकता ।

मुन्शी : अच्छा, आप फ़ौरन उठकर ट्रेनमें बैठिए । लीजिए स्टापर डाउन हो गया ।

[प्रकाश भागा आता है]

प्रकाश : मुन्शीजी, सामानमें ट्रंक नहीं मिल रहा है । और मेरा टिफ़िन कैरियर भी ग़ायब है ।

मुन्शी : तो मैं क्या करूँ । हर चीज़ इसी वक़्त ग़ायब होना है ।

प्रकाश : लेकिन अब क्या होगा । मैं कैसे चल सकता हूँ जब कि मेरा सामान ही खो गया ।

मुन्शी : अजी चलिए बैठिए। [गाड़ीकी सीटी बजती है] वहीं सामानमें इधर-उधर हो गया होगा।

मामा : सन्दूक़ मिल गया। बैठिए आप गाड़ीमें।

प्रकाश : पर मेरा अटैची और टिफ़िन कैरियर यहीं कहीं छूट गया है।

मामा : अब देखा जायेगा, चलिए-चलिए।

[गाड़ीकी दूसरी सीटी बजती है]

प्यारे : [जाते हुए] चलो श्यामू, अब बैठ लो ट्रेन छूटी। तो समझ लिया तुमने मेरा प्लान। आगरे पहुँचकर प्रकाश बाबूकी किरकिरी न करायी तो मेरा नाम प्यारेमोहन नहीं।

श्यामू : हां, बड़ा मज़ा रहेगा। प्रकाशबाबू बड़ी शान बघारते हैं। अपनेको जाने क्या समझते हैं। इनको मज़ा चखाना ही चाहिए····

प्रकाश : प्यारेमोहनजी, मेरा अटैची····अरे यह तो आपके हाथमें है।

प्यारे : घबराइए मत। गाड़ीसे अब मत उतरिए।

[ट्रेन सीटी देकर चल पड़ती है। कुछ क्षणों तक उसकी आवाज़ आती रहती है फिर क्रमशः बैण्ड बाजेमें मिल जाती है। रिकार्ड बज रहे हैं]

प्रकाश : क्या जनवासा दिया है लड़कीवालोंने। वाह! वाह!! वाह!!! एक तो इतनी तंग गली कि एक-एक आदमी क्यूमें निकले। जबसे यह बनी होगी तबसे धूप इसकी क़िस्मतमें ही नहीं लिखी। तिसपर यह मकान। तोबा है। चारों तरफ़ सील इतनी गोया यह कोई तहखाना है। ऊपरसे मच्छर और खटमल, बदनमें चौबीसों घण्टे आग

लगी रहती है। खटमलोंके मारे ज़मीनपर बिस्तर बिछाकर सोते हैं तो कमर और पीठ अकड़ जाती है। अजीब आफ़त है। सारे मकानमें एक नल, नहानेके लिए लाइन लगाओ एक बूँदकी धार बन-बनकर पानी आता है। क्या नल है और वह भी ग्यारह बजे अन्तर्ध्यान। छह तौलिये खो गये पता नहीं क्या ज़मीन खा गयी। इधर निकाला उधर ग़ायब।

राजू : [मिनमिनी आवाज़में] क्या कर रहे हो प्रकाश, मैं इस वक़्त अकेला हूँ। ज़रा इधर ही आ जाओ।

प्रकाश : यह कौन भुनभुना रहा है, समझमें नहीं आता।

राजू : अरे मैं राजू हूँ प्रकाश, ज़रा इधर मेरे पास आओ।

प्रकाश : वाह रे राजू, तुमने तो अपनी बोलीसे लुगाइयोंको भी मात कर दिया।

राजू : अरे चुप रहो, मैं नौशा हूँ। नौशेको ऐसे ही शरमा-शरमाकर बोलना चाहिए, ही-ही-ही।

प्रकाश : अबे तो मेरे सामने तो ऐसे न बोल। यह स्वांग बाहरवालोंके लिए खासतौरसे ससुरालवालोंके लिए ही रिज़र्व रखो।

राजू : ही-ही-ही, ससुरालके लिए। उसीके लिए तो यह सारा ताम-झाम है, प्रकाश, ससुराल—ही-ही-ही।

प्रकाश : ससुरालके नामसे तो बांछें खिलने लगती हैं, क्या कहने हैं....और ताम-झाम तो ससुरालके लिए ऐसा है कि उसने तुमको बजरबट्टू ही बनाकर छोड़ा है।

राजू : सच कहना प्रकाश, मैं इस वक़्त अच्छा लगता हूँ कि नहीं, शीशेमें अपना चेहरा देखता हूँ तो अपनी सूरतपर यक़ीन

नहीं आता। जो आता है मुझे ही देखनेको लालायित आता है। ही-ही।

प्रकाश : अरे क्या बात है, तुम्हारी खूबसूरतीकी ? इस वक़्त तो उसमें इस धजने चार चाँद लगा दिये हैं। दुरंगे-तिरंगे कपड़े, जुल्फ़ोंसे तेल चू रहा है। आँखोंमें ऐसा चौड़ा काजल कि आँखें नहीं सुरमादानो लग रही हैं, कनपटीपर टिमकना, माथेपर हलदी-चावलका पोता, सिरपर चमकी पन्नी लगे मोरछत्र, कलाईमें लाल डोरोंका मोटा गुच्छा जिसमें सुपारी, पानका पत्ता, घास, लोहेके छल्ले-जैसी नायाब चीज़ें बँधी हैं, गुलाबी रंगका पाजामा, गोटे किनारीसे बनी अचकन। क्या बात है तुम्हारी खूबसूरतीकी।

राजू : और देखो प्रकाश, कहीं हमें नज़र न लग जावे। ही-ही-ही। इसलिए यह रेशमी रूमालमें छोटा-सा रोली लगा चाक़ू है।

प्रकाश : सच कहते हो राजू, कहीं तुम्हें नज़र न लग जाये [गाने लगता है—"नज़र लग जायेगी, नज़र लग जायेगी"]

[बरतन और शकोरा गिरने तथा टूटनेकी आवाज़]

प्रकाश : अरे रे, धत् तेरेकी, ओ भोलाके बच्चे, कक्कूके हाथमें क्यों वह शकोरा दिया था, हाय-हाय, सारा तरकारीका शोरबा मेरे बिस्तरोंपर गिरा दिया, नाश कर दिया मेरे कम्बल तकको, हाय-हाय-हाय, अरे, मेरा सुपर फ़ाइन कम्बल।

राजू : ही-ही-ही-ही, प्रकाश, दोस्तकी शादीमें आये हो, कोई मजाक़ थोड़े ही है, अपने दोस्तके लिए कठिनाइयाँ न उठाओगे तो क्या घरकी रानी सहजमें मिल जायेगी, घरकी रानी, प्रकाश, ही-ही-ही····

प्रकाश : अरे शादी तो तुम्हारी हो रही है। यहाँ तो बरबादी-ही-

बरबादी है, बारातके पहले दिनसे। टिफ़िन कैरियर पकवानोंसे भराका भरा खोया, आधे दर्जन चादर और तौलिये खो गये....चलो वह किस गिनतीमें है। अब कम्बल और बिस्तर बच्चेने नाश कर दिये, आय हाय, हाय, मेरा सुपर फ़ाइन कम्बल।

राजू : छोड़ो भी यार कम्बलका ग़म, यह अफ़सोसका मौक़ा थोड़े ही है, हमारी शादी हो रही है....ही-ही-ही....शादी! और तुम मनहूसियत फैला रहे हो, कोई बात हुई, ही-ही....

प्रकाश : अरे, भाई, चाँदी तो तुम्हारी है, ज़ेवर मिलेगा, सामान मिलेगा, शान-शौकतसे बिरादरीमें धाक जमेगी और ब्याजमें नयी नवेली दुलहिन मिलेगी।

राजू : ब्याजमें कैसे वाहजी, वह तो मूल धन ही है कैपीटल इनवेस्टमेण्ट....ही-ही-ही...

[दरवाज़ा खटकता है]

प्यारे : अजी, मैंने कहा राजू साहब, यह लीजिए अपनी सारी खुदाई एक तरफ़से यानी अपने साले चम्पालाल उर्फ़ मुन्ना बाबू उर्फ़ पटाख साले यानी हमारे साले आप और आपके साले ये, समझे राजू साहेब। मिलिए।

राजू : ही-हो-ही-हो....क्या नाम बताया चम्पाला...ही-ही-ही।

प्यारे : हाँ-हाँ चम्पा ही कहो, यही अच्छा लगता है, साला चम्पा और बीवी भी चम्पा... मेरा मतलब चम्पाकलीकी तरह, ये मुन्ना और वे मुन्नी [हँसता है]

प्रकाश : आप भी हद करते हैं प्यारेमोहनजी, कहीं ऐसा मज़ाक़ किया जाता है। कुछ ऐटीकेटका भी तो ध्यान रखा कीजिए।

प्यारे : एटीकेट, पेटीकेट या कोट अपने पास ही रहने दीजिए प्रकाशबाबू, शादीका वक़्त है, साले-सालियोंसे मज़ाक़ होना ही चाहिए, और तिसपर इस वक़्त लालपरीके उड़न-खटोलेपर हम सवार हैं····हा-हा-हा····

राजू : हो-ही-ही···अजो चम्पालालजो···

प्यारे : नहीं जो चम्पा, कुछ बोलिए तो···

चम्पालाल : मैं तो समझता था कि आपके इलाहाबादमें अमरूद-ही-अमरूद नहीं होते आदमी भी होते हैं पर आप लोगोंको देखकर तो यही खयाल होता है कि अमरूदकी फ़सल ही ज्यादा होती है, और वह भी कच्चे और कसैले···

प्यारे : बोले····बोले····बोले····अरे वाह रे मेरे मिट्टीके शेर, चम्पो ।

[खटपट होती है]

[बैण्डोंकी ध्वनि]

मामा : [नशेमें झूमते हुए] यह क्या हुल्लड़ मचा रखा है, ग़लत कहता हूँ ? जी जिधर देखिए उधर चिल्ल पों····बन्द कीजिए ये बकवास, द्वार-चारको तैयारी कीजिए, बारात चढ़ रही है ।

प्यारे : चढ़ रही है, किसपर चढ़ रही है, पहाड़पर या क़िलेपर मामू जान····

मामा : क़िलेपर [हँसता है] हाँ भाई, ठीक है क़िलेपर, लड़की-वालोंका घर क़िला ही समझो, उसीपर हमारे राजूको फ़तह पाना है, [हँसता] माई डियर राजू, बेटा झेंपो मत, झेंपनेकी क्या बात है, यह चढ़ाई तो सबको करनी पड़ती है ।

राजू : ही-ही-ही····मामाजी····

प्यारे : मामू साहब ? इनसे मिलिए, राजूके साले चम्पालाल । अरे मैं भूल गया चम्पाजी, चम्पा, चम्पी, मुन्ना, मुन्नी····
[हँसता है]

चम्पालाल : अच्छा अब इजाज़त दीजिए, द्वार-चारका मुहूर्त न निकल जाये । तैयारी कीजिए ।

प्यारे : अर्र्र् चले चम्पाजी, अच्छा भाई तुम्हारे दरवाज़ेपर ही अब चोंचें लड़ेंगी । टू टू बीक्स होंगी ।
[मुन्शीजीका प्रवेश]

मुन्शी : शौकतराय, बस फिर वही ढोल-ढाल । राजूको तैयार करो । द्वार-चारका वक़्त हो गया । उठो झटपट, प्रकाश ····आपको सिंगारमें ज्यादा वक़्त लगता है जल्दी कीजिए । फ़ौरन तैयार हो जाइए ।

प्रकाश : लेकिन मेरा सूट ही नहीं मिल रहा मुन्शीजी । समझमें नहीं आता कहाँ गया ।

प्यारे : सूट नहीं मिल रहा । अफ़सोस, हे भगवान्, अब क्या होगा, प्रकाशबाबूका सूट नहीं मिल रहा । अब द्वार-चारका टाइम इनको कैसे सूट होगा ।

प्रकाश : [झल्लाकर] आपको मज़ाक़ सूझ रहा है । अब मैं क्या पहनकर चलूँगा । बताइए ।

प्यारे : हाँ-हाँ, बताइए । मैं बिलकुल सीरियस हूँ ।

मामा : आप और सीरियस [हँसता है]

मुन्शी : जल्दी करो । क्या ढील-ढाल मचा रखी है । दरवाज़ेका मुहूर्त टल जायेगा । दस मिनिटमें सबको तैयार हो जाना चाहिए पण्डत ऐ पण्डत ।

पण्डित : आयुस्मान् मुन्सीजी, क्या आज्ञा है ।

मुन्शी : कै बजेका मुहूर्त है पण्डत ?

पण्डित : आहा हा, अत्यन्त मंगलकारी मुहूर्त है। महासुभ''''द्वार-चार घटिकायन्त्रशे रात्रि ग्यारह बजकर शत्ताइश मिनिट शाढ़ेदश शेकिण्डपर होनेका आदेस है। तद्नुसार निसामुखसे तेरह घड़ी आठ पलपर।

मुन्शी : कुछ पल्ले नहीं पड़ता। बहरहाल हमारे हिसाबसे साढ़े ग्यारह बजे रातका मुहूर्त है। बस पन्द्रह मिनिट बाक़ी हैं। शौकतराय, बस चलनेका इन्तज़ाम करो। प्यारेमोहन, तुम राजूको तैयार करो। प्रकाशबाबू, आपका सूट मिला कि नहीं [धीरे] इनके यही नखरे हैं। सूट नहीं मिलता तो दूसरा निकाल लें, क्या एक ही लाये थे''''

प्यारे : क्या पता, मेरे सामने जब सामान जमा रहे थे तो दर्जनों-की बातें करते थे।

प्रकाश : मैं सब सुन रहा हूँ, आप मेरी परेशानीका अन्दाज़ा नहीं लगा सकते। सुबह-शाम मेरी एक-एक करके तमाम चीज़ें खोती जा रही हैं। अब क्या खाक द्वार-चारके लिए चलूँ ?

मुन्शी : हो क्या गया प्रकाश बाबू ?''''

प्रकाश : अजी मुन्शीजी, बस कुछ मत पूछिए, मुझे यह नहीं मालूम था कि बारातमें चलना इतना मँहगा पड़ेगा। अब देखिए मैंने द्वार-चारपर पहननेको अपना सबसे अच्छा सूट निकाला था, निकालकर उधर वाश करने गया, वापस आकर देखता हूँ तो क़मीज़ और एक मोज़ा पड़ा है। सूट टाई, रूमाल ग़ायब हैं। जाने कौन ले गया। सबसे ताज्जुबकी बात तो यह है कि मोज़े जोड़ीमें-से एक मोज़ा रह गया है। एक ग़ायब है।

मुन्शी : तो दूसरा सूट झटपट निकाल लीजिए, क्या मुज़ायका है। बारातमें तो चलना ही पड़ेगा।

प्रकाश : माफ़ कीजिए। मैं इस तरह नहीं जा सकूँगा।

मुन्शी : यह क्या कहते हैं आप, अच्छा इधर-उधर देख लीजिए। यहीं कहीं होगा कौन ले जा सकता है। शौकत सब तैयारी हो गयी। और हाँ, श्यामू कहाँ है?

मामा : अभी थोड़ी देर पहले तो यहीं था।

प्यारे : अजी नहीं वह तो बड़ी देरसे घूमने गये हैं।

मुन्शी : इन लड़कोंकी अक़्लपर तो पत्थर पड़ गये हैं, घूमकर अब-तक नहीं लौटे। कुछ खयाल नहीं है।

प्यारे : शामको ताज देखने गये थे। कहते थे क़िला भी देखेंगे।

मामा : तो कहीं क़िलेमें ही तो बन्द नहीं रह गया।

प्यारे : नहीं-नहीं यह नहीं हो सकता।

मुन्शी : पर तुम तो कहते थे शौकतराय कि वह अभी यहीं था।

मामा : हाँ-हाँ यहीं था····यही तो मैं कह रहा हूँ।

प्यारे : कहाँ था अभी मामूजान। आप तो भूल जाते हैं।

मुन्शी : धत्तेरेकी, तुम दोनोंपर ख़ूब चढ़ी है। कहिए प्रकाश बाबू, मिला आपका सूट?

प्रकाश : सब जगह देख लिया, कहीं नहीं है। मैं नहीं जाऊँगा। आप लोग जाइए।

राजू : यह कैसे हो सकता है प्रकाश····मैं भी नहीं जाऊँगा।

मुन्शी : पागल मत बनो राजू····चुप रहो। नौशेको चुप रहना चाहिए।

राजू : जी अच्छा, ही-ही-ही।

मुन्शी : क्या ही-हो-ही करता है।

राजू : जी कुछ नहीं, हो-ही-ही।

पण्डित : ये न बद्धो बलीराज दानवेन्द्र महाबले····तुरन्त प्रस्थान

कीजिए मुन्शीजी, सुभ मुहूर्त टला जाता है ।

[बैण्ड तेज़ हो जाता है]

मामा : चलो बेटा राजू....

राजू : प्रकाश, तुम नहीं चलोगे ।

प्रकाश : नहीं, तुम लोग जाओ ।

[पदचापें]

प्यारे : [झूमते हुए] कोई बात नहीं प्रकाश बाबू, एक आदमी जनवासेकी हिफ़ाज़तके लिए भी तो चाहिए, अच्छा टा.... टा । ख़ूब गुज़रेगी जब मिल बैठेंगे दीवाने दो [हिचकी] दो नहीं एक....

[सन्नाटा]

प्रकाश : अच्छे बारातमें आये । रमा ठीक कहती थी । ख़ूब करारी चपतें पड़ीं । अब बेटा प्रकाश, बारातका नाम न लेना समझे, मगर [साँस लेकर] सूट बड़ा बुरा गया ।

[दरवाज़ा भड़से खुलता है]

प्रकाश : कौन ? अरे श्यामू ! बारात चली गयी और तुम, अच्छा ! कुछ होश है कि आप क्या पहने हैं ।

श्यामू : ओ प्रकाश बाबू वाह-वाह-वाह, मैं तो डर गया कि कोई चोर है अच्छे मिले । आप बारातके साथ नहीं गये ।

प्रकाश : हुँ, बारातके साथ नहीं गये । तो मेरा सूट आप पहनकर चम्पत हो गये थे । यह बात है । हूँ....

श्यामू : क्या कहा, आपका सूट । जी यह तो मेरा, एँ, यह क्या ? पर यह तो मैंने निकालकर अपने ट्रंकके ऊपर रखा था ।

प्रकाश : जी नहीं मैंने निकालकर ट्रंकके ऊपर....ओफ़ ओ अब मालूम पड़ा....आपका ट्रंक बराबर ही रखा है । शायद जल्दीमें आपके ट्रंकपर ही रख दिया था । फिर मैं वाश

करने चला गया लौटकर देखता हूँ कि सूट ग़ायब है।

श्यामू : तो देखिए यह मेरी ग़लती तो नहीं। आपने मेरे ट्रंकपर अपना सूट क्यों रखा। मैं समझा कि मैंने अपना ही निकालकर रखा है [चुटकी] कामेडी आफ़ मैनर्स या एरर्स। लेकिन देखिए प्रकाश बाबू, यह सूट मेरे बदनपर एकदम फ़िट है। जैसे मेरे नापका ही बनाया गया था। बस अब यह मुझे प्रेजेण्ट कर दीजिए।

प्रकाश : जाइए जाइए, ले, जाइए। सब ले जाइए, पूरा सूटकेस अपने बक्सेमें उलट लीजिए। मैं आज रात ही इलाहाबाद वापस चला जाऊँगा।

श्यामू : क्या ग़ज़ब करते हैं आप ? लीजिए मैं सूट उतारे देता हूँ। आप पहन लीजिए।

प्रकाश : जी नहीं, मैं पहना कपड़ा कैसे पहन सकता हूँ। पहले ड्राई क्लीन करवाना पड़ेगा। [प्यारेमोहन वापस आते हैं]

प्यारे : लीजिए हम भी वापस आ गये प्रकाश बाबू। आपकी कोशिश बड़ी ज़बरदस्त है। देखिए झटपट उठिए आपको लड़कीवालेके घर रस्म निभाने चलना है।

प्रकाश : मुझे कुछ मतलब नहीं रस्म-वस्मसे। समझे, आप जाइए।

प्यारे : अजी यही तो मौक़ा बारातियोंको मिलता है कि वह भीतर औरतोंमें जाकर अपनी आँखें ठण्डी करें। बस आपको और हमें एक पूजन करनी पड़ेगी। पीठपर नाजुक हाथोंसे हल्दीके छापे लगवाने पड़ेंगे और एवज़में एक-एक सूटका कपड़ा मिलेगा।

श्यामू : चलिए प्रकाश बाबू, यह मौक़ा हाथसे मत जाने दीजिए। हमारा भी मारकेट बढ़ेगा। बस रस्मके लिए बढ़िया कपड़ोंकी जरूरत नहीं।

प्यारे : चलिए उठिए। उठाओ श्यामू इन्हें ज़बरदस्ती, उठिए।

प्रकाश : अच्छा-अच्छा छोड़ दीजिए। मैं चलता हूँ, मन तो नहीं है पर क्या करूँ।

[विलयन]

[गानेकी आवाज़ें, औरतोंके हँसनेकी आवाज़ें]

सरोज : ओहो, शान्ती, उस बजरबट्टूको तो देख, कैसी कौवेको नज़रसे हम सबको देख रहा है।

शान्ती : इस कौवेकी दुम न रंगी तो मेरा नाम शान्ती नहीं। अरी किरन इधर तो आ तीन लाजू-काजू आये हैं।

किरन : किधर हैं, अच्छा, हाँ चाल तो देखो उस लम्बूकी, जैसे लंगूर उछल रहा हो।

[हँसती है]

सरोज : लंगूर, हाँ ठीक है। यह नौशेका बहनोई है प्यारेमोहन।

शान्ती : और वह छोटा लंगूर ?

किरन : छोटा लंगूर नहीं, भूरे मुँहका बन्दर।

सरोज : वह नौशेका भाई है, श्यामसुन्दर, श्यामू कहा जाता है, चम्पा भैया बता रहे थे।

किरन : और वह तीसरा कौन है, भोगी बिल्लीकी तरह।

शान्ती : भीगी बिल्ली या बिल्ला।

सरोज : हाँ बिल्ला कहो री बिल्ला। अहा-हा, क्या लड़कियोंकी तरह शर्मा रहे हैं बिल्लेजी।

किरन : इनमें यह बिल्ला सबसे तमीज़दार लग रहा है। बाक़ी दोनों ऐसे उछल-कूद रहे हैं, नज़रें दौड़ा रहे हैं मानो कबूतर दाना देख रहा हो।

[हँसती है]

सरोज : यह नौशेका दोस्त है प्रकाश। इसकी दुरगत ज़रूर

बनाना, समझीं।

[क्रास फ़ेड]

प्यारे : देखो प्रकाश बाबू, सँभल-सँभलकर पग धरना। काँटोंकी फुलवारी है। कोई काँटा चुभ न जाये।

श्यामू : वह बीचवाली लड़की प्रकाश बाबूको बड़ी ललचाई आँखों-से देख रही है।

प्यारे : आज चाँदी है तुम्हारी, प्रकाश बाबूके भाग्य खुल गये, कहो पसन्द है ?

प्रकाश : अजी चुप रहिए। लेडीज़के सामने तमीज़से पेश आना चाहिए।

[क्रास फ़ेड]

शान्ती : क्या कानाफूसी कर रहे हैं तीनों बन्दर। सरोज, इनकी रोलकाल पुकारो।

किरन : [ताली बजाकर] हाँ यह अच्छा रहेगा। बड़ा मज़ा आयेगा।

[सब एक साथ हँसती हैं]

[ताली बजाकर]

किरन : शान्ती, सरोज, आइए....आइए....तैयार हो जाइए सब।

सरोज : हाज़रीन, अब ब्यूटी एण्ड दी बीस्टका कम्पटीशन होगा।

[सब हँसते हैं]

शान्ती : पहले इनकी रोलकाल लो।

किरन : हाँ-हाँ, जल्दी करो।

सरोज : सभा शान्त हो। लंगूर लोगोंकी पहले हाजिरी होगी।

प्यारे : बुरे फँसे हो प्रकाश।

प्रकाश : अरे, चुप रहो। अब कर्मोंका फल भोगो।

श्यामू : मज़ा आ गया आज। बारातमें आनेकी पूरी क़ीमत वसूल हो गयी।

सरोज : लंगूर नम्बर एक।
श्री प्यारेमोहन हाज़िर हैं ?

प्यारे : हाज़िर हुज़ूर !

शान्ती : ल'गूर नम्बर दो।
श्री श्यामसुन्दर हाज़िर हैं ?

श्यामू : हाज़िर, सरकार।

किरन : नम्बर तीन।
श्री प्रकाशनारायण हाज़िर हैं ?

शान्ती : लंगूर कह लंगूर। लंगूर नम्बर तीन।

किरन : मैं नहीं कहती।

सरोज : अच्छा देखते ही मुहब्बत हो गयी। तू नहीं कहती तो मैं कहती हूँ।

प्यारे : देखा प्रकाश, वह फ़िदा है आपपर।

प्रकाश : श्, श्, श्...

सरोज : लंगूर नम्बर तीन श्री प्रकाशनारायण हाजिर हैं ?

प्रकाश : जी मौजूद हूँ।

शान्ती : आय हाय, बड़े नखरेमें बोले।

सरोज : लगाओ दो हाथ, हल्दीके पहले इन्हींके।

शान्ती : लो यह लो।

प्यारे : अरे-रे भागो श्यामू।

सरोज : भागके कहाँ जाओगे....ए यह लो।

श्यामू : हाय राम, मार डाला।

किरन : और यह लो।

प्यारे : आह ! प्रकाशजी, देखो दो बार भाग खुल गये [हँसी]

सरोज : अजी, जाते कहाँ हो, मार खानेकी क़ीमत तो लेते जाओ। जूतियोंका पूजन करके अपने-अपने सूट ले लो ।

प्रकाश : मुझसे नहीं होगा प्यारेमोहनजी, मैं जाता हूँ ।

प्यारे : अरे सुनो सुनो........

श्यामू : क्या करते हो प्रकाश बाबू ।

प्रकाश : नहीं मैं यहाँ एक मिनिट नहीं ठहर सकता....

[हँसी प्रकाश विलयन] [शहनाईका स्वर]

श्यामू : जीजाजी, काम ऐसे नहीं बनेगा । शौकत मामाको भी अपनी तरफ़ मिलाइए तब बात बने।

प्यारे : वही लड़की है जो प्रकाशकी तरफ़ बड़े ग़ौरसे देख रही थी । शादी लायक़ है । उसके भाईको मैंने राज़ी कर लिया है । आज दावत भी उसके घर रखी है । लड़कीके हाथका ही खाना मिलेगा । परोसनेमें दिखा भी दी जायेगी। पर प्रकाश बाबूको चाहे कुछ हो ज़रूर ले चलना है ।

श्यामू : तो शौकत मामाको ज़रूर मिलाइए । वर्ना बात सीरियस नहीं हो पायेगी । लीजिए मामा इधर ही आ रहे हैं।

[शौकतराय आते हैं]

मामा : क्या मिसकौट हो रही है साले-बहनोईकी ? प्यारेमोहन— क्या बात है ?

प्यारे : बात तो खास है शौकत मामा । श्यामू , तुम ज़रा बाहर चले जाओ ।

मामा : हाँ, अब बताओ ।

प्यारे : बात यह है कि कल लाजू-काजूके वक़्त एक लड़की बड़ी सुशील और अच्छी देखी है । सोचता हूँ हमारे घर यानी

मुन्शीजीके घर वह बहू बनकर आये ।

मामा : तो बात चलाओ ।

प्यारे : बात तो चलायी है । उसका बड़ा भाई ही सब कुछ करेगा । वही घरमें है ।

मामा : जन्मपत्री वग़ैरह ले लो ।

प्यारे : हाँ, वह तो सब हो ही जायेगा । आज ही रात उसने मुझे और श्यामूको अपने घरपर खानेको बुलाया है ।

मामा : तो मैं भी चलूँ ।

प्यारे : नहीं मामाजी, आप मत चलिए, क्योंकि ख़ुद लड़की आकर खाना परोसेगी । आप बुज़ुर्ग हैं शायद आपके सामने न आये, पर प्रकाश बाबूको किसी तरह हमारे साथ भेज दीजिए ।

मामा : तो प्रकाशसे तुम ख़ुद क्यों नहीं कहते ।

प्यारे : अभी वह हमसे नाराज़ हैं । आपकी बात मान लेंगे ।

मामा : तो इसमें क्या है । मैं कहे देता हूँ । आख़िर घरका ही तो काम है । प्रकाश बाबूको करना ही चाहिए । अजी प्रकाश बाबू, ज़रा यहाँ आइए ।

प्रकाश : जी शौकत मामा ! अभी आया ।

मामा : भाई, एक ज़रूरी काम है । तुम्हारी मददकी दरकार है ।

प्रकाश : फ़रमाइए····

मामा : प्यारेमोहनने एक लड़की कल रात देखी है ।

प्यारे : अजी उसे तो प्रकाश बाबूने भी कल देखा है. वही किरन····

प्रकाश : जी हाँ तो, बताइए क्या बात है ?

मामा : प्यारेमोहनको वह काफ़ी अच्छी लगी, और अब राजूकी

शादी हो गयी है तो फिर दूसरा नम्बर श्यामूका तो आना ही चाहिए ।

प्रकाश : अच्छा, अच्छा समझ गया, तो मुझे क्या करना है ।

प्यारे : कुछ नहीं, बाक़ीका सब काम तो हमने कर ही लिया है, और कर लेंगे । आज किरनके भाईने दावत की है हमारी, मैं जाऊँगा, श्यामू भी, आप भी अगर चलते तो अच्छा रहता ।

प्रकाश : अजी, तौबा कीजिए, मैं कहीं दावत-वावतमें नहीं जा सकता । आलरेडी पेट इतना बिगड़ गया है पूरियाँ खाते-खाते और वह भी दो-दो बजे रातको ।

शौकत : यह नहीं हो सकता प्रकाश बाबू । यह काम तो आपको करना ही पड़ेगा, घरका मामला है, चले जाइए ।

प्रकाश : [अनमने] अच्छा आप कहते हैं तो चला जाऊँगा, पर देखिए प्यारेमोहन साहब, मैं खाऊँगा कुछ नहीं ।

प्यारे : बस, चले चलिए, चाहे कुछ न खाइएगा । लड़की सिर्फ़ पसन्द कर दीजिए ।

[दृश्य-परिवर्तन]

गुलज़ारी : मैं बड़ा कृतज्ञ हूँ आपका प्यारेमोहनजी, लड़का बड़ा ही अच्छा आपने बताया । बस, यह शादी हो जाये तो ज़िन्दगी-भर आपका एहसान नहीं भूलूँगा ।

प्यारे : अजी यह तो घरका ही काम है गुलज़ारी बाबू, हाँ एक बात बताइए, बुरा न मानिएगा । आपकी बहनको पसन्द है न ?

गुलज़ारी : अब यह बातें तो पूछी नहीं जातीं, पर शान्ती और सरोजके कहनेसे मालूम हुआ कि इनकार नहीं करेगी, और फ़िर इनकार कर भी कैसे सकती है ?

प्यारे : तो आप पक्की कर लीजिए, मेरे खयालसे लड़केको टीकेके दस रुपये दे दीजिए····श्यामूको भी नज़राना देना मत भूलिएगा।

गुलज़ारी : लेकिन रुपयेसे तो पक्की बात नहीं होगी।

प्यारे : तो न हो लगे हाथों एक खत इनके घरपर लिख दो।

गुलज़ारी : हाँ, यह ठीक रहेगा, पता बताइए।

प्यारे : लिखिए।

गुलज़ारी : जी।

प्यारे : श्री पम्पी नारायन।

गुलज़ारी : जी।

प्यारे : ३१, सिविल लाइन्स,
इलाहाबाद।

गुलज़ारी : बहुत-बहुत धन्यवाद, अच्छा ये रुपये लीजिए। मेरी तरफ़से दे दीजिएगा। खत मैं अभी डाले देता हूँ सगाईके लिए।

प्यारे : बिलकुल ठीक है, अच्छा नमस्कार, अब बारातकी वापसीका इन्तज़ाम मुझे करना है, चलूँ?····

[विलयन]

[बैण्ड बाजा शोर शहनाई बजकर धीरे-धीरे विलीन होते हैं]

[दरवाज़ा खटकता है]

प्रकाश : रामसिंह ओ रामसिंह, दरवाज़ा खोलो, बारातसे वापस आ गया।

[कोई नहीं बोलता]

प्रकाश : रमा! अरे भाई, रामसिंहको भेजो, सामान उतारे, मैं बेहद थक गया हूँ।

[दरवाज़ा खुलता है]

रामसिंह : सलाम हुज़ुर, आ गये हुज़ूर ?

प्रकाश : हाँ, सामान उतारकर लाओ, और लो ये एक रुपया ताँगेवालेको दे देना।

[पदचाप]

प्रकाश : रमा, किधर हो रमा, अरे बोलती क्यों नहीं हो। छह दिन अलग रहनेपर ही इतनी रूठ गयीं। [पास आकर] रमा, क्या बात है। मैं इतनी परेशानियाँ झेलकर आया हूँ कि बस मन और शरीर दोनोंके टुकड़े-टुकड़े हो गये हैं और तुम बोलती नहीं।

[मौन]

प्रकाश : अरे रमा....यह क्या हो गया, तुम रोने लगीं। बात क्या है ? तबीयत ख़राब है।

रमा : मुझसे मत बोलो। ख़ूब गुलछर्रे उड़ाओ। बारातें करो। दूसरी शादियाँ रचाओ। मुझे एक पुड़िया ज़हरकी वहाँसे क्यों न भेज दी ?

प्रकाश : [आश्चर्यसे] क्या, क्या कह रही हो रमा, शादियाँ रचाओ, बारातें करो। भाई, बारातमें तो तुमसे इजाज़त लेकर ही गया था ?

रमा : बड़ी अच्छी इजाज़त लेकर गये थे, क्या मैंने यह भी इजाज़त दी थी कि वहाँ तुम रोमान्स लड़ाना, दावतें खाना, लड़की देखना, दूसरी शादीके लिए सगाईके रुपये लेना, लड़कीके हाथका खाना खाना और फिर यहाँ आकर मुँहदेखी करना....

प्रकाश : क्या कह रही हो रमा। होशमें तो हो। कैसी लड़की और कैसी शादी।

रमा	:	हाँ-हाँ, बड़े भोले बन रहे हो।
प्रकाश	:	देखो रमा, तुम बहुत बड़ा लांछन मुझपर लगा रही हो। तुम्हारे पास इस सबका क्या सबूत है।
रमा	:	सबूत, सबूत मेरे पास पक्का है। मैं तो तुम्हारी रंगीली आदतसे ख़ूब परिचित हूँ। जहाँ कोई सुन्दर लड़की देखी तुम्हारा तो फिरसे शादी करनेको मन करता है। अच्छा बोलो तुमने किरन नामकी लड़की नहीं देखी ?
प्रकाश	:	हाँ देखी थी, फिर।
रमा	:	उसके हाथका खाना नहीं खाया....
प्रकाश	:	हाँ खाया था।
रमा	:	उसके भाईसे सगाईके रुपये नहीं लिये....
प्रकाश	:	सगाईके रुपये ? क्या मतलब ? रुपये दस दिये तो थे प्यारेमोहनजी़ने ?
रमा	:	क्या लड़की पसन्द करके तुम अपनी शादी पक्की नहीं कर आये, बोलो, क्या तुमने यह कहा था कि मेरी शादो हो चुकी है ? नहीं, मैं तो जानतो हूँ तुम्हारी आदत।
प्रकाश	:	पर यह सब तुम्हें कैसे मालूम ?
रमा	:	लो यह खत पढ़ो। सगाईका खत आया है लड़कीके भाईका।
प्रकाश	:	क्या देखूँ....
रमा	:	लो-लो पढ़ो ख़ूब पढ़ो। ख़ूब शादी रचाओ।
प्रकाश	:	हूँ तो यह हरकत थी प्यारेमोहनजीकी....ओफ़् ओ बला-का नीच आदमी है। रमा, सच कहता हूँ इस किरनकी शादी श्यामूसे तय करनेके लिए प्यारेमोहन लड़कीके भाईके घर दावतमें मुझे ले गये थे। लड़की भी देखी, खाना भी खाया, रुपये भो लिये, पर सब श्यामूके लिए।

रमा मेरी तरफ़ देखो, क्या तुम्हें विश्वास है कि मैं ऐसी नीचता कर सकता हूँ। रमा, लाओ मुझे दो वह खत। लो····लो···यह लो····यह है मेरी शादीका पैग़ाम····

रमा : सच, क्या यह सच है?

प्रकाश : रमा, आज तो मेरी ज़िन्दगीमें सब कुछ झूठ हो गया। लानत है ऐसे सड़े-गले रीति-रिवाज़ोंपर जो आदमीको आदमी नहीं रहने देते, जो शादीको एक दकियानूसी स्वांग बना देते हैं, बारातको फैन्सी ड्रेसका शो, दूल्हाको बजर-बट्टू और बारातियोंको घनचक्कर। आजसे मैं कभी बारातमें नहीं जाऊँगा।

रमा : [मुसकराकर] अब तो तुम्हें मैं भी कभी नहीं जाने दूँगी। [दोनों हँसते हैं। पटाक्षेप]

■

लाउड स्पीकर

(व्यंग्य)

[शहरकी एक मुख्य सड़कपर एक मध्यवर्गीय गृहस्थका दुमंज़िला घर। मुहल्लेमें कई मकानोंसे ऊँचे-ऊँचे बाजे, रेडियो, ग्रामोफ़ोन, शादी-विवाहके चीख़ते लाउडस्पीकर, स्पीचें, मोटरोंकी आवाज़ें, रेलकी सीटी, कीर्तन, संगीत सीखनेकी आवाज़ें बराबर अलग दूरियोंपर आ जाती हैं]

स्वरूप० : [घरमें नीचेसे चिल्लाकर] अरे, कहाँ मर गया? अभी-तक तुझसे बिस्तरे ही नहीं हुए?

नौकर : [ऊपरसे चिल्लाकर] कर तो रहा हूँ, बीबीजी!

स्वरूप० : [चिल्लाकर] अपना सिर कर रहा है! यहाँ तबतक सब्ज़ो जल जायेगी! [अपने ही से] सुधाको कपड़े पहनाऊँ या सब्ज़ी देखूँ? अच्छे बहरे नौकरसे पाला पड़ा है। इनसे कोई दूसरा नौकर ही नहीं ढूँढ़ा जाता। [चिल्लाकर] मैं कहती हूँ तोन बिस्तरे क्या रात-भरमें लगायेगा?

नौकर : [चिल्लाकर] हाँ बोबीजो!

[सुधाके रोनेकी आवाज़]

स्वरूप० : हाँ बीबीजो, तेरा सिर! [सुधासे] सुधा, क्या हो गया है तुझे? स्वेटर पहन ले डायन, सर्दी लग जायेगी!

सुधा : [रोते हुए] नहीं पहनती, चुभता है!

स्वरूप० : नहीं पहनती, क्यों?

सुधा : चु—भ—ता—है!

स्वरूप० : नहीं चुभता! पहन! नहीं पहनेगी तो ले—[चाँटेकी आवाज़—मोटे गलेसे रोनेकी आवाज़]—और गला

फाड़ ! मुझे पड़ोसिनकी शादीमें जाना है और तू स्वेटर नहीं पहनेगी ? [फिर नौकरसे] हद हो गयी ! अरे बुद्धूके बच्चे, नीचे उतर आ । सब्ज़ी जल रही है ।

नौकर : हाँ बीबीजी, अभी दो बिस्तरे और लगाने हैं ।

[लाउडस्पीकर, लेक्चर, ग्रामोफ़ोन, रेडियोकी आवाज़ोंके साथ बच्चीके रोनेकी आवाज़ चलती रहती है ।]

स्वरूप० : तो अबतक तू एक बिस्तर ही लगा पाया है ? लीचड़ कहींका ! ठहर, तुझे मैं आकर देखती हूँ [सुधासे] मैं कह रही हूँ, स्वेटर पहन ले सुधा !

[सुधा फिर ज़ोरसे रोने लगती है]

नहीं मानती तो ले, तुझे यहीं छोड़ जाती हूँ । ख़ूब रो गला फाड़के। ऊपर इस बुद्धूके बच्चेको देखूँ! [धम-धमकी आवाज़, और गिलास ज़ोरसे गिरनेकी आवाज़]

नौकर : हाँ बीबीजी, मुझे बुलाया ?

स्वरूप० : [पास आती हुई] हाँ बीबीजी ! गिलास जोरसे गिरे तो भी हाँ बीबीजी ! [पास आकर ज़ोरसे] हर बात-पर जवाब फ़ौरन हाज़िर है 'हाँ, बीबीजी !' काम-धाम कुछ नहीं ! [ठहरकर] यह तेरे दो बिस्तरे रहे हैं और पहलेकी अभी चादर ही नहीं बिछायी ! क्यों, बुद्धू ! ठहर अभी कहती हूँ उनसे ! [दरवाज़ा ज़ोरसे बन्द होनेकी आवाज़] यह अन्दरवाले कमरेका दरवाज़ा किसने बन्द किया है ? [चिल्लाकर] कौन है वहाँ कमरेमें, सुनना !

नौकर : हाँ, बीबीजी ।

स्वरूप० : अरे कमरेमें कौन है, सुनता है ?

नौकर : बाबूजी हैं !

स्वरूप० : अच्छा ठहर, अभी बताती हूँ तुझे ! [दरवाज़ा पीटकर] मैंने कहा, दरवाजा क्यों बन्द कर रखा है ? [ठहरकर] सुन रहे हो ? [ठहरकर किवाड़ पीटते हुए] मैं कहती हूँ क्या कानोंमें रूई ठूँस रखी है ? [खिड़की बन्द होनेकी आवाज़] यह क्या खटपट कर रहे हो ? ज़रा देखो अपने प्यारे नौकरकी करतूत ! [पीछे लड़की रोती आती है] सुधा, तू चुप नहीं रहेगी ? चल यहाँसे । [दरवाज़ा पीटकर] खोलते हो कि नहीं दरवाजा ?

[पृष्ठभूमिमें लाउडस्पीकर, रेडियो, ग्रामोफ़ोन, रेलकी आवाज़, गाना, कीर्तन और सबके ऊपर लड़कीका रोना सुनाई देता है]

बात क्या है, किवाड़ हो नहीं खोलते ! अरे तुझसे उन्होंने कुछ कहा था, बुद्धू ?

नौकर : हाँ, बोबीजो !

स्वरूप० : क्या कहा था ?

नौकर : जी, बोबीजो ।

स्वरूप० : जो बोबोजीके बच्चे ! [चिल्लाकर] तुझसे कुछ कहा था उन्होंने ?

नौकर : जी, हाँ-हाँ । कहा था कि सब तैयारी हो गयी है । बारात आनेवाली है । आप जल्दी आ जायें ।

स्वरूप० : अरे उल्लू, किसकी बात कह रहा है ?

नौकर : बराबरवाले बाबूजोने कहा था । उनके घर शादी है न, बोबोजी ?

स्वरूप० : मर तू शादीमें । बराबरवाले बाबूजीने नहीं, अपने बाबूजीने कुछ कहा था तुझसे ।

नौकर : हाँ-हाँ, अपने बाबूजो कह रहे थे कि हम काम कर रहे हैं ।

कोई आये तो कह देना 'नहीं हैं' । सरकार, आप सब तो वहीं दावत खायेंगे । आज तो फिर मेरेको भी वहाँ····बहुत दिनसे दावत नहीं खायी ।

स्वरूप० : हाँ, तुझे तो खिलाना ही चाहिए । मैं दावतकी नहीं पूछती ! बाबूजीने तुझसे कुछ कहा था, वह पूछती हूँ ।

[नीचेसे आवाज़ आती है, दयाल साहब !]

स्वरूप० : जाने कौन आवाज़ दे रहा है । [दरवाज़ा पीटकर] देखना, तुम्हें कोई बुला रहा है ।····दरवाज़ा खोलो । [नौकरसे] बुद्धू, तू नीचे जाकर देख····जा जल्दी ।

नौकर : हाँ, बीबीजी ।

स्वरूप० : [चिल्लाकर] अरे, जल्दी जा नीचे ।

नौकर : [ख़ुश होकर] मैं जल्दी जाकर पहले दावत खा आऊँ, बीबीजी ?

स्वरूप० : दावतके सगे, नीचे जाके देख कोई बाबूजीको बुला रहा है । क्या कहा था बाबूजीने तुझसे ।

नौकर : [ऊँचे स्वरमें] कह रहे थे कोई आये तो कह देना 'नहीं है' ।

स्वरूप० : अरे चुप, बदतमीज़ । जाकर कह दे कि बाबूजी इस वक़्त घरपर नहीं हैं ।

आवाज़ : [नीचेसे] अच्छा, ठीक है । सुन लिया, नौकर भेजनेकी अब ज़रूरत नहीं है । उनसे सिर्फ़ इतना कह दीजिए कि बारात आ रही है, अगवानीमें शामिल ज़रूर हों ।

स्वरूप० : [आगे बढ़कर] बुद्धू, तू बस एकदम····क्या करूँ तेरा, गधे ! इतनी बेइज़्ज़ती करा दो····और आँख फाड़कर देख रहा है !····राकेश बाबूने सब सुन लिया, बेवक़ूफ़ कहीं-के ।···राकेश बाबू मनमें क्या कहते होंगे !····चल जा

नीचे, सब्ज़ी देख, जलकर ख़ाक हो गयी होगी अबतक !···· बेशरम, देखता क्या है ? [चिल्लाकर] नीचे सब्ज़ी देख आ !

नौकर : [रोता-सा] जी, बीबीजी ।

स्वरूप० : [दरवाज़ा पीटकर] मैं कहती हूँ इतनी बातें हो गयीं तुम भीतर क्या कर रहे हो ? [दरवाज़ा पीटकर] खोलते हो या मैं दरवाजा तुड़वा दूँ ? हद हो गयी, क्या सो रहे हो ?···· मैंने कहा, क्या सो रहो हो ?····बारातकी अगवानीके लिए राकेश बाबू बुलाने आये थे । दरवाज़ा खोलो ।

सुधा : [हिचकियाँ] पा····पा····क····हाँ····ग····ये, माँ ?

स्वरूप० : अरी, तू, चुप रह । [नरम पड़कर] पापाने भीतरसे कमरा बन्द कर रखा है । सुनते ही नहीं ।

सुधा : क्यों····बन्द····कर····रखा है····माँ ? [हिचकियाँ]

स्वरूप० : चुप नहीं रहेगी ?····अच्छा, यह ठीक है ।····सुधा, तू बुला ।

सुधा : [बुलाते हुए, हाथोंसे दरवाज़ा पीटती है] पापा··· [ज़रा ज़ोरसे] दरवाज़ा खोलो । [ठहरकर] नहीं खोलते, माँ ।

स्वरूप० : जरा जोरसे बुला ।

सुधा : माँ, मैं ग्रामोफ़ोनका भोंपू लेकर बुलाऊँ ?

स्वरूप० : नहीं-नहीं । [ठहरकर] अच्छा, ठीक है···बुला ले ।

सुधा : [भोंपूसे] पापा दरवाजा खोलो । पापा····ऐ····[दरवाज़ा पीटती है । दरवाज़ा खुलनेकी आवाज़, और साथ ही मरमराहटकी गूँज] पापा, दरवाज़ा खोलो । [खुलता है]····पापा तुम क्या कर रहे थे, पापा ?

स्वरूप० : मैं कहती हूँ तुम्हें क्या हो गया है ? दरवाज़ा बन्द करके

बैठे थे। दुनिया बुला-बुलाकर थक गयी। घर चाहे जहन्नुममें चला जाये। यह नहीं कि ज़रा नौकरको ही देख लेते।

सुधा : पापा।

स्वरूप० : मैं कहती हूँ बोलते क्यों नहीं?…इस कमबख्त बुद्धूके बच्चेने सारी इज़्ज़त मिट्टीमें मिला दी। राकेश बाबू बुलाने आये थे, पता है उनसे क्या कह दिया?…तुम बोलते क्यों नहीं हो जी?

दयाल० : जी!

स्वरूप० : जीके क्या मानी?…तुम वहाँ क्या कर रहे थे?… पसीना तो देखो। क़मीज़ तर-बतर है। बारातके लिए न तैयारी, न कुछ। मैं क्या-क्या करूँ? तुमसे यह भी नहीं होता कि कमसे कम बिस्तर ही…मैं कहती हूँ बोलते क्यों नहीं?

[बारातका बैण्ड सुनाई देता है]

दयाल० : मेरे ही बोलनेकी कुछ ज़रूरत रह गयी है, स्वरूप? यह दुनिया-भरके लाउडस्पीकर, शादीमें बजते रिकार्ड, ग्रामोफोन, रेलगाड़ीकी सीटियाँ, गाने, स्पीचें, भजन, कीर्तन, अभिनन्दन-भाषण, बैण्ड बाजे, बच्चोंकी चिल्ल-पों, बुलानेवालोंकी आवाज़ें, नौकरकी चीख-चिल्लाहट…और सबके ऊपर तुम्हारी आवाज़…वल्लाह, क्या आवाज़ पायी है। यह भी किसी लाउडस्पीकरसे कम है?

स्वरूप० : देखोजी, तुम मुझे हर बातमें घसीट लाते हो। ग़लती किसीकी, और तोहमत मेरे सिर। मैं ही बुरी हूँ।… कभी मेरे कामका बखान, कभी मेरी आवाज़का।

दयाल० : अब तुम्हीं देख लो न, ज़रा-सी बात कही और तुमने

अपना छत्तीस इंची रिकार्ड छेड़ दिया। मैं तो इस सारी तूफ़ाने-बदतमीज़ीकी बात कर रहा था।

स्वरूप० : तो तूफ़ान किसने उठा रखा है, मैंने या तुम्हारे इस लाड़ले नौकरने? क्यों नहीं इस नौकरको बदल देते जिससे सारा झगड़ा ही मिट जाये। आप तो कमरा बन्द करके बैठ जाते हैं—कानोंपर जूँ भी नहीं रेंगती। चाहे किसीकी चिल्ला-चिल्लाकर जान निकल जाये।

दयाल० : यही तो मैं भी कह रहा था स्वरूप, कि आपको जो यह चिल्लाहटकी ट्रेनिंग मिली है····पता नहीं कहाँसे और कबसे। वह····वह····क्या कह रहा था मैं? दिमाग़ ही खराब हो गया है···हाँ, शायद बचपनसे ही। उस ट्रेनिंगने मेरे दिमाग़को ऐसा खोखला कर दिया है जैसे चूहा बिलको कर देता है।

स्वरूप० : अब लगे मेरी ट्रेनिंग और मेरे घरका बखान करने। मुझे तो यह ट्रेनिंग मिली है कि मैं मर-खपकर तुम्हारा घर चलाऊँ, और तुम शोर-तूफ़ानसे दूर आरामसे बैठकर बस सिर्फ़ लिखते रहो।····आपकी यह कौन-सी ट्रेनिंग है कि एक ज़रा सलीक़ेका नौकर नहीं लाया जाता? छह महीनेसे कह रही हूँ।

दयाल० : क्या अच्छा हिसाब लगाना आता है तुम्हें। अभी बुद्धूको आये छह महीने हो गये। क्यों? जूनसे ही तो रखा उसे! जूनसे अबतक छह महीने होते होंगे?

स्वरूप० : क्यों झूठ बोलते हो! जूनमें कब रखा था?

दयाल० : तो तुम्हीं बता दो कबसे रखा था।

स्वरूप० : मैं कोई हाज़िरी-रजिस्टर रखती हूँ जो मुझे तारीख याद हो! मुझे तो यह लगता है जैसे ज़िन्दगी-भरसे यही नौकर

इस घरमें है, और मरनेके बाद भी रहेगा।....क्या मालूम कब आया था ?

दयाल० : कुछ तो कहो। तारीख न सही, महीना ही याद करके बता दो।

स्वरूप० : तुम खामख्वाह मुझे बातोंमें उलझाते हो...और यह बुद्धू मुँह बाये खड़ा है। न चौकेका काम करता है, और न बिस्तरे लगाता है। सुने तब न काम करे ? मैं तो कहती हूँ यह ज़रूर सुनता होगा। सिर्फ़ काम न करना पड़े इसलिए बनता है।

दयाल० : मैं पूछता हूँ यह कब आया था, बताती क्यों नहीं ?

स्वरूप० : फिर वही ? अच्छा बाबा....[सोचकर] अच्छा, यह कौन-सा महीना है ?

दयाल० : तुम्हें यह भी नहीं मालूम ?

स्वरूप० : होगा कोई—इसी क़िस्सेमें महीने निकले जाते हैं। क्या याद रहती है ? जुलाई होगी, नहीं तो सितम्बर होगा।

दयाल० : और अगस्त बीचमें कहाँ चला गया ? बुद्धूके कानमें ?

स्वरूप० : होगा अगस्त बीचमें, मुझे क्या मतलब ? बेकारकी बातें तुम्हें बहुत आती हैं। ज़रूरी बात जो है उसे बस यों ही उड़ा देते हो।

दयाल० : अच्छा, यह बेकारकी बात है ? जुलाईके बाद सितम्बर—सारा कैलेण्डर ही बदल दिया तुमने, यह बेकारकी बात है ?

स्वरूप० : तुमको हो क्या गया है, मैं कहती हूँ। जुलाईके बाद सितम्बर आ जाये, या अगस्तके बाद जून। यह कोई बड़े कामकी बात हुई ? बेकार उल्लू बनाना बहुत आता है तुम्हें। नौकरको बदलनेकी बात कहती हूँ तो जुलाईके बाद दिसम्बर आता है या सितम्बर, यह बताने लगते हैं।

दयाल० : तो जो बात अब हुज़ूर कहें वह कहूँ।

स्वरूप० : मुझे तुम क्या समझते हो ? जैसे मेरी कुछ इज़्ज़त ही नहीं। नौकरके सामने कभी लाउडस्पीकर कहते हो, कभी हुज़ूर। शरम भी नहीं आती।

दयाल० : पर जब नौकर बहरा है तो सुनेगा क्या खाक। सामने कहूँ या बादमें।

स्वरूप० : तो तुमने इसीलिए बहरा नौकर रख छोड़ा है कि जो मरज़ी आये मुझसे कहो ! अब समझी मैं।

दयाल० : क्या खाक समझीं।

स्वरूप० : धन्य हो महाराज, तुमसे तो बहस करना बेकार है। हर तरह अपनी ही बात रखते हो। [बुद्धूकी तरफ़ घूरकर] मैं कहती हूँ तू खड़ा-खड़ा क्या देख रहा है बुद्धू ? जा नीचे !....तुम मुझे यह बताओ कि कमरा बन्द कर क्या कर रहे थे ?

दयाल० : आपको मतलब ? झख मार रहा था।

स्वरूप० : [मुँह चिढ़ाकर] वाह-वाह ! बड़ा अच्छा काम कर रहे थे।

दयाल० : क्यों, इसमें क्या बुराई है ? यह तो बड़ा मज़ेदार काम है !

स्वरूप० : झख मारना ?

दयाल० : जी !....समझीं भी आप, कि बस यों ही कह दिया ? झख माने मछली ! बस वही मार रहा था।

स्वरूप० : कहाँ ? कमरेमें कोई तालाब था क्या, जो आप झख मार रहे थे ?

दयाल० : लिखते वक़्त तालाब तो क्या तालाबके परदादा महासागर-को भी कल्पना कर सकता था। और झख तो क्या झख-की पड़-पपड़दादी मगर-मच्छोंको भी मार सकता था।

स्वरूप० : मेरा तो इतना दिमाग़ है नहीं जो तुमसे लड़ाऊँ। चिल्लाते-चिल्लाते वैसे ही ख़ाली हो गया है। भगवान्के लिए इतना बता दो कि कर क्या रहे थे! राकेश बाबूके यहाँ शादीमें नहीं जाना?

दयाल० : शादीमें नहीं जाना, कोई मेरी हो रही है।

स्वरूप० : शादीकी ऐसी ही जीमें है तो और करा लो, मैं रोकती थोड़े ही हूँ।

दयाल० : [हँसके] ख़ैर मेरी तो रोज़ ही होती रहती है। घरमें हर वक़्त आवाज़ोंका लाउडस्पीकर चलता ही रहता है। भगवान्, इन लाउडस्पीकरोंने ज़िन्दगी हराम कर दी है। सिर फट गया है। रात-दिन चैन नहीं। रोज़ शादियाँ, रोज़ बारातें, रोज़ बच्चोंका जन्म-दिन, मुण्डन, भजन, कीर्तन, लेक्चर, विज्ञापन—और भी ईश्वर जाने क्या-क्या। पता नहीं, लोगोंको बे-वजह शोर मचानेका भूत क्यों सवार हो गया है। दूसरोंको क्या जताना चाहते हैं। दो-दो बजे रात तक चारों तरफ़ चीख-चिल्लाहटका खौफ़नाक तूफ़ान चढ़ा रहता है। घटोत्कचकी पैदावार है यह लाउडस्पीकर, जाने किस शैतानको ईजाद है! दुनियापर रोक है, पर इनपर रोक नहीं! वक़्त-बेवक़्त चारों तरफ़ बजते ही रहते हैं। कानके परदे फटे जा रहे हैं। बाहर लाउडस्पीकर, और [साँस लेकर] हमारे तो घरमें भी लाउडस्पीकर है—

स्वरूप० : देखो जी, मुझे लाउडस्पीकर न कहना! मैं लाउडस्पीकर हूँ तो तुम····

दयाल० : बन्द घड़ी. जिसके दिमाग़की टिकटिक भी इन आवाज़ोंने बन्द कर दी है!···और तुम किसी लाउडस्पीकरसे कम

थोड़े ही हो। क्या आवाज पायी है आपने ! वल्लाह, क्या किसी लाउडस्पीकरसे कम है ?

स्वरूप० : यह तुम्हारा और तुम्हारे बहरे नौकरका क़सूर है। लेकिन तुम्हें यह सब आवाज़ें तो आती थीं, पर मेरे ही पुकारनेकी आवाज़ नहीं आयी थी—क्यों ?

दयाल० : यह बात नहीं है स्वरूप, मुझे कोई आवाज़ नहीं आ रही थी, क्योंकि कमरेके दरवाज़े, खिड़कियाँ, रोशनदान बन्द करके अन्दर—जानती हो क्या····ठहरो [अन्दर जाकर एक स्टोव लाता है] यानी स्टोव 'फुल आन' करके रखा था और इसकी एकसार भर्राहटमें घर-बाहरकी सब आवाज़ें, लाउडस्पीकर वग़ैरह-वग़ैरह खत्म और भीतर एक-स्वरके साथ काम !····कहो कैसी रही ?

स्वरूप० : क्या खाक रही !····अगर कहीं आग लग जाती तो। [इतनेमें बुद्धू पतीली लाता है उसे देखकर] अरे, यह पतीली क्यों लेकर आया है ? तुझसे पतीली किसने लाने-को कहा था ?

नौकर : हम जानी, साहेब चाय उबलिहैं !

दयाल० : इसमें चाय तो नहीं, तेरा सिर उबालेंगे।

[बुद्धू डरकर भाग जाता है। छोटी बच्ची खिलखिला-कर हँसने लगती है]

■

संवत्सर

(ऐतिहासिक फ़ैण्टेसी)

•

दृश्य–१

[उज्जयिनीसे कुछ दूर]

[घनी अँधेरी रातका सन्नाटा। चारों ओर भीषण निस्तब्धता है। तारोंकी हलकी छायाके नीचे कोई चलता जाता है। अदृश्य। केवल पैरोंकी चाप निरन्तर आ रही है। बहुत दूर एक स्वर गूँजता रहता है, फिर विलीन हो जाता है।]

युगदेवी : [थके हुए टूटे स्वरमें] अब आगे न चल सकूँगी परदेशी। तुम्हारी कहानी शेष है और मेरी मंजिल आ पहुँची। चिर-वियोगके इन बुझते निमिषोंमें केवल दो घड़ी।

संवत् : [साँस भरकर] मैं कैसे कहूँ युगदेवी ! विश्रामका वरदान मुझे नहीं मिला। जन्म और मरणसे ऊपर मैं एक दूरके स्वरकी डोर हूँ। मेरा शुरूका छोर है, अन्तका नहीं।

युगदेवी : न जाने किस यन्त्रबलसे मैं तुम्हारे पीछे छायाकी भाँति चली आयी, मेरे कठोर। पर तुमने आँख भरकर भी न देखा। क्या तुम्हारे हृदयमें कोई कम्पन नहीं होता ?

संवत् : देवी, मेरे हृदयकी सीमामें अनगिनती कम्पन उठे और मिट गये। अब अपनी पूजासे उसे और पाषाण न बनाओ। अपना प्यार लौटा लो देवी। मैं उसे न सँभाल सकूँगा ?

युगदेवी : इतनी दूर आकर अब लौटना असम्भव है। मैं तुम्हारे साथ न चल चकूँगी तो तुम्हारी बीती हुई पदचापोंकी भाँति मिट जाऊँगी।

संवत् : मुझे इन बन्धनोंमें न कसो। मेरा संसार स्वयं ही स्मृतिके खण्डहरोंसे बना है। उसके निर्माणका प्रयत्न मत करो देवी, क्योंकि वह निर्माण भी खण्डहर ही होगा।

युगदेवी : पर जो स्वयं मिट रहा है उसमें निर्माणकी शक्ति कहाँ है, प्रवासी ?

संवत् : जो स्वयं मिटता है उसीमें निर्माणकी शक्ति होती है, देवी। किन्तु वसन्त और पतझरकी सीमाओंमें मैं कहीं भी न ठहर सका। कहीं न ठहर सकूँगा। मेरी विवशता— मुझे मत रोको !

युगदेवी : बन्धनहीन, मैं तुम्हें न समझ सकी। और कुछ नहीं चाहती। केवल एक अन्तिम विनय है—

संवत् : कहो, देवी !

युगदेवी : [साँस भरकर] तुम मुझसे इतनी दूर क्यों रहे, पथिक। और अब वियोगका कोई स्मृति-चिह्न भी न दोगे ?

संवत् : मैं स्मृति-चिह्न क्या दूँ, जब मैं स्वयं एक स्मृति-चिह्न हूँ। मेरी आँखोंसे देखो—वर्षोंकी डोरीपर चलनेवाले वे धुँधले चित्र। जो तुम्हें मिट्टी है मैं उसमें एक बीता हुआ फूल देखता हूँ, जो तुम्हें पाषाण है उसमें मुझे मोती दिखता रहा है। मैं स्वयं खण्डहर हूँ, किन्तु मेरी आँखोंमें महलोंकी छाया अब भी शेष है। आज मुझे अपने उन्हीं ध्वस्त राजमहलोंमें लौटना है देवी !

युगदेवी : मुझे भी वहाँ ले चलो प्रवासी। [हाँफकर] किन्तु मेरी मंज़िल—

संवत् : युगदेवी, तुम लौट जाओ। मेरे पथका कोई अन्त नहीं। यह सब तुम भूल जाओ। किन्तु मैं—

युगदेवी : तुम ? तुम क्या ?

संवत् : मैं कभी कुछ न भूल सकूँगा। महल और खण्डहर, मन्दिर और समाधि, मोती और पत्थर मुझे सब याद रहेंगे। मुझपर विश्वास करो।

युगदेवी : कुछ न भूल सकोगे। मुझे भी न भूल सकोगे। [साँस भरकर] यदि यही मेरे जोवनका अन्तिम क्षण होता।

संवत् : युगदेवी, मैं उस सीमापर आ चुका हूँ, जहाँ आँसू और हँसी दोनों एक हो गये हैं। मुझमें जब दो विभिन्न ध्रुव रेखाएँ मिल चुकी हैं तो केवल एकका अस्तित्व असम्भव है।

युगदेवी : इन क्षणोंमें और ग्रन्थियाँ मत डालो, प्रवासी !

संवत् : तुम मुझे भावना-रहित समझोगी। मेरी इस्पाती कठोरता तुम्हें धोखेमें डाल सकती है। लेकिन देवी। यह सब नया है। मोती और सोनेका देश मैं बहुत दूर छोड़ आया हूँ।

युगदेवी : [फीकी हँसी] मोती और सोना !

संवत् : मुझे अन्यथा मत समझो युगदेवी ! अब विदा दो। उन बातोंका समय अब नहीं रहा।

युगदेवी : और मेरा भी समय आ गया प्रवासी। किन्तु, तुम कहाँ [साँसें भर रही हैं] तुम कहाँ जा रहे हो। तुमने कहा था : 'कालकी अमरताका रहस्य मैं तुम्हें बताऊँगा।' तुम्हारी बात शेष है और अब—अब [साँसें टूट-सी रही हैं।] मुझे समय नहीं।

संवत् : ऐसा मत सोचो। वह कथा फिर समाप्त हो जायेगी।

युगदेवी : मेरे समाप्त होनेके पश्चात्।

संवत् : नहीं-नहीं। देवी, धैर्य रखना। [साँसोंकी आवाज़, कुछ देर निस्तब्धता।]

संवत् : युगदेवी ! [विराम] युगदेवी !!

युगदेवी : हाँ, कहते जाओ । रुको नहीं ।

संवत् : तुम्हें मूर्च्छा ! नहीं, अब ठीक है ।

युगदेवी : [धीरेसे] हाँ, अब ठीक है । तुम्हें ज्ञात होगा कि दीपक-की लौ कैसे एकदम तेज़ हो जाती है । बताओ प्रवासी, कहीं मेरी आत्मा प्यासी ही न रह जाये ।

संवत् : तुम देखोगी, सुनोगी ?

युगदेवी : [मौन]

संवत् : देख सकोगी ?

युगदेवी : हाँ, देख सकूँगी ।

संवत् : तो देखो, इस साँवली रातमें तारोंकी हलकी छाँहके नीचे दूर महाकालके मन्दिरकी चोटी । आसमानमें एक धुँधली रेखा-सी । देखा ? खण्डहरोंमें-से ऊपर उठते अवन्तिकाके राजमहल । और वह अँधेरेकी बाँहोंमें-से निकलते रंग-भवन ।

[गीतकी हलकी गूँज आती है ।]

दूरीके वे कोमल गीत ।....सफ़ेद फूलोंपर हवाकी लहरसे ।

[नृत्यकी गूँज]

यह उर्वशीके रंगीन चरणोंकी गूँज है । [विराम] तुम चकित हो । किन्तु मैं इसी रातकी सहस्र वर्षोंसे राह देख रहा हूँ । हज़ार वर्षकी दो मंज़िलें पार करनेपर यह रात आयी है ।

युगदेवी : [साँस भरती है]

संवत् : हाँ, यह स्वप्न नहीं, सत्य है । इन खण्डहरोंपर-से आज धुँधले वर्षोंके कुहरेका परदा उठ रहा है । उठता जा रहा है । वर्तमान अन्धकारकी भाँति अलग सिमटता जाता है

ओर आजकी उज्जयिनी युगों पूर्वकी अवन्तिका बन रही है। वही राजमहल, वही वैभव, वही नवरत्न। आजकी रात वह सारा युग फिरसे लौट आया है। दो सहस्र वर्षों-की दूरीसे विक्रमादित्य और स्वर्णश्रीका वह युग।
[विराम]
देखो युगदेवी। उधर देखो। यह घड़ी फिर न लौटेगी [विराम] किन्तु—यह क्या। तुम सो रही हो। सो गयी ? युगदेवी !
[यवनिका]

दृश्य–२

[अवन्तिकाके राजमहल। क्षिप्रा तटपर दूर तक चले गये मधुमास लदे उद्यानमें विक्रम और कालिदास। दूर महलोंसे संगीत ध्वनि।]

कालिदास : आज इन कमल-नयनोंके नीचे उदासीकी कैसी छाया है ? सम्राट् ! मालवकी यह चाँदनी-भरी मीठी रात और यह उदासी ?

विक्रम : तुम कवि हो, कालिदास। तुम्हें मिठासका लोक मिल चुका है। तुम अपनेमें पूर्ण हो। किन्तु मैं—एक अपूर्ण अधूरी कहानी हूँ, कहानी ही बनकर रह जाऊँगा।

कालिदास : नहीं सम्राट् ! जीवनकी सुन्दरता इसी अधूरेपन ही में तो है।

विक्रम : किन्तु कालिदास, मेरे जीवनकी अपूर्णता। इसका कुछ और ही रूप है। कर्मकी कठोर भूमि और स्वप्न। कवि, तुम्हें कैसे समझाऊँ ? तुम तो मनके सारे रंग पहचानते हो।

कालिदास : स्वप्नोंका सत्य होना तो आप ही से सम्भव हुआ है सम्राट् ! आपके समस्त स्वप्न साकार होकर उसी भाँति

उतरे हैं जैसे इस दूर तक फैली चाँदनीकी श्वेत छाया श्याम धरापर उतर आयी है।

विक्रम : यदि कहीं मैं भी इस दूर तक फैली चाँदनीकी भाँति होता। मेरे संचित स्वप्नोंसे अनन्त विनाश खेल रहा है और देशसे शक आक्रमणकारी। दोनों ही मेरी अपूर्णताके अभिशप्त प्रतिबिम्ब हैं। मैं सोचता हूँ कवि, यदि यह जीवन कहानी ही रहेगा तो फिर पूर्ण कहानी क्यों नहीं है?

कालिदास : आक्रमणकारी! वह आपकी प्रतिक्षण निकट आती पूर्णता-में बाधक नहीं हो सकते। सम्राट्, मैं वर्तमानके दर्पणमें भविष्यकी रूप-रेखाएँ देख रहा हूँ। केवल वर्तमानका प्रतिबिम्ब नहीं।

विक्रम : तुम कहोगे यह सुख, यह वैभव, यह चन्दन-गन्ध-भरे महल, तुम कहोगे यह चांदनी रात और दूरीका रंगीन गीत। तुम कहोगे यह साम्राज्यपर दोनों आक्रमणकी श्याम छायासे घिर रहे हैं। भविष्यकी अनन्त झंझाके पहलेकी श्याम छाया—

कालिदास : झंझाके पहलेकी छाया। उस छायासे कोई भय नहीं सम्राट्। आपके प्रतापसूर्यके सम्मुख शकोंकी छायाका कोई अस्तित्व नहीं। यह उदासी गीतोंसे धुल जायेगी। उर्वशी-को इसी कुंजमें बुलवाऊँ।

विक्रम : रहने दो कवि। इन गीतोंसे, इस रस-रंगसे क्या होगा? यह अमिट नहीं। पल-भरमें इनकी गूँज अनजानी दिशामें जाकर खो जायेगी। मैं इन नाशवान् बातोंसे मन न बहला सकूँगा।

कालिदास : किन्तु यह गीत मिटकर भी अमर रहेंगे। जबतक चाँदकी छाँहमें कुमुद फूलेंगे, जबतक कमलपुष्प उषाके चुम्बनसे

मुसकरा उठेंगें, जबतक नयन नयनोंसे उलझेंगे, तबतक कला भी रहेगी। कलाका अन्त सृष्टिके अन्तपर होगा।

विक्रम : तुम्हारा विचार है कवि, यह नाशवान् नहीं। क्या यह सम्भव नहीं कि समयका धुँधला तुषार इन्हें ढक ले, जैसे खण्डहरोंको काई। और तब आजसे सहस्रों वर्षों बाद किसीको स्मरण भी न रहे कि यह वैभवका साम्राज्य भी कभी था।

कालिदास : वैभव और प्रेमका—

विक्रम : कविके हृदयमें केवल प्यारके ही चित्र बनते हैं। मिलनमें मुख चाँद बन जाता है—मणि दीपकोंके प्रकाशमें कपोलोंपर लाजकी लाली छिपानेके लिए अबीर फेंकी जाती है। और विरहमें आँखोंके नीचे दूरके श्यामल-वदन मेघदूतकी छाया उतर आती है। कविराज! तुम्हारे ये गीत अमर-स्मारक हैं। कवि, मैं तुमसे ईर्ष्या करता हूँ।

कालिदास : ईर्ष्या? [हँसकर] और आपके चिरन्तन-स्मारक—यश, वैभव, विजय, साम्राज्य। अपनी सीमापर पहुँचकर यह साकार हो उठे हैं। और ईर्ष्या?

विक्रम : कवि, प्रत्येक युग, प्रत्येक देशमें ऐसे स्मारक बनते रहे हैं। आज उनका प्रकाश कहाँ है? ढलते हुए पीत चन्द्रकी भाँति वह भी ढल चुका है। और यह फैला हुआ साम्राज्य? कालिदास न जाने अपने अंचलमें यह कितने खण्डहर, कितने पत्थरमें ढेर लिये पड़ा है। एक ओर सर्वभक्षी महाकाल है, दूसरी ओर विनाशकारी मानव—आज दोनोंके बीच इन स्मारकोंकी आभा श्यामल होती जाती है।

कालिदास : सम्राट्, इन्हें प्रलयकी छाया भी नहीं ढँक सकेगी, मानवी शक्तियाँ तो बहुत क्षुद्र हैं।

विक्रम : मेरे मनमें शान्ति नहीं, कालिदास। मुझे इन बातोंसे सन्तोष नहीं होता। परिवर्तनका यही सत्य रहा है, कवि। कितने सम्राट् आये और चले गये। कितने राज्य बने और बिगड़े। आज सबका नाम एक मृत-इतिहास है। जीवित-शक्ति नहीं। अपनी-अपनी सभ्यता, कला और वैभव लिये सभी बीते दिनोंके अन्धकारमें समा गये, खो गये। हमारे लिए उनका कोई अस्तित्व नहीं। शताब्दियों-की शताब्दियाँ विस्मरणके लिए इसी अजगरने निगल लीं। उनका क्या पता है, क्या चिह्न है, बताओ कवि, वे कहाँ हैं?

कालिदास : वे कहाँ हैं? सम्राट् यह मेरा आपका प्रश्न नहीं, सृष्टिका प्रश्न है। किन्तु फिर भी मोती और पत्थरका अमर भेद तो रहेगा ही।

विक्रम : पत्थर और मोती। कवि, तुम भूल रहे हो कि पत्थरका इतिहास मोतीसे अधिक महान् है। मुझे तो ऐसा लगता है कि जैसे हर पत्थरके नीचे एक भूली हुई कहानी दबी पड़ी है। उसे कोई नहीं समझता। एक खोयी हुई आवाज़ सिमट गयी है उसे कोई नहीं सुन सकता। कवि, मैं एक ऐसे ही स्वरको ढूँढ़ रहा हूँ जो मेरे पत्थरोंकी आवाज़को मौन न होने दे।

कालिदास : वह स्वर आपको बहुत पूर्व प्राप्त हो चुका है, सम्राट्।

विक्रम : नहीं कालिदास, आज मेरे सम्मुख दो महान् प्रश्न हैं—एक भविष्यका, दूसरा वर्तमानका। एक मृत्युका, दूसरा जीवनका। एक कालसे परे अनन्त रक्षाका वरदान चाहता

है, दूसरा बर्बर शक आततायियोंसे वर्तमान जीवन-रक्षाका दान।

कालिदास : आप दोनों ही वरदान दे रहे हैं सम्राट्।

विक्रम : और, और, [साँस भरकर] एक तीसरा भी प्रश्न है, कालिदास।

कालिदास : मुझे ज्ञात है।

विक्रम : किन्तु तुम्हें यह ज्ञात न होगा कवि, कि मेरी वह आराधना भी आज तक अपूर्ण है। स्वर्णश्री कहती है मेरा यह साम्राज्य, यह अवन्तिका, मेरा यह सभी कुछ नाशवान् है। ओह, मुझे यह पहले क्यों न ज्ञात हुआ। और अब इस सीमापर आकर मैं लौट भी तो नहीं सकता।

कालिदास : हूँ, समझ गया।

विक्रम : [उत्साहसे] क्या समझे कवि ?

कालिदास : सब कुछ।

विक्रम : [फिर निराश होकर] किन्तु मेरी समझमें तो कुछ नहीं आया। कुछ भी नहीं। मैं उसकी पूजामें और क्या उतार लाऊँ, कवि।

कालिदास : आपकी उदासी बड़ी महान् है सम्राट्।

विक्रम : यदि मैं भी कवि होता....

कालिदास : तो ?

विक्रम : तो मैं पूर्णताके स्वप्नोंमें दर्शन कर लेता और गीतोंमें उतारकर अमर हो जाता। किन्तु [साँस भरकर] मेरा तो अभिशाप ही यह है कि केवल चित्रसे सन्तोष नहीं होता, साकार दर्शन भी चाहता हूँ। और मुझे वह चित्र तक न मिला।

कालिदास : सचमुच, आपकी उदासी बड़ी महान् है सम्राट्।

विक्रम : तुम्हारे ये शब्द अग्निमें घृत डालते हैं, कवि। मेरी आत्मा पंखरहित पक्षीकी भाँति फड़फड़ाकर रह जाती है। उड़ना चाहती है उड़ नहीं पाती।

कालिदास : [सोचते हुए] चित्र और साकार दर्शन।

विक्रम : मुझसे कहो मैं खड्ग चलाकर बता सकता हूँ, किन्तु खड्ग चलानेकी कल्पना नहीं कर सकता। किन्तु कवि, तुम क्या सोच रहे हो?

[दूरसे नक़्क़ारोंकी आवाज़ वायुके एक झोंकेके साथ आती है, फिर खो जाती है।]

कालिदास : यही सोच रहा था कि यदि आपको चित्र मिल जाये तो—
[गीतकी गूँज आती है] सम्राट् सुनिए। कितना मोहक स्वर है।

[गीत निकट होता है]

विक्रम : यह तो तुम्हारा गीत है कवि। वासन्ती गा रही है।

कालिदास : वासन्ती।

विक्रम : हाँ, स्वर्णश्रीकी सखी—चलो देखें कवि····
[नक़्क़ारोंकी ध्वनि फिर आती है]

कालिदास : नहीं, आप ही देखें सम्राट्। मैं शीघ्र लौटूँगा।
[गीत निकट आता है]

लो पूरनता की छाँहों में—
फूली जीवन की कुसुम कली।
नित दूज चन्द्र-सी लौ नवीन,
निष्कम्प चरण, पथ अन्तहीन,
चिर साँझ-उषा के छोरों में—
रंगीन दीप की जोत जली।

ये दूर चली स्वर की डोरी,
युग की जिसने सीमा खोली,
वह गूँज नहीं मिट पायेगी,
जो जन्म-मरण के पार चली ।

[गीत धीरे-धीरे समाप्त हो जाता है]

विक्रम : तुम, स्वर्णश्री ।

श्री : हाँ, सम्राट् ।

विक्रम : स्वर्णश्री [रुककर] स्वर्णश्री ।

श्री : हाँ, सम्राट् ।

विक्रम : मैं विवश हो गया हूँ, श्री । यह जीवन इसी भाँति समाप्त हो जायेगा ।

श्री : सम्राट् !

विक्रम : कैसे कहूँ—नहीं, कहना ही पड़ेगा—

श्री : [मौन] ।

विक्रम : कहना ही पड़ेगा । तुम्हारी प्रतीक्षामें यह मन कमल—

श्री : सम्राट् ।

विक्रम : नहीं-नहीं, आज मुझे मत रोको श्री । इस चाँदनी रातको देखो ।

श्री : यह अमृत मेरे लिए विष है, सम्राट् ।

विक्रम : विष ? ओह—

श्री : मैं कैसे समझाऊँ, कैसे—।

विक्रम : [बात काटकर] मैं आज तक तुम्हें न समझ सका, श्री—

श्री : [साँस भरकर] मेरा ही दुर्भाग्य है, महाराज ।

विक्रम : मेरा विश्वास था, मैं तुम्हें समझ गया हूँ । किन्तु—

श्री : किन्तु सम्राट् ।

विक्रम : आज तुमने वह अधिकार भी मुझसे छीन लिया । श्री,

केवल इसी एक स्वप्नके सहारे जीवन चल रहा था। आज तुमने मेरा अन्तिम स्वप्न भी तोड़ दिया है।

श्री : ऐसा न कहिए महाराज।

विक्रम : कैसे न कहूँ श्री। मेरा एकाकी सन्तोष आज समाप्त हो गया है। समस्त महासागर न्योछावर करनेके बाद एक मोती था वह भी न रहा। अब कोई अवलम्ब नहीं।

श्री : मेरी वाणी जम रही है सम्राट्। मैं कैसे कहूँ—

विक्रम : और मेरा समस्त भावना-लोक आज जम गया है, श्री।

श्री : कैसे महाराज?

विक्रम : [उँसास भरकर] आज यह भी बताना पड़ेगा, पत्थर बनकर बताना पड़ेगा। तुम मुझे क्यों न पहचान सकीं, स्वर्णश्री?

श्री : और आप मुझे क्यों न पहचान सके, महाराज?

विक्रम : इतनी निर्दय न बनो, श्री।

श्री : निर्दय?

विक्रम : हाँ, निर्दय, निर्मम, कठोर। मेरी पूजाओंपर मत हँसो, श्री। उनकी अपूर्णताकी उपेक्षा न करो। क्योंकि अपूर्णता-का वरदान उन्हें तुमसे मिला है।

श्री : मुझसे?

विक्रम : हाँ, तुमसे। तुम चाहती तो उन्हें पूर्ण बना देतीं। पर तुमने—[निश्वास]।

श्री : [मौन]।

विक्रम : मैं आज तक न जान सका मेरी पूजा कहाँ अधूरी है। यह साम्राज्य, यह वैभव, यह स्वरित सिंहासन, कला, नवरत्न, क्या तुम्हें ज्ञात नहीं यह किसकी पूजाके पुष्प थे?

श्री : किसकी पूजाके सम्राट्?

विक्रम : तुम्हारी, श्री, तुम्हारी पूजा के—

श्री : मेरी ?

विक्रम : हाँ, केवल तुम्हारी। किन्तु वह आरती पूर्ण न हो सकी। सजी हुई सूनी थालीकी भाँति रखी रही। दीपक जलते रहे, पुष्प मौन पड़े रहे। पर तुमने कभी न चाहा कि....

श्री : [बात काटकर] मैंने तो सदा चाहा कि [लज्जित हो जाती है]।

विक्रम : क्या चाहा श्री, शीघ्र बताओ।

श्री : [मौन]

विक्रम : बताओ श्री, तुमने क्या चाहा। इस अन्तिम सीढ़ीसे मुझे मत गिराओ।

श्री : [मौन]

विक्रम : तुम फिर मौन हो गयी। मन्दिरके पट न खुल सके। मेरे दो जगत्‌में संग्राम छिड़ा हुआ है, श्री। दोनों ही मुझसे सम्पूर्ण वलिदान माँग रहे हैं। और तुमने आज पाषाण-वेदी भी प्रस्तुत कर दी है। तो सुनो, मेरा यह अन्तिम निर्णय है। पुजारी आरती-दीप सँजो सकता है, तो बुझा भी सकता है। कल प्रभात तक यह महल, यह रंग-भवन, कला-मण्डप, नवरत्न सब समाप्त हो जायेंगे। साम्राज्यका अन्त कर दिया जायेगा। कलका प्रभात इस केशर-केतन-को खण्डहरोंपर पड़ा पायेगा—और मुझे शकोंसे लड़ते हुए युद्धक्षेत्रमें।

श्री : नहीं सम्राट्, नहीं। ऐसा कभी नहीं हो सकता। मैं ऐसा कभी न होने दूँगी।

विक्रम : क्यों ?

श्री : मैं बताऊँगी। अवश्य बताऊँगी। आज समय आ गया है।

विक्रम : समय चला गया है, श्री। तुमने अवसर खो दिया। और अब, [रूखी हँसी हँसकर] अब विक्रमका प्रण रह गया है, स्वप्न कुमारी।

श्री : नहीं-नहीं। मैं अवश्य बतलाऊँगी। सम्राट्, मैंने चाहा था आप किसी भाँति····।

विक्रम : [मौन]

श्री : आप किसी भाँति अमर हो जायें।

विक्रम : [आश्चर्यमें आकर] मैं अमर ? अमर हो जाऊँ ? क्या कह रही हो श्री ? मैं अमर हो जाऊँ ? [साँस भरकर] किन्तु यह कैसे सम्भव है ? जीवनके बाद मृत्यु। मैं अमर ! ओह !

श्री : मेरा यही स्वप्न है सम्राट्।

विक्रम : अमरता····[हँसी] श्री, यह वंचना है। क्रूर वंचना है। नहीं-नहीं, बलिदान, बलिदान। [कालिदासका प्रवेश] कवि, तुम लौट आये ? सेनापति कहाँ हैं ?

कालिदास : महाराज !

विक्रम : सेनापति कहाँ हैं कालिदास ? मेरे स्वप्न मुझसे बलिदान चाहते हैं मेरा और मेरे साम्राज्यका। मैंने बलिदानका निश्चय कर लिया है, कालिदास ! सेनापति कहाँ हैं ?

कालिदास : [आश्चर्य] क्यों महाराज ?

विक्रम : क्योंकि मैं अमर नहीं हो सकता।

कालिदास : नहीं सम्राट्, आप अमर हो जायेंगे। शकोंपर अभी पूर्ण विजय प्राप्त हुई है। यह विजयका मुहूर्त आपकी चिर पूर्णताका मुहूर्त है। केवल आपको····।

विक्रम : मेरी ?

कालिदास : हाँ, सम्राट्, वर्तमान और भविष्य दो जीवनकी पूर्णताका

क्षण ! आप इस क्षणको अमर कर दीजिए ।

विक्रम : मेरी पूर्णता, मेरा समय । समय । कालिदास, स्वर्णश्री, मुझे अमरता मिल गयी, मैं अमर हो जाऊँगा । आजसे यह समय मेरे नामसे प्रारम्भ हो····

[गीतकी गूँज आती है]

"ये दूर चली स्वर की डोरी,
युग की जिसने सीमा खोली,
ये दूर··················।"

[फिर विलीन हो जाती है]

[प्रथम दृश्यके आरम्भिक पदचाप छायामें चलते चले जाते हैं ।]

■

पिकनिक

(कॉमेडी)

[एक मध्यवर्गीय घरकी बैठक]

अजीत : [खुद ही] पाँच बज गये और अबतक पता नहीं। हम लोग वक़्तकी क़दर करना तो जानते ही नहीं।

[नौकर चाय लाता है]

अच्छा, आपने चाय तैयार भी कर दी। मैं कहता हूँ कि····

नौकर : सरकार, पाँच ही बजेका तो आडर दिया रहा—

अजीत : [बात काटकर] अच्छा-अच्छा, रख दे यहाँ। तुझसे बहस कौन करे। मैंने कहा था कि जब वह सब लोग यहाँ आ जायें तब चाय लाना। अब ठण्डी होगी कि नहीं।

नौकर : अउरका। ये बसन्तका हवा सोई कैसी तीखी चलत है [ठहरकर] तुम पी ले आओ भैया, वे न आये तो न आवन देओ। रमा बिटियाको बुलाय देई।

अजीत : नहीं, उसे प्रेक्टिस करने दो। कोई ज़रूरत नहीं। मुझे तो हैरत होती है कि लोग वक़्तकी पाबन्दी····

श्याम : [डिस्टेन्समें] अरे भाई अजीत। आर यू इन।

अजीत : [ज़ोरसे] तशरीफ़ लाइए जनाब, आपका यह चार बज रहा होगा। इन्तज़ार कर-करके थक गया। आख़िर···· श्याम।

श्याम : [क़रीब आकर] भई, माफ़ करना अजीत। मुझे अकसर वर्कशॉपमें देर हो ही जाती है। तुम्हारा मैसेज मुझे घर वापस पहुँचनेपर नौकरने दिया।

अजीत : तुम्हें आज तीन दिनसे लगातार फ़ोन कर रहा हूँ जब रिंग

करता हूँ तो घण्टी बजती रहती है कोई बोलता ही नहीं। आज क़िस्मतसे घण्टी देर तक नहीं बजी। किसीने फ़ोन उठाया। मैंने सोचा चलो आज तो मिले, पर वहाँ देखता हूँ कि आपके नौकर साहब बोल रहे हैं।

श्याम : भई, वह बात ये है कि तुम्हारी भाभीजान ज़रा तफ़रीहके मूडमें आ रही थीं। मैंने भी सोचा कि चलो क्या हरज है। वह अपने मायके चली गयी हैं [विराम]।

अजीत : तभी आप रात-दिन घरसे ग़ायब रहते हैं। अच्छा बैठो तो सही चाय ठण्डी हो रही है।

श्याम : [रुककर] ठीक है। तो क्या यह सिर्फ़ इस चायकी खातिर ही बुलावा भेजा गया था। किसी खास खुशीमें यह चाय पिलायी जा रही है ?

अजीत : हाँ, शुरूआतमें तो ख़ुशीके लिए ही थी पर अब देखता हूँ कि बेकार जानकी झंझट मोल ले लिया।

श्याम : बात क्या पूछी और जवाब क्या मिला। जनाब, मैं चायका ज़िक्र कर रहा हूँ। आपके किसी रोमान्स वग़ैरहका नहीं।

अजीत : तुम भी क्या बातें करते हो, श्याम। रोमान्स तो भई, अपनी ज़िन्दगीमें कभी आया ही नहीं। और न आनेकी उम्मीद है। और यह अच्छा भी है खूब हँस-बोल तो लेते हैं अब, क्यों भाई, ठीक है न ? मैं तो सिर्फ़ यह कह रहा था कि जो काम मैं जिस तरह सोचता हूँ, वह वैसा होता नहीं।

श्याम : क्या पहेलियाँ बुझा रहे हो। अच्छा बताओ कि यह सब बाजों-आजोंकी आवाज़ कैसी है ? क्या चाय म्यूज़िकके साथ पी जाने लगी है ?

अजीत : नहीं भाई, सारा क़िस्सा तो इसीका है। इसीलिए तुम्हें इतने ज़रूरीमें बुलाया। सोचा कि जब एक बात करना तै ही कर लिया तो बिना तुम्हारी मददके क्या हो सकता है। क़िस्सा यह है कि इस वसन्त पूर्णिमाको मैंने मदनोत्सव मनानेका विचार किया है। उसीकी प्रेक्टिस होने जा रही है।

श्याम : यह मदनोत्सव क्या .फ्रॉड है? कुछ मैं भी सुनूँ?

अजीत : तुम विलायत क्या हो आये बस अपनी सभी सांस्कृतिक बातोंको खो बैठे। भाई, पहले जमानेमें वसन्तके दिनों सर्वत्र उत्सव किया जाता था। किसी बाग़में रूपरंगका आयोजन होता था। उस दिन लोग खूब रंगीन पीले कपड़े पहनते थे, सुन्दरियाँ फूलोंके गहनोंसे सजती थीं, नृत्य-संगीत होता था। नया ऋतुको .खुशीमें गेहूँकी ताजी बालोंका हवन होता था। लोग .खूब खाते-पीत, हँसते-खेलते थे।

श्याम : यानी एक तरहका कम्यूनिटी पिकनिक होता था।

अजीत : ऐसे ही समझ लो। तुम दूसरे ढंगसे समझ भी तो नहीं सकते। ख़ैर, अबकी बार तो इस वर्ष मैंने सोचा कि क्यों न हम सब मिलकर एक ऐसा ही आयोजन करें, अकेला पिकनिक तो अच्छा नहीं होता कुछ इन्टेलेक्चुअल बात भी शामिल रहे।

श्याम : यह बात है, बहुत ख़ूब। लेकिन और तो सब ठीक है पर यह फूलों सजी सुन्दरियाँ कहाँसे आयेंगी।

अजीत : ख़ैर, अब तुम तो मज़ाक़पर उतर आये, भाई, मैं बहुत सीरियस हूँ। इस बारेमें यह ज़रूरी नहीं कि हम उत्सव उसी ढंगसे मनायें। मैंने तो एक यों ही छोटा रूपक

लिखा है, उसमें तीन गीत हैं और कुछ मामूली-सा प्लाट। नेचरकी खुली स्टेज होगी। हम लोग बाहर झीलपर पिकनिक करें और वहीं थोड़ा-सा हँसी-खेल रहे।

श्याम : आइडिया तो ख़ूब है, पर तुम्हारी भाभी तो हैं नहीं वर्ना वही कुछ तुम्हारी मदद करतीं।

अजीत : तुम तो हो। तुम्हारी मदद क्या कुछ कम है।

श्याम : भई, मैं उनकी तरह ख़ूबसूरत तो हो नहीं सकता कि तुम्हारे कुछ काम आऊँ।

अजीत : नान्सेन्स, तुम तो श्याम कभी-कभी ग़ज़ब करते हो। क्या बात कही है आपने उनके सम्बन्धमें। और क्या मेरे स्वभावको समझा है।

श्याम : आज तुम इतने सीरियस क्यों हो? अच्छा तो मुझे क्या करना होगा।

अजीत : [ख़ुश होकर] ऊपरका सारा इन्तजाम तुम्हें ही करना है। मुझसे तो यह सब होगा नहीं, हाँ रूपक, गाना, रिहर्सल वग़ैरह मेरे ज़िम्मे।

श्याम : अच्छी बात है जैसा तुम कहो। पर यह तो बताओ कि और इसमें हैं कौन-कौन।

अजीत : भाई, वैसे तो मेरा इरादा कुछ गैस्ट्सको भी बुलानेका है पर एक्टिव हिस्सा लेनेवालोंमें राजेन्द्र होगा। वही म्यूज़िक क्लबका सेक्रेटरी और सुरेश, किशन होंगे। ये लोग अभी आते ही होंगे [विराम] और·········

श्याम : और उन्हें नहीं बुलाया·········

अजीत : उन्हें किन्हें ?

श्याम : वही तुम्हारी रेखाजी।

अजीत : मेरी कोई क्यों होने लगीं। हाँ, उन्हें भी बुलाया है।

उनका तो मेनरोल ही समझो । एक गाना तो वही गा रही हैं । एक छोटी बच्चियोंका कोरस और एक डुएट । मैं और रेखा गायेंगे ।

श्याम : तो यों कहो कि इस डुएटके लिए ही यह सब इन्तज़ाम हुए हैं ।

अजीत : अबकी बार अगर तुमने फिर मज़ाक़ किया तो लड़ाई हो जायेगी । हमारा कुछ इरादा है आप कुछ सोचते हैं । अरे साहब बहादुर, मैं सिर्फ़ अपने पुराने कल्चरकी सुन्दर चीज़ोंको वापस लाना चाहता हूँ । उन्हें फिरसे अपनी सामाजिक ज़िन्दगीमें फलता-फूलता देखना चाहता हूँ । मैं तो कहता हूँ कि····

श्याम : भई, यह तो यूँ ही मज़ाक़ था । मैं इसकी गम्भीरता समझ रहा हूँ । तुम्हारे आर्टिस्ट स्वभावको अच्छी तरह पहचानता हूँ । पर क्या मज़ाक़ भी न करूँ ? हँसी-खुशीकी बात करने जा रहे हो, उसमें हँसू भी नहीं ।

अजीत : ख़ूब हँस लेना, लेकिन पहले इसे पूरा करवा दो तब । देखो, हम अपनी सारी बातोंको भूल गये हैं । पहले कितने सुन्दर और रंगीन तरीक़े थे । अब अगर पिकनिकपर गये तो बस खानेकी धुन सवार रहती है । बहुत हुआ तो खाते वक़्त कुछ गप्पें, कुछ हलके मज़ाक़, कुछ ग़ैर संजीदा बातें । तुम्हीं सोचो अगर इसके साथ-साथ कलाका रंग भरा रहे तो कितना फ़ायदा हो सकता है । हम अपनी सोसायटीको एक स्वस्थ ढंगसे कितना ख़ूबसूरत बना सकेंगे । इसलिए मैं तो चाहता हूँ कि हमारे पहलेके जन-जीवनकी जितनी सुन्दर बातें थीं उन्हें फिर वापस लाना चाहिए । मैं तो कहता हूँ कि······

[तीन-चार लोगोंकी आवाज़ें]

अजीत : लो वे सब रिहर्सलके लिए आ गये। हलो, राजेन्द्र, किशन, आओ भाई आओ—

राजेन्द्र : देर तो नहीं हुई हमें। ओह, श्याम भी मौजूद हैं। अब क्या ठिकाना है।

श्याम : तो क्या अकेले ही मौज उड़ानेकी ठानी थी। क्यों राजेन्द्र?

राजेन्द्र : नहीं भाई, ऐसा कहीं हो सकता है। [विराम] हाँ तो अजीत, गाने-वानेकी प्रैक्टिस होगी कि नहीं। और भाई, हम निम्मी और सुधाको भी लेते आये हैं, उनका कोरस भी तो तैयार करना है।

अजीत : कहाँ है निम्मी? [आवाज़ देकर] निम्मी डियर, सुधा यहाँ आओ कहाँ चली गयी। किशन ज़रा देखना—

क़िशन : बहुत शैतान है। रास्ते-भर लेमन-ड्राप खाती आयी है। बड़ी मुश्किलसे जब यह लालच दिया तब कहीं चली, मैंने रास्तेमें कहा कि इतना मत खाओ गला खराब हो जायेगा।

राजेन्द्र : अरे भला वह मानेंगी। गला खराब होनेका कहा तो और जल्दी-जल्दी मुँहमें भरने लगीं।

अजीत : [हँसकर] गयी कहाँ हैं शैतान?

श्याम : अन्दर माताजी या बहनके पास होंगी। आ जायेंगी। चलो, तुम तो अपना काम शुरू करो, चलो—आजका जज मैं हूँ।

अजीत : इधर आइए जज साहब बीचके हालमें, वहीं सब कुछ है। [विराम, फिर मिश्रित आवाज़ें]

रमा : लो निम्मी, अब अपना खाना-वाना बन्द कर दो। कोरसके लिए तैयार हो जाओ। भैया वग़ैरह सब आ गये हैं।

अजीत : क्यों निम्मी ? शैतान अभीतक लेमन-ड्राप चबाये जा रही है। चलो रिहर्सल शुरू होती है । जाओ मुँह साफ़ कर आओ । और हाँ, सुधा कहाँ है । उसे भी बुला लो, तो फिर राजेन्द्र अब शुरू करो न । देर क्यों की ?

श्याम : हाँ, भाई देर-वेर मत करो, मेरा एक अपाइण्टमेण्ट भी है।

अजीत : अब आप अपने अपाइण्टमेण्ट वग़ैरहको गोली मारिए। यहीं ठहरना पड़ेगा जबतक पूरी प्रैक्टिस न हो जाये। कल ही तो है । अब वक़्त ही कितना है ।

श्याम : क्या कहा कल है । भई वाह मैं इतनी जल्दी सारा इन्तज़ाम करूँ और आप हफ़्ते-भरसे इसमें लगे हैं, क्यों राजेन्द्र ।

राजेन्द्र : तो आपको अब मालूम हुआ । कुछ वसन्तकी भी खबर है । अरे कल नहीं होगा तो क्या अगले सालके लिए प्रैक्टिस की जा रही है ? [विराम] अच्छा भाई अजीत, अब आज फ़ाइनल प्रैक्टिस होगी । कहीं सब मेहमानोंके सामने भद्द न उड़े ।

अजीत : यह कैसे हो सकता है ?

श्याम : तो शुरू करो न ? राह किस बातको देख रहे हो । अजीत, क्या सोच रहे हो ?

किशन : अजीत, शुरू क्या करोगे, वह रेखाजी तो आज भी नहीं आयीं ।

अजीत : यही तो मैं भी ग़ौर कर रहा था ।

किशन : और उनका मेन रोल है । अब ?

श्याम : यानी आपके पारटिसिपेण्टस पूरे नहीं । स्कीमें चल ही रही हैं । और आज भी न आनेके क्या मानी, क्या पहले भी नहीं आयीं ?

किशन : आयी तो थीं। सिर्फ़ एक दिन मुँह दिखानेको। अजीत ही से पूछो न ?

अजीत : भई मुश्किल-मुश्किलसे तो उन्हें राज़ी कर पाया। पहले बोलीं माताजीसे इजाज़त ले लो। फिर इजाज़त मिली तो कहने लगीं हम पहले स्क्रिप्टमें अपना पार्ट देखेंगे। ख़ैर साहब पार्ट भी देखा एक दिन कॉपी भी उनके पास रही। फिर कहने लगीं कि हम गाना नहीं गायेंगे।

राजेन्द्र : मैं पहले ही कहता था कि ऐसे लोगोंको मत रखो। पर अजीत किसीकी मानते थोड़े हो हैं।

अजीत : तो मैं और किसे बना लाता। एक साथ यह सारी बातें, पढ़ी-लिखी हो, बोल भी सके, गाना भी गा ले कहाँ मिलती हैं।

श्याम : [साँस भरकर] हाँ, भाई, कहाँ मिल सकती हैं !

अजीत : तुम मार खाओगे श्याम [विराम] अच्छा लाओ मेरी स्क्रिप्ट, चलो आगे आओ और किशन तुम्हारा डायलॉग है रमाके साथ। चलो, बोलो-बोलो !

रमा : बोलूँ।

अजीत : हाँ-हाँ शुरू करो····[विराम]

रमा : [डायलॉग बोलते हुए] मेरे बीरन, आज वसन्तोत्सव है। आज हमें पंचरंग चुनरी, दक्खिनका चीर और फूलोंके गहने मँगा दो।

किशन : [बोलनेकी कोशिश करता हुआ] मैं अपनी सखियोंके साथ आम्रवनमें जाऊँगी। सोनेके कलशमें गंगा जल भरूँगी····अरे, यह किसका पार्ट है ?

अजीत : सब ग़लत कर दिया। किशन, इतने दिनोंसे तुम रट रहे

हो । भई····यह तुम्हारा पार्ट नहीं, रमाका है। ठीकसे देखकर बोलो ।

किशन : सॉरी । मैं अपना ही बोलता हूँ—दक्खिनके फूलोंका और फूलोंका, सॉरी, फूलोंके गहनोंकी क्या करोगी, रानी, बहन ।

अजीत : सब ग़लत । बिलकुल ग़लत ।

किशन : क्यों क्या ग़लती हुई । यही तो लिखा है ।

अजीत : यही लिखा है । फूलोंके गहनोंकी क्या करोगी और दक्खिनके फूल····दक्खिनके फूल है या दक्खिनके चीर । उफ़ हद हो गयी, तुम सोते क्यों रहते हो ?

राजेन्द्र : किशन, तुम चार दिनसे बराबर ऐसी ही ग़लतियाँ कर रहे हो । तुम्हें हो क्या गया है । और कल उत्सव होगा । छिः !

श्याम : ख़ैर, आइ एक्सपेक्टेड एज़ मच, यह तो मैं जानता था और कुछ नमूना दिखाओ अजीत, अपने मदनोत्सवका । आगे चलो ।

अजीत : रिमार्क मत कसो श्याम । ग़लती हो ही जाती है । हाँ रमा, तुम अपना पार्ट बोलो ।

रमा : मैं पैरोंमें महावर लगाऊँगी । आज नगरकी कारी सुमारियाँ सजकर ।

अजीत : [डाँटकर] 'कारी सुमारियाँ' नहीं 'सारी कुमारियाँ ।'

रमा : हाँ-हाँ, सारी कुमारियाँ, [झेंपकर हँसती है] 'सारी कुमारियाँ सजकर जा रही हैं । आम्रवनमें । सोनेके कलशमें गंगाजल भरे, कुंकुम अबीर डाले, आमके बौरों और नयी कोपलोंसे कलश सजाये । वह देखो वह गाते जा रहे हैं ।

अजीत : 'जा रही हूँ।'

रमा : 'जा रही हूँ' तो कहा था।

अजीत : नहीं, 'जा रहे हैं' कहा था।

श्याम : हूँ, ठीक है। इस हिस्सेकी फिर प्रैक्टिस करवाओ। अलग-से। आगे चलो।

किशन : 'चल मेरी लाड़िली बहिना। मैं तेरा मार्ग रक्षक बनकर....'

अजीत : किशन : फिर ग़लत। भई, यहाँ लड़कियोंका कोरस है, कितनी दफ़ा बताया, फिर पहलेसे ही बोल पड़े।

किशन : सॉरी, तो कोरस शुरू क्यों नहीं हुआ ?

राजेन्द्र : तुम रुको तो सही। लो कोरस अभी शुरू होता है [विराम] रमा, यहाँ आओ, अच्छा एक, दो, तीन।

गीत

टेसू के लाल फूल
अमवा के मौर
गेहूँ पै बालें झूलें
फूलों पै भौंर
सखी, कुंकुम अबीर रँगी सोने की झारी रे
सोने की झारी !
सोने की झारी में
गंगा का पानी
दक्खिन का चीर पहिन
सजे महारानी रे, सजे महारानी
फूली फूली धरती लगै रतनारी
लगै रतनारी
सखी, कुंकुम अबीर रँगी सोनेकी झारी रे,

सोनेकी झारी। [गीत बन्द हो जाता है]

श्याम : भई, कोरस तो खासा है। हाँ, कुछ थिन ज़रूर है कुछ लड़कियाँ और होनी चाहिए थीं।

अजीत : वही तो सारा झगड़ा है। लड़कियाँ कहाँसे आयें। जो कुछ हैं यही तीन हैं। रेखा आ जातीं तो उन्हें भी शामिल कर लेते। वह अबतक ग़ायब हैं।

राजेन्द्र : वह आ चुकीं। तीन दिनसे नहीं आयीं अब क्या आयेंगी।

अजीत : [पेंसिव होकर] तीन दिनसे नहीं आयीं यह और बात है। लेकिन मुझे पूरा विश्वास है वह ज़रूर आयेंगी। मैंने आज ही फ़ोनपर बातचीत की थी। कह रही थीं, आनेकी पूरी कोशिश करूँगी।

श्याम : तब ठीक है, वह कोशिश करती रहेंगी और तुम्हारा उत्सव भी हो जायेगा।

राजेन्द्र : मेरा भी यही खयाल है।

अजीत : मैं कह रहा हूँ कि सब्र करो, उनका आना निश्चित है।

श्याम : आपको यक़ीन है तो हम भी यक़ीन किये लेते हैं।

राजेन्द्र : अच्छा भाई, आयें चाहे न आयें। हमारी प्रैक्टिस तो जारी रहनी चाहिए।

श्याम : हाँ, यह तो बताओ अजीत कि इस कोरसकी सिचुएशन क्या होगी ? सीन कैसे शुरू होगा ?

अजीत : सीन तो वहीं शुरू होता है। नगरकी स्त्रियाँ वसन्तोत्सवके लिए सज रही हैं। चमकते कलश लिये, रास्तोंमें गीत गाती हुई कुमारियाँ किसी झीलके किनारे जा रही हैं। वहीं कोरस आयेगा।

राजेन्द्र : और इसके बाद ही वह वियोगका गीत है।

अजीत : तुम फिर भूल गये। राजेन्द्र, एक सीन तो यह हुआ। दूसरा नगरके एक घरमें ओपिन होता है। जहाँ कोई वियोगिनी परदेशी प्रियकी यादमें गा रही है। वसन्त आ गया है; चारों ओर ख़ुशियाँ छा रही हैं, फूलोंकी सुगन्धसे भरी हवा लहरकी तरह चारों तरफ़ लिपट जाती है। सुहागिनें मिलनका सिंगार कर रही हैं पर एक वियोगिनी है जिसका पति परदेशसे नहीं लौटा।

श्याम : यह आप सिचुएशन समझा रहे हैं, या कविता कर रहे हैं।

अजीत : नहीं भाई, डायलॉग ही ऐसे हैं।

श्याम : तो वह डायलॉग ही शुरू करो न, इण्ट्रोडक्शनकी क्या ज़रूरत है।

अजीत : अब क्या बताऊँ श्याम, असलमें यह पार्ट रेखाको दिया था। उन्हींको यहाँ गाना भी था। लेकिन जब वह नहीं आयीं तो रमाको तो गाना दे दिया है। पर [कानमें] उससे यह डायलॉग कैसे बुलवाऊँगा।

श्याम : [धीरेसे] समझ गया [ज़ोरसे] तो जबतक यह तुम ही बोल दो अजीत ! रेखा तबतक आ ही जायेंगी, है न ?

अजीत : [सोचकर] मैं सोचता हूँ कि सोनको मैं सीधे-सीधे क्यों न बयान कर दूँ। और वहाँ गाना आ जाये [चुटकी बजाकर] यह ठीक है। क्यों राजेन्द्र, क्या कहते हो।

राजेन्द्र : यह भी ठीक है। सन्तोषका दूसरा नाम मजबूरी भी है।

श्याम : जो कुछ करना है जल्दी करो। सीन ओपिन करो पहले गाना तो देखें।

अजीत : लेकिन मैं पहले ठीकसे लिख तो लूँ। राजेन्द्र, ज़रा पेन देना।

राजेन्द्र : अब आप बादमें लिखिएगा। इतना टाइम नहीं, श्याम, पहले गाना सुन लो—आओ रमा····

रमा : जो अच्छा—

श्याम : शुरू करो बहन।

रमा :

[गीत]

आज फूल रही कचनार
श्याम नहीं महलों में
सखी साजें बसन्ती सिंगार
सेन्दुर भरें अलकों में
चाँद के सँग हँसें
बाँत कहते रुकें
बाँह छोड़ें कमें
कामिनी-गन्ध-जैसी
उमर न समाय
रेशम चीर सुनहलों में
आये उड़-उड़ पवन,
करें ठण्डा वदन,
रुखे फीके नयन
बीती जाय बसन्ती बहार
रैन बीते पलकों में

[विराम]

जीत : शाबाश रमा। शाबाश। बिलकुल ठीक [विराम] क्यों राजेन्द्र, है न ? रमा, तुम जाकर अब चाय-वाय पिओ। [दरवाज़ा खटकता है]—लो श्याम, शायद रेखा भी आ ही गयीं।

राजेन्द्र : कारकी आवाज़ तो आयी नहीं ।

अजीत : गानेमें क्या सुनाई देता । [विराम] जरूर वही हैं । [फिर खटपट होती है]

श्याम : जाकर रिसीव तो कर लो अजीत !

अजीत : तुम ही क्यों नहीं चले जाते ?

राजेन्द्र : कोई नहीं जाता । मैं जाता हूँ [प्रस्थान] ।

श्याम : राजेन्द्र, वहीं क्यों रह गये । इधर ही आ जाओ न ?

राजेन्द्र : [दूरसे] आ तो रहा हूँ [क़रीब आकर] लीजिए अजीत साहब, यह हैं आपकी रेखाजी ।

अजीत : [ताज्जुबसे] क्या खत ? इधर लाओ ।

राजेन्द्र : आपकी रेखाजीका नौकर अभी दे गया है । कुल दो ही लाइनें हैं । पढ़ दूँ । अजीत साहब, माफ़ कीजिए मेरे गेस्ट आये हुए हैं मैं पार्टिसिपेट नहीं कर सकती । रेखा ।

अजीत : झूठ । यह नहीं हो सकता ।

राजेन्द्र : खुद देख लो । तुम्हारे हो नाम है । लो [काग़ज़की आवाज़] देखो मैं झूठ तो नहीं कहता ।

अजीत : [साँस भरकर] नहीं भाई तुम नहीं । मैं ही झूठा हूँ ।

श्याम : मैंने तो पहले ही कहा था । वह कभी नहीं आयेंगी । इन लड़कियोंके दिमाग़ आजकल बहुत चढ़ते जा रहे हैं । [विराम] अच्छा अजीत, तो अब तो शायद सुननेको कुछ बाक़ी नहीं रहा [विराम] तो मैं जा सकता हूँ अब—

राजेन्द्र : मैं तो समझता हूँ अजीत, वह सिर्फ़ तुम्हारे साथ डुएट गानेसे घबरा गयीं, लिखते भी तो ऐसे रोमाण्टिक गीत हो । उन्होंने एतराज भी किया था, तब आप माने नहीं ।

अजीत : [अफ़सोसके साथ] हो चुका हमारा उत्सव । जाओ

श्याम अब रिहर्सल नहीं करेंगे [साँस भरकर] रेखाने बहुत बुरा किया ।

श्याम : अब आप इसका अफ़सोस मत मनाइए । इसमें दुःख क्या है ? नहीं आयीं न सही । कोई दूसरा इन्तज़ाम कर लो । क्या रेखाके न आनेसे आपका उत्सव ही खत्म हो जायेगा ?

राजेन्द्र : लगता तो कुछ ऐसा ही है । इनके रंग-ढंग भी यही कहते हैं ।

अजीत : [ग़ुस्सेमें] क्या कहते हैं मेरे रंग-ढंग । तुम लोगोंने ख़ामख्वाह बेवक़ूफ़ बना रखा है । मेरे मनकी हालत तो तुम समझते नहीं ।

श्याम : अच्छा-अच्छा, नाराज़ मत हो भाई, तुम तो इतनी जल्दी निराश हो जाते हो । [फिर हँसकर] यह रास्ता ही ऐसा है कि इसमें जितनी ठोकरें लगें समझो आदमीको उतनी ही कामयाबी हुई [विराम] अजीत, वक अप । कल तुम्हारा उत्सव है । इस तरह मन हारनेसे कैसे काम चलेगा ।

अजीत : अब क्या उत्सव होगा ! अब कुछ नहीं हो सकता ।

श्याम : कैसे नहीं होगा । हम ज़बरदस्ती उत्सव करेंगे, और हाँ तुम, गीतकी जगह कुछ और रखो । [विराम] अच्छा तो मैं तो अब चलता हूँ, बाक़ी कल ।

राजेन्द्र : अजीत, क्या कहते हो । तो आज अब खत्म करें । कल फिर आफ़्टरनूनमें शुरू किया जाये, चलना तो वहाँ रातको है ।

श्याम : हाँ, यह तो मैंने पूछा ही नहीं । कहाँ और किस वक़्त ।

अजीत : [साँस भरकर] अब तो तुम जाओ । वैसे सातका वक़्त

रखा था। वह झीलके किनारे जो पक्का बाँध है न—
वहीं उसी चौबुर्जीपर।

श्याम : अच्छा वहाँ। ठीक है। अजीत, मैं दिनमें तो न आ सकूँगा। हाँ, शाम तक आ जाऊँगा। तुम सब तैयार रहना। गुड लक अजीत—[जाता है]

अजीत : नो लक। खैर [विराम] राजेन्द्र, तुम लोग जा रहे हो। अच्छा जाओ भाई, जाओ।

राजेन्द्र : घबराया मत करो अजीत, तुम जाकर रेखासे मिलो और किसी तरह राज़ी कर लो। सिर्फ़ कल ही के लिए। सारे दोस्त क्या कहेंगे कि बड़े उत्सव करने चले थे। [हँसकर] कामदेवका एक तार भी न चल सका।

अजीत : अब तुम जाओ राजेन्द्र। अब उसकी कोई बात मत करो। ये तो हमारी क़िस्मत है। मैं सोचता हूँ किसी तरह वह कल ही आ जातीं। खैर····अब मैं उनके यहाँ हरगिज़ नहीं जाऊँगा। अजीत झुक नहीं सकता, टूट सकता है।

राजेन्द्र : टूटो-ऊटो मत भाई। हम सबकी हँसी उड़वाओगे क्या? जाओ और उन्हें मना लाओ। वह तुमसे रूठ गयी हैं। तुमसे मान भी जायेंगी।

अजीत : राजेन्द्र, तुम इतने दिनों साथ रहकर भी अजीतको नहीं पहचान सके। चाहे उत्सव हो या न हो मैं उनके पास हाथ फैलाने अब नहीं जाऊँगा। खुद ही आतीं तो आ जातीं—

राजेन्द्र : क्या बातें करते हो? इसमें हाथ फैलाने या भीख माँगने-की क्या बात है? कोशिश करना अपना फ़र्ज़ है। यह तो सोचो, सारे मिलनेवालोंमें इतनी पब्लिसिटी करते फिरे, बड़ी शरमिन्दगी होगी।

अजीत : चाहे जो हो। मैं पत्थर हूँ। जहाँ हूँ वहाँ अटल हूँ।

राजेन्द्र : पागल मत बनो अजीत। आखिर अब वक़्त ही कहाँ है कि किसी औरको पार्ट दिया जाये। जाओ, बड़े अच्छे हो, जाकर मना लाओ। कोशिश तो करो।

अजीत : अब नहीं। क़तई नहीं।

राजेन्द्र : तो फिर क्या करोगे। यह सारा तितम्बा खत्म।

अजीत : खत्म करना चाहो खत्म कर दो।

राजेन्द्र : हम क्यों चाहेंगे। लेकिन होगा क्या?

अजीत : [साँस लेकर] मैं उतना सीन ही काट दूँगा जिसमें मैं और रेखा आते थे।

राजेन्द्र : नहीं, नहीं, वही तो रूपककी सारी जान हैं।

अजीत : जब वह जीते-जागते मेरी चीज़में शरीक नहीं हुई तो रूपकमें ही क्या जरूरत है?

राजेन्द्र : देखो, बेकार भावुक मत बनो अजीत।

अजीत : मैं कह चुका। वह हिस्सा अब कट गया। अब बहससे कोई फ़ायदा नहीं। तुम अब जाओ।

राजेन्द्र : अच्छा भाई, तुम जानो। [विराम] तो कल सब तैयार रखना और रमा बहनसे दिनमें एकआध बार प्रैक्टिस ज़रूर करा लेना।

अजीत : कोशिश करूँगा।

[दृश्य परिवर्तन]

[दूरपर कुछ बरतनोंकी आवाज़]

माँ : [बड़बड़ाती हुई दूर ही] सुबहसे गाना लेकर बैठा तो आधा दिन निकल गया। न खाना न पीना। अब कुछ कहो तो बोलता ही नहीं। रमाको भी बिगाड़ दिया। इतना कहा कि आज पूनो है····

[दूरसे दरवाज़ेपर खटखट होती है]

माँ : फिर आ गये सब। तंग कर दिया। कौन है ?

[फिर खटखट होती है]

माँ : अजीत, अजीत। रमा।

राजेन्द्र : [दूरसे खटखट करते हुए] अजीत, खोलो भाई, हम हैं, राजेन्द्र और श्याम।

माँ : रमा ओ रमा।

रमा : क्या है माँ ?

माँ : बेटी ज़रा देख तो सही अजीतको। वही सब आये होंगे।

रमा : वह तो न उठते हैं, न बोलते हैं।

माँ : तो तू ही देख ले [विराम] अच्छी प्रैक्टिस हुई।

[आख़िरी शब्द दूरपर खो जाते हैं]

राजेन्द्र : अरे रमा बहन [विराम] अजीत कहाँ हैं ?

रमा : अपने कमरेमें।

राजेन्द्र : क्यों, क्या बात है ? तुम भी तैयार नहीं हुईं। और रिहर्सल, क्या अबतक सब नहीं आये ?

रमा : आये थे। अजीत भैयाने उन्हें वापस कर दिया।

राजेन्द्र : सुना श्याम ! क्यों, वापस क्यों कर दिया ?

रमा : भैयाने सबसे कह दिया कि अब उत्सव नहीं होगा।

राजेन्द्र : लो श्याम अब। मैं कहता हूँ कि''''कहाँ हैं अजीत ?

श्याम : और मेरा इतना इन्तज़ाम, सारा सामान, उसका क्या होगा ? हैं कहाँ सरकार ?

रमा : कमरेमें सो रहे हैं। न किसीसे बोलते हैं, न उठते हैं, माँ मना-मनाकर थक गयीं।

श्याम : क्या, बात क्या हुई ? क्या रेखाजीका सब्सटिट्यूट नहीं मिल सका।

रमा : नहीं, वह हिस्सा तो भैयाने कल ही काट दिया था।

राजेन्द्र : हाँ, वह तो कल मुझसे ही बात हुई थी। लेकिन साराका सारा प्रोग्राम ही खत्म कर दिया! अजीब बात है? आखिर ऐसा क्या हो गया?

रमा : कुछ नहीं, माँने मुझे वहाँ जानेसे मना कर दिया।

श्याम : ओ यह बात है। हूँ।

राजेन्द्र : तब तो बहुत बुरा हुआ। अजीतको वाक़ई धक्का लगा होगा। कल रेखाके इनकार कर देनेसे ही कितना परेशान था। अब तो सब चीज़ ही खत्म हो गयी। उधर हमें भी बहुत होगी। अच्छा, अजीतके पास तो चलो।

श्याम : हाँ, तो माँने क्या कहा, रमा बहन?

रमा : भैयाने माँसे बहुत बहस की पर माँने नहीं माना, कहने लगीं कि मैं पार्टी-वार्टी नहीं करने दूँगी। हाँ पिकनिकपर जाना चाहे तो चली जाये।

श्याम : बुरा हुआ। खैर····अब अजीतको मनाना मुश्किल होगा। [विराम] अच्छा रमा बहन, तुम जाओ। हम कोशिश करते हैं। [विराम] अजीत, अजीत। [फिर लम्बा विराम]

श्याम : जनाब! क्या सोते ही रहोगे।

राजेन्द्र : उठो अजीत। हम तुम्हें हरगिज़ नहीं सोने देंगे। चाहे तुम कितना ही बनो। [विराम] चलो उठो।

अजीत : [अनमने स्वरमें] डोण्ट डिस्टर्ब। यह क्या करते हो राजेन्द्र, मैं नहीं उठूँगा।

राजेन्द्र : उठोगे कैसे नहीं? हम ज़बरदस्ती करेंगे।

अजीत : नहीं उठूँगा। मुझसे मत बोलो? श्याम, यहाँसे तुम चले जाओ।

श्याम : चले कैसे जायें! पहले मेरी वह सारी चीज़ोंकी क़ीमत तो

दिलाओ कि ऐसे ही चले जायें ।

अजीत : [भरे हुए उठकर] हाँ, हाँ, तुम लो अपनी क़ीमत, बोलो कितना खर्च हुआ ।

श्याम : चलिए अब खर्च-वर्च रहने दीजिए । यह तो तुम्हें उठाने-का एक बहाना था । वर्ना तुम उठते नहीं । तुम्हारे लिए रुपया-पैसा क्या, जान हाज़िर है ।

अजीत : नो जोक्स मैं बहुत ख़राब मूडमें हूँ ।

श्याम : मूड बो ब्लोड ! आपके मूडको तो हम ख़ूब जानते हैं । अच्छा सीधी तरह बिस्तरसे उठिए । कपड़े पहनिए और चलिए साथ ।

अजीत : मैं कहीं नहीं जाऊँगा । उठ पड़ा हूँ । कहो क्या कहते हो ?

राजेन्द्र : भई, कहना क्या है ? पिकनिकपर चलना है ।

श्याम : तुम ठहर जाओ राजेन्द्र । मैं इन्हें ठीक करता हूँ । जनाब आपको हमारे साथ वहीं चलना है झोलपर [विराम] हमें सब मालूम हो चुका है ।

अजीत : तो अब क्या होगा वहाँ जानेसे । मैं हरगिज़ यहाँसे नहीं हिलूँगा ।

श्याम : आपको चलना पड़ेगा । चाहे आप कुछ कहें ।

अजीत : [विराम] इन सब बातोंसे कोई फ़ायदा नहीं श्याम, अगर तुम्हें जाना है तो जाओ, मुझे छोड़ दो ।

राजेन्द्र : वाह यह कैसे हो सकता है ।

श्याम : अरे देखते जाओ । अजीत डोंट बी सिली । रेखा नहीं आयीं तो क्या हमारा पिकनिक भी न हो ।

अजीत : देखो श्याम, तुम यह नाम मेरे सामने बिलकुल मत लो ।

श्याम : अजी जनाब ऐसा भी क्या ? मैं ख़ूब समझता हूँ । रेखा नहीं आयीं तो उत्सव नहीं हो सकता । पिकनिक नहीं हो

सकता। आप घरमें किसीसे बोल नहीं सकते ? हमारे साथ चल नहीं सकते ?

अजीत : क्यों और गुस्सा दिलाते हो।

श्याम : मैं तो सच कहता हूँ। हमसे तुम क्यों मनने लगे। हमारे साथ क्यों चलोगे। अभी रेखा आतीं तो फ़ौरन तैयार हो जाते। कहो है न ? क्यों राजेन्द्र, कहाँ रेखा कहाँ हम ?

राजेन्द्र : अब मैं क्या कहूँ ?

श्याम : नहीं, नहीं, कह दो मैं ग़लत कहता हूँ।

अजीत : ख़ैर श्याम। वैसे तो तुम क्या, इस वक़्त कोई आता पर मैं न चलता। लेकिन तुमने एक बहुत बड़ी बात कह दी। अब तुम नहीं भी कहो तो भी मैं चलूँगा।

श्याम : दैट्स लाइक ए गुड ब्वाय। मैं जानता था, अच्छा तो उठो।

अजीत : लेकिन झोलकी चौबुर्जीपर नहीं जाऊँगा।

श्याम : क्यों, क्या वहाँ रेखाकी याद आ जायेगी। तुम्हें हम वहीं ले चलेंगे।

अजीत : [सोचकर] हूँ [विराम] अच्छा बाबा। जैसी तुम्हारी मरज़ी।

श्याम : आखिर ऐसा भी क्या ग़म। आज वसन्त-पूर्णिमा है और आप हैं कि किसीसे बोलते नहीं। हम तुम्हें वहीं ले चलेंगे और तुमसे वही डूयेट भी गवायेंगे।

अजीत : वह डूयेट मैं नहीं गा सकता। और गाऊँगा भी तो किसके साथ।

श्याम : कोई परवा नहीं। तुम अकेले ही गाना। अब तुम चलो [विराम] बस यही ठीक है।

अजीत : अच्छा भाई अच्छा। तुम्हारी क़ैदमें हूँ। जिधर चाहो ले चलो।

श्याम : आओ राजेन्द्र।

[कार स्टार्ट, विराम कार स्टाप]

[झीलका एफ़ेक्ट]

राजेन्द्र : लीजिए आ गये। बस यहीं रोक दो। वह चौबुर्जी है। बाँधपर चलो अजीत।

अजीत : भाई, मेरा मन बिलकुल नहीं हो रहा।

श्याम : [चलते हुए] अब बेवक़ूफ़ी मत कीजिए [विराम]

राजेन्द्र : [एकदम रुककर] सुनो श्याम। यह जगह तो पहलेसे ही ऑक्यूपाइड दिखती है।

श्याम : क्या।

राजेन्द्र : देखो न। कुछ लोग वहाँ जमे हैं।

अजीत : मैं कहता था न, और यहाँ आओ। तुमने मेरा दिल अब बिलकुल ही तोड़ दिया।

श्याम : मैं ऊँह, चलकर देखने तो दो [विराम]

[प्रकाश आता है]

प्रकाश : [पास आकर] जी किसकी तलाशमें हैं आप ?

श्याम : कुछ नहीं, समझमें नहीं आता। हम लोग ज़रा पिकनिक-को आये थे....

प्रकाश : तो शौक़से कीजिए। रोकता कौन है ?

श्याम : आप।

प्रकाश : जी, ख़ूब रही। मैं क्यों रोकने लगा ?

श्याम : आपने वही जगह ऑक्यूपाइ कर ली है जो हमने चुनी थी।

प्रकाश : जगहपर किसीका नाम तो था नहीं जनाब। ग़लती हुई

माफ़ कीजिए। पर, आइ एम सॉरी, हम वहाँसे हट नहीं सकते।

अजीत : छोड़ो भी श्याम इस बहसको। चलो घर वापस चलें। मैंने पहले ही कहा था मैं नहीं जाऊँगा। लेकिन तुमने नहीं माना। और आये भी तो उसी जगह।

श्याम : तो अब यह तो मालूम नहीं था। खैर, वापस जानेका तो कोई सवाल नहीं।

अजीत : तुम नहीं जाते तो मैं जाता हूँ। [ज़रा दूरसे] आते हो तो आओ। यह सारी बात मेरे ऊपर अँधेरेकी तरह छायी चली जा रही है।

प्रकाश : आपके ये दोस्त कुछ पोएट मालूम पड़ते हैं।

श्याम : जी ऐसा ही समझ लीजिए। अच्छा माफ़ कीजिए। हमने आपको डिस्टर्ब किया।

प्रकाश : तो क्या आप लोग इस जगहकी खातिर पिकनिक ही छोड़े जा रहे हैं।

श्याम : हाँ, अब यही होगा। आप जगह छोड़ नहीं सकते। हम दूसरी जगह जा नहीं सकते, लेकिन····

प्रकाश : लेकिन क्या ?

श्याम : लेकिन यह कि वहाँ तो काफ़ी जगह है। आप लोग एक तरफ़ रह सकते हैं।

प्रकाश : ज्यादती होगी। न आप एनजॉय कर सकेंगे न हम।

श्याम : आप हमारे एनजॉयमेण्टकी परवा न करें। जगह वहाँ काफ़ी है।

प्रकाश : आप ज़िद पकड़े हैं तो आइए देख लीजिए, कहाँ जगह है ?

श्याम : [पुकारकर] अजीत यहाँ आओ भाई। खामख्वाह भागे जा रहे हो। चले आओ। जगह वहाँ काफ़ी है।

अजीत : [पास आकर] क्यों वहाँ तो आप लोग हैं [विराम]।

श्याम : तो क्या हुआ जगह तो काफ़ी है।

चन्द्रा : [दूरसे] कौन है ?

प्रकाश : घबराओ मत कोई मेहमान नहीं। यह लोग पिकनिकपर आये थे। यही जगह चुनी थी, देख रहे हैं कुछ इनके लिए भी जगह हो सकती है क्या ?

चन्द्रा : ओ यह बात है। हाँ तो रेखा····

श्याम : अरे।

अजीत : अरे, रेखाजी, आप यहाँ ?

रेखा : कौन अजीत बाबू ?

अजीत : हाँ, मैं ही हूँ। माफ़ कीजिएगा। भई श्याम, मैं तो जाता हूँ।

श्याम : ठहरो जी।

प्रकाश : क्या, रेखाजी, तुम इन्हें जानती हो [हँसकर] तब तो वाक़ई मेहमान निकले।

रेखा : [झेंपकर] आप भी जीजाजी बस।

प्रकाश : क्यों इसमें क्या है ? तुम जानती हो तो हम भी जानते हैं।

श्याम : वाह, यह खूब बात हुई। अजीत, तुम्हारा रूपक तो पूरा हो गया।

अजीत : क्या बकते हो।

प्रकाश : तो अब बैठ हो जाइए। जान-पहचान तो निकल ही आयी है। हाँ, तो क्या कह रहे थे आप ?

श्याम : कुछ नहीं। यों ही। यह अजीत हमारे ज़रा आर्टिस्ट हैं। इन्होंने एक रूपक लिखा था।

प्रकाश : हाँ जनाब तो क्या रूपक था आपका····अजीत साहब। रेखा, तुम जानती हो तो कमसे कम इण्ट्रोड्यूस तो करा

दो। तुम भी तो लेखक हो न ? हाँ साहब, तो आपका रूपक कहीं खेला जानेवाला है।

श्याम : यों कहिए खेला जानेवाला था। आखिरी मोमेण्टपर सेबॉटाज हो गया।

रेखा : जी वह…

श्याम : हाँ-हाँ वही।

अजीत : तुम नहीं मानोगे श्याम।

प्रकाश : यह सब क्या माजरा है। मालूम होता है रेखाजी, आप भी इस बारेमें कुछ जानती हैं।

रेखा : [धीरेसे] नहीं तो….

श्याम : अब बता क्यों नहीं देते अजीत ?

अजीत : क्या करते हो श्याम, चुप नहीं रहोगे ?

प्रकाश : नहीं, यह गोलमाल साफ़ करना पड़ेगा आपको साहब।

श्याम : अरे साहब बात कुछ नहीं, रूपक होना था, एक उत्सव मनाना था, पिकनिकपर आना था। गाने और डुयेट होने थे।

अजीत : श्याम।

प्रकाश : तो हुए नहीं।

श्याम : नहीं हो सके। क्यों रेखाजी ?

रेखा : क्या मुझसे कुछ कहा आपने।

प्रकाश : यानी क्या मतलब ?

श्याम : जनाब मतलब कुछ नहीं ? आखिरी सीनका खात्मा हुआ, जिससे सारा उत्सव खत्म हो गया और उसी वजहसे यह पिकनिक भी।

अजीत : श्याम, तुम चाहते हो मैं चला ही जाऊँ।

प्रकाश : क्यों, क्यों जाते किसलिए हैं। हाँ तो कैसे खत्म हुआ ?

रेखा : क्या बात ले बैठे आप भी।

प्रकाश : [हँसकर] मालूम होता है कि उसकी जड़ आप ही थीं। क्यों साहब, वह रेखा ही थीं न ?

श्याम : [हँसकर] हाँ, यही थीं।

प्रकाश : तो यों कहिए कि मैंने ठीक जाँचा। यह आयी न होंगी आपके रूपकमें। क्यों मिस्टर अजीत। आप बहुत नाराज भी होंगे। [विराम] रेखा, तुम जान-बूझकर क्यों नहीं गयीं ? इनका रूपक अधूरा रह गया।

रेखा : मैं नहीं गयी। [हँस पड़ती है]

श्याम : लेकिन आपको यह सब कैसे मालूम ?

प्रकाश : [हँसते हुए] चन्द्रा कह दूँ क्यों ? [चन्द्रा भी हँसती है] रेखाको ग़लत समझनेकी कोई बात नहीं, आपको अजीत साहब, ख़ैर रेखा नहीं वह मैं हूँ, उत्सव ख़त्म करनेवाला।

अजीत : [ताज्जुबसे] आप !

श्याम : [हँसकर] यानी आप, आप कैसे ?

प्रकाश : जी हाँ मैं, कह दूँ रेखा।

रेखा : आप यहाँ भी न मानेंगे जीजाजी।

श्याम : जी, कहिए।

प्रकाश : अरे यों ही मजाक़ था। बात यों हुई कि हम लोग आज ही तो आये और आज ही रेखा आपके उत्सवमें आनेकी ज़िद करने लगीं। जब बहुत रोकनेपर भी यह न मानी तो हमने कहा, एक शर्तपर पार्ट करने जाओ तो चली जाओ [हँसता है]

चन्द्रा : अब रहने भी दो न ?

श्याम : [हँसकर] जी हाँ, क्या शर्त थी वह।

प्रकाश : शर्त यह थी कि रेखा अगर हीरोइनका पार्ट करें तो मैं

उनकी सखी बनूँ। इनको यह शर्त मंज़ूर नहीं हुई और न आपका उत्सव हो सका।

अजीत : यानी आप और सखी।

प्रकाश : क्यों जनाब, आपके रूपकमें क्या मेरी शक्ल इनकी सखी होने लायक़ भी नहीं।

श्याम : ज़रूर थी ज़रूर थी। अजीत, पहले नहीं मालूम था वर्ना तुम्हारा रूपक आज हो ही जाता।

रेखा : होता कैसे रूपकका आखिरी हिस्सा तो यहाँ पूरा होना था।

श्याम : हाँ पूरा तो हो गया। सिर्फ़ रेखाजी, वह एक डुएट अलबत्ता रह गया।

[सब हँस पड़ते हैं]

■

कमल और रोटी

(ऐतिहासिक)

•

[स्थान—कंकरीली पठार और चट्टानी पहाड़ियोंसे घिरा झाँसी केण्टोनमेण्ट, शुरू जून १८५७ की एक शाम। भारी बूटोंकी आवाज़ें, दूरपर फ़ौजी बैण्डपर सन्ध्याकी धुन, सातकी गजर बजती है।]

इन्दरसिंह बुन्देला : ये तो सात बज गये—सात हैं कि छह। नहीं सात ही होंगे। पठारपर सूरजकी ललोंई ही तो रह गयी है, ओफ़्फ़ो, आजका दिन कैसा आग-भभूकाकी तरह तपा है जैसे धरतीको लोट-पलट देगा। अब जाके कुछ तरी पड़ी है। सात बज गये और पालटी अबतक नहीं निकली। आज सूबेदार-भैया कहाँ रह गये।

[भारी बूटोंके साथ चलनेकी आवाज़]

सूबेदार साहब, ए सूबेदार भैया, [विराम] लो वे तो वहाँ नीमतलेके चौतरेपर बैठे अमानखाँसे मिसकोट कर रहे हैं।

[पास पहुँचकर]

अजी सूबेदार साहब, [विराम] सुन ही नहीं रहे। चलूँ पास जाकर सैल्यूट मारूँ। रैट एबाऊटन, सैलूट।

लालबहादुर : [संजीदा ढंगसे] क्या हर बखत मसखरी करते रहते हो इन्दरसिंह ?

इन्दरसिंह : मैंने कहा कि सूबेदार साब सुनते नहीं तो सैलूट ही बोलूँ। सात बज गये और अबतक अपनी पालटी बाज़ार घूमने नहीं निकली। कण्टूमेण्टकी दूकानें बेरौनक़ हो रही होंगी [इतराकर] इतनी देर तक यह किसको पत्री पढ़ी जा रही

है। क्या कालपीसे भौजीकी आयी है। सूबेदार साब [हँसता है]

लालबहादुर : देखो भाई, हर बखत सूबेदार मत कहा करो, छह बजेके बाद सब बराबर। हम लालबहादुर, तुम इन्दरसिंह, हमारे बचपनके साथी, और यह अमानख़ाँ भैया। एक बस्तीमें जन्मे, एक साथ धूलमें खेलकर बड़े हुए, मारा-पीटा, पढ़ा-लिखा, क्या फ़रक़ हुआ जो हम सूबेदार हैं और तुम सन्तरी। राजपाट तो मिल नहीं गया, पेट पालनेके लिए नौकरी दोनों ही करते हैं।

अमानख़ाँ : सो भी ग़ैरकी, दीन बिगाड़नेवाले फिरंगीकी।

लालबहादुर : [साँस भरकर] क्या करें, रहते यहाँ हैं और हुकुम बजाते हैं सात समुन्दर पारका। भाग्यमें यही बदा है।

अमानख़ाँ : हम काला आदमी जो ठहरे।

इन्दरसिंह : हमसे किसी फिरंगीने काला आदमी अगर अबके कहा तो गोली मार देंगे। ये पक्का है।

लालबहादुर : [शान्त आवाज़से] नहीं, अभी ऐसा मत करना, अभी बखत नहीं आया है।

अमानख़ाँ : जल्दी ही आयेगा। ऐसा दीखता है।

इन्दरसिंह : कैसे, कुछ बताओ तो सही। हम उस दिनके लिए तड़प रहे हैं।

लालबहादुर : ज़रा शान्ती रखो इन्दर। जल्दबाज़ीसे काम बिगड़ जाता है। समझे। लो, यह फ़रमान पढ़ो। दिल्लीसे निकला है। आज आगरेसे डाक लेकर जो सईस आया है वह कपड़ोंमें छिपाकर इस फ़रमानको ले आया है। [चारों तरफ़ देखकर] धीरे-धीरे पढ़ो। बारकमें चारों तरफ़ कान-ही-कान हैं।

इन्दरसिंह : देखें [काग़ज़की आवाज़] दिल्लीसे आया है। ओ हो, तुम्हारे पास कैसे पहुँचा ?

लालबहादुर : अमानख़ाँ भैयासे पूछो।

अमानख़ाँ : देखो, किसीसे कहना मत। डाकका सईस स्कीन साहबके खानसामे शाहबुद्दीनका नातेदार है। उसने दिया है। वह कहता था कि यह बादशाह सलामतका फ़रमान है, जो पलटनमें सबको बारी-बारीसे सुनाया जाये।

इन्दरसिंह : तुम सुना दो भैया। मैं चारों तरफ़ नज़र रखता हूँ।

लालबहादुर : ध्यानसे सुनना। यह भौजीका खत नहीं है। [हँसता है] पढ़ो अमानख़ाँ इस बखत दूर तक कोई नहीं है। साहब लोग रातके नाचकी तैयारीमें लगे होंगे।

अमानख़ाँ : बादशाह सलामत अजीमुश्शान बहादुरशाह जफ़रका फ़रमान है जो ग़दर कोर्ट दिल्ली सल्तनतकी मुहरसे आया है। हुकुम फ़रमाया है कि हर खासो आम, हिन्दू ओ मुसलमान, अँगरेज़ी छावनियोंके फ़ौजी और दोगर नौकर पेशा लोगोंको वाज़े हो कि सारे फिरंगी इत्तफ़ाक़ रायसे दो चीज़ोंपर आमादा हैं। यकुम कि फ़ौजियोंको दीन ओ धरमसे महरूम किया जाये। दोयम कि ज़बरदस्ती सारी रियायाको क्रिस्तान बना लिया जाये। इसी मन्शासे अँगरेज़ गवर्नर जनरलने हुकुम दिया है कि फ़ौजमें गाय और सुअरकी चर्बीसे बने कारतूस इस्तेमालमें लाये जायें। अगर इसकी मुखालफ़त दस हज़ार फ़ौजी भी करें तो उन्हें तोपदम किया जाये, अगर पचास हज़ार हों तो उन्हें बरखास्त कर दिया जाये।

इन चीज़ोंको ज़ेरे नज़र रखते हुए हमने सल्तनतकी बागडोर हाथमें ले ली है ताकि रियायाका दीन ओ धरम

सलामत रहे। और हम हुकुम देते हैं कि जो भी फ़ौजी पल्टनें फिरंगियोंको नेस्तोनाबूद करेंगी और दिल्ली सल्तनतकी फ़रमाबरदार रहेंगी वे दुगुनी तनख्वाहकी हक़दार होंगी। लातादाद तोपें और खज़ाना हमारी दस्तरसमें आ गया है। हमारी रियायाको चाहिए कि वह फ़ौजियोंका साथ दे, आपसमें इत्तिहाद रखे और जवाँमर्दी दिखाये। फ़ौजियोंको रसद और सामान देनेमें रियायाके जो भी अखराजात होंगे उनके एवज़में दस्तावेज़ो सबूत पेश करनेपर दुगुनी क़ीमत दी जायेगी। हर वो शख्स जो खुशइन्तज़ामो क़ायम रखनेमें मददगार साबित होगा ऊँचे ओहदेका हक़दार समझा जायेगा।

हर खासो आम हिन्दू ओ मुसलमानकी वाक़फ़ियतके लिए यह फ़रमान जगह-जगह शाया किया जाये और मखसूस जगहोंपर लगाया जाये। फिरंगी अपने जान-मालकी खैरके लिए इस वक़्त नर्मी दिखा सकता है। पर लोग एतमाद न करें और धोखेमें न आयें। हमारा दौरे इक्तेदार क़ायम है। तीस रुपये घुड़सवार और दस रुपये पैदल, दिल्लीके नये मुलाज़मोनकी तनख्वाह होगी।

इन्दरसिंह : [साँस भरकर] इसका मतलब तो यह हुआ कि फिरंगोका तख्त उलट गया। क्यों भैया लालबहादुर।

लालबहादुर : हाँ, लगता तो ऐसा ही है। मेरठ और दिल्लीमें ग़दर हो गया है। दिल्लीकी सल्तनतसे विदेशी छाया हट गयी है। खबरें तो पिछले महीनेसे ही आ रही हैं। पर और जगह छावनियोंमें क्या हो रहा है पता नहीं।

इन्दरसिंह : यह फ़रमान क्या खुद बादशाहके हाथका लिखा हुआ है।

लालबहादुर : [हँसकर] क्या पता, बादशाह अपने हाथसे खुद थोड़े ही

लिखते हैं। वह बादशाह ठहरे। उनके हुकुमसे ही निकला होगा। पर बादशाहकी खास मोहर इसपर नहीं है।

अमानख़ाँ : तो क्या हुआ। दिल्लीके ग़दर कोर्टकी मुहर तो है। ग़दर कोर्ट बादशाहने मुल्कका इन्तज़ाम करनेके लिए मुकर्रर किया है। किसीको तरफ़से सही पर हमें कुछ करना है या नहीं यह बात तै करना ज़रूरी है। अपना दीन धरम खतरेमें हो, फ़ौजी उसे बचानेके लिए और फिरंगीको मुल्कसे बाहर निकालनेमें मर-खप रहे हों तब हमारा भी तो कुछ फ़र्ज़ है। हाथपर हाथ धरे बैठे रहें ?

इन्दरसिंह : हाथपर हाथ रखे वह जिसने चूड़ियाँ पहन रखी हों। तुम लोग हुकुम दो तो अभी जाकर दस फिरंगियोंको तो मैं ही किनारे लगा दूँ।

लालबहादुर : कुँवरजी, तुम्हारी बहादुरीपर शुबहा किसको है। पर हमारे पास कोई खबर कहींसे नहीं आयी कि हमें यहाँ जौहर दिखाकर आगे क्या करना होगा। हम डकैत तो हैं नहीं कि मार डालें और लूटपाट कर बैठ जायें। फिर आगे क्या होगा। यह भी तो सोचना पड़ेगा। दो-चार जगहसे और खबर आ जाती। सुना है कि नाना साहब भी विठूरमें तैयार हो गये हैं। उनके साथ मुन्शी अजीमुल्ला और तात्याटोपे हैं, अपनी झांसीवाली बाई साहबका राज भी फिरंगियोंने दबा रखा है। वह नाखुश तो ज़रूर हैं। पर रास्ता नहीं सूझता कि हमें क्या करना चाहिए।

अमानख़ाँ : अरे हाँ, मैं तो भूल ही गया। मेरे एक रिश्तेदार मेरठकी पल्टनमें रिसालदार हैं, उनकी दस्ती चिट्ठी भी दिल्लीसे आयी है। मेरठकी फ़ौज वहाँपर फिरंगियोंको खत्म करके दिल्लीकी फ़ौजसे जा मिली है और उसने बादशाहको

सलामी पेश की है। [काग़ज़ निकालते हुए] यह पुरजा पढ़ो। हम लोगोंने अबतक कुछ नहीं किया इसके लिए हमें नाम धरा है।

लालबहादुर : पहले क्यों नहीं बताया। सुनाओ जल्दीसे।

अमानख़ाँ : लिखा है; बाद ख़ैराफ़ियतके बाज़े हो कि मेरठ, दिल्ली, लखनऊ और बंगालकी फ़ौजोंने ग़दरका डंका बजा दिया है। झाँसी रेजीमेण्ट अबतक चूड़ियाँ पहने चुप क्यों बैठी है, क्या उसने अपना दीन धरम सब छोड़ दिया है। बस इतनी ही इबारत लिखी है।

इन्दरसिंह : राम राम, बुन्देलखण्डकी तो नाक कट गयी। दुनियामें खबर हो गयी कि झाँसीवाले कायर हैं। और हम अबतक घूँघट काढ़े बैठे हैं।

लालबहादुर : [मूँछोंपर हाथ फेरकर] बुन्देलखण्डकी मूँछ नीची नहीं होगी, इन्दरसिह हम वह करेंगे जो कोई न कर पायेगा। तमाशा देखना, अब देर नहीं होगी।

अमानख़ाँ : [चुटकी बजाकर] यही ठीक है। मेरा खयाल है हम जेल दरोगा बख्शीशअलीसे सलाह करें तो अच्छा रहे। वह बहुत पढ़े-लिखे हैं, अँगरेज़ोंकी नस-नससे वाक़िफ़ हैं, दुनियाकी खबर रखते हैं।

इन्दरसिंह : अमानखाँ भैया ठीक कहते हैं, अभी चलो।

लालबहादुर : पहले पता लगाओ कि बख्शीशअली इस वक़्त हैं कहाँ! उनसे वक़्त और जगह फ़ौरन तै कर लो तो आगेका नक़्शा बने। असल बात तो खबरोंकी है। एक जगहसे दूसरी जगहकी खबर लग नहीं पाती। लगती है तो देरसे। खास तौरसे हरकारोंको भेजो, तब। अँगरेज़ोंने अपने मतलबके लिए तार खींच रखे हैं। जब चाहें कोसों दूरकी

खबर बिजलीके मन्तर-से मालूम कर लें। चार घोड़ोंकी बग्घियोंसे डाक भी आती है तो उन्हींकी, दूसरे लोग डाक भेजना चाहें तो बीचमें ही पकड़ ली जाये।

इन्दरसिंह : डाक बग्घी कच्ची सड़कोंपर भी कैसी हवाकी तरह चलती है। हर पाँच कोसपर घोड़े बदल देते हैं।

अमानख़ाँ : भाई, जिसके हाथमें ताक़त है वह सब कुछ कर सकता है। हमारे-तुम्हारे हाथमें तार हो तो हम सब भी इस्तेमाल करें। डाक-तार, और सड़कोंका जाल तो उन्होंने हमारे ऊपर क़ब्ज़ा करनेको फैलाया है। यह जादूगरी है उनकी। कप्तान गोर्डनका हुकुम-बरदार शेख हींगन है न, वह कह रहा था कि बंगालेमें अँगरेज़ने एक नया जादू-तमाशा चलाया है, लोहेकी धुआँ गाड़ी, जो दो अंगुलकी चिकनी पटरियोंपर दौड़ती है। डाक बग्घोसे चौगुनी तेज़।

इन्दरसिंह : जाने क्या-क्या मन्तर मार रहे हैं ये फिरंगी। इन्होंने ज़रूर कोई परेत सिद्ध कर रखा है। ऐसो नयी-नयी अचरजमें डालनेवाली चीज़ें चला रहे हैं। सब परेत विद्या है।

लालबहादुर : परेत विद्या हो चाहे देव विद्या, राज तो तुम्हारे ऊपर कर रहे हैं। और दिन-दिन क़ब्ज़ा जमाते जा रहे हैं। आज यह राज हड़पा, कल उसे दबाया। बड़े-छोटेका कोई खयाल नहीं। हरेककी दुर्गत और बेइज़्ज़ती। हिन्दुस्तानी-को, चाहे वह फ़ौजमें हो या और कहीं, बड़े ओहदेपर पहुँचने ही नहीं देते। और जो कभी हम-जैसे छोटे-मोटे ओहदेपर पहुँच भी जायें तो सलामी-गुलामी तो वही बजानी पड़ती है। उस दिनका बाज़ारका क़िस्सा याद है। हरिजू साह और उनके जेठ कुँवर उत्तमचन्द बग्घीमें जा रहे थे उधरसे लफटेण्ट टम्बुल घोड़ेपर निकला। हरिजूसाह-

को बग्घी रोकते-रोकते उतरनेमें देर हो गयी। तब कैसी बेइज़्ज़ती की थी उस टम्बुलने। बग्घी एकदम जप्त कर ली और कण्टूमेण्ट ले गया। हरिजूसाह इतने बड़े साहूकार हैं, ज़मीन, जायदाद, गाँव है, पर छोटेसे लफ्टण्ट साहबके सामने कुछ नहीं। कोई भी हो। उसे फिरंगीका सामना पड़ते ही घोड़ेसे उतरकर, चौतरेसे नीचे खड़े होकर सलामी बजानी पड़ती है। न धरम रहा न बड़प्पन, न चरित्तर रहा न इज़्ज़त-आबरू। फिरंगीकी ग़ुलामीमें सब स्वाहा हो गया।

अमानख़ाँ : [व्यंग्यसे] पर हरिजूसाहका क्या बिगड़ा। एक बग्घी गयी तो चार और कमा ली होंगी। अँगरेज़ोंको रसद पहुँचानेका ठेका भी तो उन्हींका है, मुनाफ़ा भी तो उन्हींसे कमाते हैं। उस दिन उनके चेहरेपर ज़रा भी शिकन नहीं आयी। टम्बुलके चले जानेपर हँसते हुए पैदल ही हलवाईपुरे चल दिये—हाँ, उत्तमचन्दका मुँह ज़रूर बिगड़ गया था।

इन्दरसिंह : उत्तमचन्दकी जगह हम होते तो ख़ून हो जाता।

लालबहादुर : हरिजूसाहने टाल दिया होगा कि कौन इन ललमुँहोंके मुँह लगे। बुरा तो मनमें उन्हें ज़रूर लगा होगा। पर उनका ठेका कहाँ है कमसरियटका ?

अमानख़ाँ : उनका नहीं तो उनके भाई चन्दनसाहका तो है। मुनाफ़ा तो घरमें ही आता है। बुन्देलखण्डके आधे गाँव उनके क़र्ज़दार हैं। उन्हें क्यों फ़िकर होने लगी। चारों तरफ़ सोना बरसता है। घीके दिये जलते हैं। सुना है ग़दरके डरसे पचास लाख सोनेको मोहरें उन्होंने चित्रकूटके पेशवों-के खज़ानेमें अमानत रख दी हैं। चित्रकूटके पेशवोंका अँग-

रेज़ोंसे बिगाड़ नहीं है। आखिर साह लोग ठहरे, दूरको सोचते हैं। अँगरेज़ोंके महाजन क्या यों ही हुए हैं।

इन्दरसिंह : बिलकुल खरी बात कही तुमने अमान भैया। गाँवके आधे-से ज्यादा किसान हरिजूसाहके देनदार हैं और पीढ़ी दर पीढ़ी ब्याज भी नहीं चुका पाते। लगानकी वसूली भी फिरंगीकी तरफ़से वही करवाते हैं।

लालबहादुर : बड़ी दुर्दशा है रैयतकी। पहले डाकू-बदमाशोंसे पार नहीं पड़ती थी, अब दुतरफ़ा बटमार हैं। खैर उन्हें तो ठीक कर लेंगे, पहले ललमुँहोंका फ़ैसला हो जाये। जब दिल्लीसे फ़रमान आया है और मरने-मारनेकी पाती भी आयी है तो अब पीछे हटना मुँहपर कालिख पोतनेके बराबर है।

अमानख़ाँ : मैं अभी जाकर दरोगा साहबका पता लगाता हूँ जिससे आगेका रास्ता मिले।

लालबहादुर : हाँ मगर जल्दी लौटना, तबतक हम और इन्दरसिंह बाज़ारमें जाकर कुछ नयी खबरें इकट्ठी करें। चलो इन्दरसिंह।

[विराम। फिर बाज़ारकी आवाज़ें, शोर-ग़ुल, दूरसे गानेकी आवाज़ आती है]

इन्दरसिंह : आज बड़ी चहल-पहल है बाज़ारमें। हर दूकानपर अपनी पल्टनवाले खड़े हैं। हवा कुछ गरम है। सबके चेहरे कैसे तमतमा रहे हैं।

लालबहादुर : जो बात हमारे मनमें है वह किसी-न-किसी तरह सबके मण्डला रही है। ग़दरकी खबरें तो थोड़ी-बहुत सभीको मालूम हैं। पर कोई यह नहीं समझ पा रहा कि क्या करें। ख़ैर, रास्ता तो ज़रूर निकलेगा।

इन्दरसिंह : उधर चलो भैया, उस बड़के नीचे, वहाँ अपने आदमियोंका

बड़ा जमघट लगा है। किसी बाबा-बैरागीका भजन हो रहा है।

लालबहादुर : चलो देखें। [विराम, गीत पास आता है] यह तो कोई जोगन और बैरागी मिलकर गा रहे हैं। ज़रा दूरसे सुनो कि क्या है ?

[गीत निकट आ जाता है]

बाबा दे दे कमल की रोटी
दे दे कमल की रोटी
बाबा दे दे कमल की रोटी
कमल बने तेरा छत्र सिंहासन
धरती बन जाये रोटी।

लालबहादुर : यह कैसा नया भजन है। इन्दरसिंह, ज़रा ग़ौरसे सुनो।

[गीत फिर उठता है]

जोगन : ले ले कमल की रोटी, बाबा

बैरागी : दे दे कमल की रोटी

इन्दरसिंह : भजन कुछ नया-सा है। समझमें नहीं आया क्या टेक है, दे दे कमलकी रोटी ?

लालबहादुर : मैं भी यही सोच रहा हूँ। कमलकी रोटी। कमलकी रोटी कैसी ? कुछ गूढ़ गियानकी बात मालूम पड़ती है। चलो पास चलके सुनें। [विराम]

इन्दरसिंह : जोगन तो देखो कैसी मस्तानी है। [हँसता है] फिरकनी-सी नाच रही है। एक हाथमें सरबती गेहूँकी रोटी है, ललखोरी हथेली-सी गहरी, और हाथमें यह क्या है ?

लालबहादुर : कमलका फूल, गरमीसे कुछ कुम्हला गया है। हाथमें कमल और रोटी और भजनमें कमलकी रोटी। कोई बात ज़रूर है।

["सूबेदार साव आये हैं," "लाल भैया आये हैं" पृष्ठ-भूमिमें यह आवाज़ें]

इन्दरसिंह : जोगनकी आँखें कैसी काली कजरारी चमकदार हैं और हथेलियाँ तो कमलकी उनहार ही हैं।

लालबहादुर : अरे कुँवर साव, जोगी-बैरागियोंपर नज़र नहीं डालते, समझे। ये सिद्ध होते हैं। मनकी बात भाँप जाते हैं। मन्तर मार देंगे तो यहीं खड़ेके खड़े रह जाओगे।

इन्दरसिंह : मन्तर तो मार दिया कामरूपकी आँखोंने।

लालबहादुर : [धीमेसे] चुप रहो, सरम नहीं आती। सब अपने पल्टनियाँ खड़े हैं। जोगन और बैरागी हमारी ही तरफ़ देख रहे हैं। सिपाहियोंने रास्ता छोड़ दिया है। चलो अब आगे बढ़ो। [विराम] पालागन महाराज।

बैरागी : खुस रहो। प्रसन्न रहो, जयी होओ बेटा। क्या नाम है तुम्हारा ?

लालबहादुर : लालबहादुर महाराज।

इन्दरसिंह : फ़ौजमें सूबेदार हैं महाराज।

बैरागी : [लालबहादुरसे] हूँ, और तुम्हारे साथीका नाम बेटा।

लालबहादुर : इन्दरसिंह बुन्देला।

बैरागी : बच्चा, तुम्हारे संगातीकी नज़र बड़ी चंचल है। मनुआ उड़ता है। बेटा तुम बुन्देला हो, जिनकी वीरताकी कहानियोंसे बुन्देलखण्डका हर पत्थर गूँजता है। तुम होनहार हो, पर अपने मनको कसो।

लालबहादुर : [इन्दरसिंहकी ओर मुँह करके धीमेसे] कहा था हमने कि नज़रें मत फेंको।

इन्दरसिंह : छिमा करो महाराज।

लालबहादुर : बाबाजी, इन्दरसिंह अभी कुँवर पदपर हैं। नयी उमर है। गलती माफ़ करो।

बैरागी : सत्तावनकी साल है, बच्चा। कलजुगका आखिरी चरण। पृथ्वी लोट-पोट होगी। ओरसे छोर तक महाभारत मचेगा। दीन धर्मका नाश हो रहा है। पापोंसे धरतीका भार बढ़ गया है। शेषनाग सम्भाल नहीं पा रहे। उनके फन डोल रहे हैं, आसमानपर धूमकेतु घूम रहे हैं। धरतीपर आग और खूनकी वर्षा होगी। भविष्यपुराणमें लिखा है बच्चा कि कलजुगमें जब विभीषणकी सन्तान सात समुन्दरपारसे राज करने आयेगी तब धर्मका लोप हो जायेगा। तब खूनसे रँगे, सफ़ेद घोड़ेपर सवार एक हाथमें तलवार और दूसरेमें कमल लिये, एकाक्षी कल्किका अवतार होगा।

लालबहादुर : सच महाराज ?

बैरागी : हाँ बच्चा। म्लेच्छोंके खूनसे दुर्गा भवानी नवचण्डी खूनका खप्पर भरना चाहती हैं। देगा तू।

[सब एक-दूसरेका मुँह देखते हैं]

जोगन : बाबा, सब एक-दूसरेका मुँह देख रहे हैं [हँसकर] प्रले आनेसे पहले ही डर गये।

इन्दरसिंह : नहीं जोगन, कैसी ही प्रले मचे हम नहीं डरते। हम सिपाही हैं और फिर बुन्देला। हर बखत हथेलीपर जान लिये फिरते हैं। कलजुगका भार हटनेके लिए प्रले हो, हमारा खून दुर्गाके चरणोंमें चढ़े, तो जनम सफल हो जायेगा।

बैरागी : जियो बच्चा जियो। तुम्हारे—जैसोंसे ही पृथ्वी टिकी रहेगी। भवानी, दे एक रोटी बुन्देला वीरको। यह पर-

साद है बच्चा, सँभालके रखना और एक हाथसे दूसरे हाथ पहुँचाना। गब्बर बाबाकी आज्ञा है।

जोगन : [बड़ी मिठाससे] लो बुन्देला कुँवर, यह रोटी ऐसी-वैसी नहीं है। मन्त्र फुँके कमलके बीजोंसे बनी है। जहाँ-तक यह रोटी जायेगी पृथ्वीपर-से म्लेच्छोंका भार उतर जायेगा। रोटी लेना, कौल देना।

लालबहादुर : कौल-करार तो हमारी बात है। अपनी बातपर आँच नहीं आने देंगे। महाराज, एक रोटी मुझे भी मिले।

बैरागी : तुम्हें तो बच्चा, खास कामके लिए चण्डीने चुना है। भवानी, कमल दे हवलदारको।

लालबहादुर : [काँपकर] कमल, महाराज। कमलपर क्या निछावर करना होगा। रोटी तो म्लेच्छोंका भार दूर करनेके लिए खून माँगती है। और कमल ?

बैरागी : कमलकी एक-एक पंखड़ीपर भवानीके चरण पड़े हैं बच्चा, इसपर शीशका कमल चढ़ेगा, देगा तू।

लालबहादुर : दूँगा बाबा, बखत आनेपर वह भी चढ़ा दूँगा।

बैरागी : घरसे पूछ लेना बच्चा।

लालबहादुर : कोई ज़रूरत नहीं महाराज, कालपीकी जमुनाजीका पानी ऐसा-वैसा नहीं होता। हमारे घरकी तीन पीढ़ी फ़ौजमें रही हैं। जानपर खेलना सब जानते हैं।

इन्दरसिंह : हमारी रुकमा भौजी साक्षात् दुर्गाका स्वरूप हैं। बखत आनेपर सूबेदार भैयाको अपने हाथसे तिलक करके युद्धमें भेजेंगी।

जोगन : तुम्हारी कोई बहन भी है सूबेदार ?

लालबहादुर : मेरी बिन्नू सोना तो बन्दूक़का अचूक निशाना लगाती है।

तभी तो लक्ष्मीबाई साब उसे अपने साथ रखती हैं।

एक सिपाही : एक कमल और रोटी मुझे भी मिले, साँईं !

बैरागी : कमल और रोटी दोनों, अच्छा दे भवानी।

लालबहादुर : महाराज, आप तो देस-देसान्तर घूमते हैं। त्रिलोककी बात जानते हैं। यह हमारे देसमें क्या हो रहा है ?

बैरागी : देख बच्चा, ध्यानसे सुन ! ऊपर देख। वह हरे लाल रंगकी पूँछवाला तारा देख रहा है ? जब एक जुग ख़तम होता है तब यह तारा निकलता है। इस तारेकी आवाज़ मेरे कानोंमें आ रही है। एक नहीं सौ सिंहासन उलटेगा। धरतीपर पापका घड़ा भर गया है। कलिकालमें सब एक-जैसे हो जायेंगे, कोई जात-पाँत नहीं रहेगी। धर्म मिट जायेगा। तू देख रहा है कि फिरंगी म्लेच्छके राजमें क्या हो रहा है। राजा रंक हो रहे हैं। उनके कपड़े-गहने खुले आम बिक रहे हैं। बादशाही नाम-भरकी रह गयी है। पेशवे मिट गये।

लालबहादुर : ठीक कहते हो बाबा।

बैरागी : और अब देख क्या हो रहा है। तू पेट पालनेको फ़ौजमें भरती हुआ था। दीन-धर्म छोड़नेको नहीं। पर जो फ़ौजी कालेपानी पार जायेगा उसका दीन-धरम कहाँ रहेगा ?

इन्दरसिंह : ठीक है, नहीं रह सकता।

बैरागी : और कलजुगमें झूठका राज होगा यह भी मालूम है ? जो सिपाही अब काले कोसों दूर जायेगा तो भत्तेका वायदा होनेपर भी भत्ता नहीं मिलेगा। और जो आटा तुझे मिलेगा उसमें पिसी हुई हड्डियाँ खानेको मिलेंगी—

लालबहादुर : शिव शिव !

बैरागी : सिपाहीकी तनख़ाह सातसे नौ रुपये, सवारकी सत्ताईस

रुपये। तुम वीर बुन्देला और मुग़लपठान, सिपाही और सवार हो। तनखाह मिलनेपर डिल हवलदार और फिरंगी सार्जण्ट आधीसे ज्यादा बेईमानीसे घूसमें काट लेते हैं। कलजुगमें बेईमानी और अनाचार होगा यह लिखा है। सो हो रहा है।

जोगन : सब नेम-नियम टूट गये। पृथ्वी मैया करवट लेंगी।

बैरागी : और चर्बीके कारतूस, क्रिस्तानी मदरसे, आग गाड़ीमें छूत-अछूतका साथ, ज़मीन-जायजादकी हड़प, राव-राजा रईसोंका खात्मा, किसानोंकी बेदखली, सौ गाँव उजाड़कर एक छावनी, एक नये शहरकी बस्ती, घूसखोरी, ज़बरदस्ती, बेइज़्ज़ती, सीनाज़ोरी, जूतेकी ठोकर, गाली, काले आदमीकी नफ़रत यह नये नेम-नियम हैं।

लालबहादुर : बाबा, आप तो बहुत जगहसे घूमते आये होंगे। कुछ उत्तरके हाल बताइए।

बैरागी : उत्तरमें अकाल मेघ गरज रहे हैं, मेरठ, दिल्ली, लखनऊमें चण्डीने म्लेच्छोंके ख़ूनसे सिंगार कर लिया है। उनका एक बीज भी वहाँकी धरतीपर नहीं छूटा। बिठूर, कानपुर प्रयागराज, काशी, पटना, आगरा, जबलपुर, सागर, नागपुर और दूर विन्ध्याचलके पार, उत्तरसे दक्षिण और पूरबसे पश्चिम तक लाल जीभवालीकी माँग उठ रही है। जय काली।

[दूरपर बिगुल बजता है]

लालबहादुर : तो क्या एक झाँसी ही बीचमें अभागी रह गयी है।

बैरागी : यहाँ तो साक्षात् दुर्गा ही आनेवाली हैं। [बिगुलकी सुदूर आवाज़] झाँसी फिरंगीके कलंकसे पवित्र होगी। झाँसीको तीन दिशाएँ बुला रही हैं। कालपी और बिठूर,

ग्वालियर और आगरा, सागर और जबलपुर। अच्छा बच्चा, रमते जोगी एक जगह नहीं ठहरते। जय हो दुर्गे।

लालबहादुर : हम पीछे नहीं रहेंगे।

कई आवाज़ें : नहीं रह सकते, माँका दूध नहीं लजायेंगे।

और कई आवाज़ें : हमें भी रोटी दो भवानी।

: हमें कमल दो बाबा।

बैरागी : दे दे कमलकी रोटी भवानी।

जोगन : कमल बने तेरा सतजुग त्रेता।
रोटी कलयुगकी महारानी।
[दोनों गाते हुए चले जाते हैं]
कमलकी रोटी भवानी।
[विलयन, दूरपर फिर बिगुल बजता है]

एक आवाज़ : सूबेदार भैया, अब हम फिरंगीकी ज़बरदस्ती और नहीं सहेंगे।

कई आवाज़ें : एक घड़ी भी नहीं।

एक आवाज़ : तुम हुकुम दो तो अभी हमला बोल दें।

कई आवाज़ें : इसी दम। कमरबन्द कसे ही हैं। बन्दूक़ें भरी रखी हैं बारकमें, अभी चलो।

लालबहादुर : ठहरो, अभी आज रात नहीं। आज तै करेंगे कि किस तरह काम करना है, यहाँसे कहाँ जाना है। बाबाजीने कहा था कि तीन दिशाएँ बुला रही हैं। उसका बन्दोबस्त करना है।
[तीसरा बिगुल बजता है]

इन्दरसिंह : बारक वापस जानेका बिगल बज रहा है लाल भैया। बिगलका हुक्म बजाना है या नहीं।

कई आवाज़ें : हुक्म नहीं बजायेंगे। बजा करे बिगल।

लालबहादुर : [इन्दरसिंहसे] आज कुछ होके रहेगा, ऐसा लगता है। अमानखाँ दरोगाजीसे वक़्त तै करके अबतक नहीं आये। इसी वक़्त दरोगाजीसे मिलना चाहिए।

इन्दरसिंह : और बारक पहुँचनेमें देर हो गयी तो कोट मार्शलके लिए तैयार रहना चाहिए। आजकल साहब लोगोंके तेवर बदल रहे हैं।

लालबहादुर : कोट मार्शलके पहले उन्हें छठीका दूध याद आ जायेगा।

इन्दरसिंह : छठीका दूध याद करनेका वक़्त ही नहीं देंगे। धाँय फैर और खतम। चुटकी बजाते जितनी देर लगेगी, बस। देखो, वह बग्घी किसकी आ रही।

[बग्घीकी आवाज़ पास आती है]

लालबहादुर : [हल्केसे] यह तो चन्दनसाह भी इधर आ रहे हैं। रोज रातको इसी बखत साहबोंसे मीठी बातें करके लौटते हैं—[कुछ ज़ोरसे] चन्दनसाह आ रहे हैं, कुछ लोग इधर उधर बरक जायें।

इन्दरसिंह : चन्दनसाह आयें या हरिजू। अब हमें किसीका डर नहीं।

कई आवाज़ें : बिलकुल नहीं।

एक आवाज़ : चूँ-चपड़ करेंगे तो चटनी बन जायेगी।

लालबहादुर : ठहरो, हमें ही बात करने देना। सब चुप रहना [विराम] [बग्घी रुक जाती है] रामजुहार साहजी।

चन्दनसाह : खुश रहो, तरक्की हो, ओहदा बढ़े। कहो सूबेदार साहब, आज इतनी देर तक कैसे बाजारमें हो। [चारों तरफ़ देखकर] अभी पल्टन बारकमें वापस नहीं गयी। आज तो सब यहाँ दिख रहे हैं।

इन्दरसिंह : गरमी जादा है आज, घूम रहे हैं, किसीका इजारा है।

चन्दन : अरे रे, बिगड़ते क्यों हो कुँवरजो। हम तो पूछ रहे थे।

यहाँ भीड़-भाड़ देखी तो खयाल हुआ कि आज कोई ख़ास बात तो नहीं है।

इन्दरसिंह : ख़ास बात ? तो यह कहो कि ख़ास बातका सुराग लगाने—

लालबहादुर : [बात काटकर] कुछ नहीं साहजी, इन्दरकी बातका खयाल मत कीजिए। इन्हें आज गरमी ज़्यादा चढ़ गयी है।

चन्दन : हम तो यही कहते हैं भैया कि गरमी मत चढ़ाओ। जादा गरमीसे काम बिगड़ता है। सब बना-बनाया धूलमें मिल जाता है। शान्तिसे काम करो। खाओ कमाओ, तरक्की पाओ।

लालबहादुर : ठीक कहा साहजी, अपना-अपना खयाल ही तो है। लेकिन इन्दरसिंह कहते हैं कि सिरफ़ पेट भरना ही तो सब कुछ नहीं है, पशु-पक्षी भी पेट भर लेते हैं।

चन्दन : अब गियान-धियानकी बातें मत करो हमसे भैया। हमें भी सब मालूम है जो पल्टनोंमें हो रहा है। पर हम तो कहते हैं कि भैया, पल्टनका काम हिफ़ाजत करना है। बदअमनी रोकना है। नहीं तो इतने बड़े-बड़े कारबार-बैपार सब ठप हो जायेंगे। लोगोंको खाने तकको नहीं मिलेगा।

लालबहादुर : [ज़रा गरम होकर] गियान-धियानकी बातें, साहजी हम सिखा रहे हैं या आप ?

इन्दरसिंह : साहजीकी आँख तो कारबार-बैपारपर ही है, सूबेदार साब।

चन्दन : अच्छा खैर, क्या नयी खबर है सो बताओ। हम तो दिन-भर कार-बारमें लगे रहते हैं, एक घड़ीकी मोहलत नहीं मिलती। तुम लोगोंके पास नयी-नयी खबरें आती

रहती हैं। सुना, अभी कोई जोगी-जोगन यहाँ आये थे।

लालबहादुर : हाँ आये थे और चले भी गये।

इन्दरसिंह : [धीरेसे] वह अमानखाँ आ गये। अब जल्दीसे साहजी-को यहाँसे हटाओ [चन्दनसे] साहजी, आपको आज देर नहीं हो रही घर पहुँचनेमें। रात इतनी हो गयी, नौ बजे होंगे। शहरका रास्ता ज़रा सुनसान रहता है।

चन्दन : अरे हाँ हाँ, वह तो भूल ही गया। अच्छा चलूँ। भैया इन्दरजी, गुस्सा मत होना हम तो ऐसें ही कह देते हैं। खयाल रखना हमारा। अपना ही समझना। एकाध दिन दूकानपर पधारो ना, ज़रा गोट ही रहे। अच्छा ! चलो सईस, या ठहरो कन्टूमेण्टसे एकाध सन्तरी साथमें ले लूँ [आवाज़ बदलकर] अरे अमानखाँ और दरोगाजी भी चले आ रहे हैं। आज तो बाज़ारमें अच्छा खासा दरबार इकट्ठा हो रहा है।

लालबहादुर : डरो नहीं साहजी, आपका कुछ नुक़सान नहीं होगा।

चन्दन : कोई ज़रूरत पड़े तो बताना, भूलना मत। सब अपना ही समझना, हैं… हैं… हैं।

[बग्घीकी आवाज़के साथ विलयन]

इन्दरसिंह : हैं… हैं… हैं विभीषण कहींका। जासूसी करने आया था। और फिर कन्टूमेंट वापस चला गया।

लालबहादुर : भाई साहजीसे क्यों नाराज़ होते हो। उनका तो बहुत कुछ दाँवपर लगा है। दोनों तरफ़का खयाल करना पड़ता है। [ठहरकर] राम राम दरोगा साव।

बख़्शीशअली : सलाम भैया, कहो सब ठीक चल रहा है न ? कैसे याद फ़रमाया।

लालबहादुर : [अलगसे] बहुत ज़रूरी बातें हैं दरोगा साहब, सलाह

लेना है। ज़रा यहांसे कहीं दूसरी जगह चले चलें। अमानख़ाँ भाईसे तो मैंने यही कहा था कि वक़्त और जगह तै कर लें तो हम ही आ जायें।

अमानख़ाँ : मैंने अर्ज़ किया था दरोगाजीसे कि बात बहुत भारी है, आपसे बेहतर सलाहकार और कोई नहीं हो सकता। इसलिए आप मेहरबानी करके ख़ुद इसी वक़्त चले आये।

लालबहादुर : दरोगाजी आप तो जानते ही हैं कि आजकल क्या हो रहा है। मेरठ, दिल्ली और लखनऊसे रोज़ खबरें आ रही हैं। आज बादशाहका फ़रमान भी दिल्लीसे आया है। उधर पेशवे नाना साहबकी भी कुछ खबरें हैं। फ़ौजी सिपाही सब भरे बैठे हैं। बारूदमें एक छोटी-सी चिनगारी पड़नेकी देर है। ऐसेमें हमें किस तरह आगे बढ़ना चाहिए।

दरोगा : हूँ, तो ज़रा एक तरफ़ चलिए। [विराम] मेरा भी कलेजा अँगरेज़ोंका ज़ुल्म देखकर चाक हो चुका है। मैंने बड़ी तनदेही और फ़रमांबरदारीसे इनका काम अंजाम दिया। पर हमेशा बेइज्ज़ती ही हाथ आयी। हमने महाराज गंगाधर रावकी भी खिदमत की और बाई साबकी भी। पर ऐसा कभी नहीं भुगता था। महाराज भी बड़े सख्त थे, पर दीन-धरमकी इज्ज़त करते थे। आदमीकी ज़िन्दगीमें चार ही बड़ी चीज़ें होती हैं। पहला धरम, दूसरे इज्ज़त-आबरू, तीसरे ज़िन्दगीको गुज़र-बसर और चौथे ज़मीन-जायदाद। फिरंगीके हाथ वह एक भी नहीं बची।

अमानख़ाँ : हमें तो हुक्म दीजिए आप, जल्दीसे।

लालबहादुर : बस इसीकी देर है। दिल्ली मेरठवाले सभी लोग यह सोच रहे हैं कि झांसीवाले बुज़दिल हैं, वरना अबतक साथ क्यों नहीं दिया।

दरोगा - ठीक सोचते हैं। हम पीछे क्यों रहें। एक ही बारमें यह मुट्ठी-भर लोग उठाये जा सकते हैं। और फिरंगीका तख्त उलटा जा सकता है।

लालबहादुर : पर सोचना यह है कि उसके बाद हमें क्या करना चाहिए। मैं तो समझता हूँ कि बाई साबकी ख़िदमतमें सारी फ़ौज चली जाये। वे झाँसीकी बागडोर सँभाल लें। अँगरेज़ोंको सारे इलाक़ेसे निकाल बाहर करें।

दरोगा : बिलकुल दुरुस्त है। बिना बाई साबकी रायके आगेका नक़्शा नहीं बनता। उसके बाद तो एक तरफ़ कालपी-बिठूरसे और दूसरी तरफ़ आगरेकी फ़ौजोंसे मिला जा सकता है।

अमानख़ाँ : तो क्या कुछ करनेके बाद बाई साबसे अर्ज़ की जाये।

लालबहादुर : मेरी बहन सोना उनकी ख़िदमतमें है। हथियार चलानेमें माहिर है। मैं फ़ौरन उसे सब बताकर बाई साबके पास भेज दूँगा। बादमें दरोगाजी किसी वक़्त चलें जायँ।

[दूर घोड़ोंकी टापें]

इन्दरसिंह : [आते हुए] गोरे आ रहे हैं। हम लोंगोंकी खबर शायद उन्हें लग गयी। चन्दन साह कण्टूमेण्ट वापस गये थे न ?

अमानख़ाँ : हां लफ्टेण्ट ट्रम्बुल हैं, परसेल साहब और टेलर साहब भी हैं। दरोगाजीको एक तरफ़ हो जाना चाहिए वर्ना शक हो जायेगा।

इन्दरसिंह : शक तो पूरा हो चुका होगा। बल्कि यों कहो कि खबर भी पहुँच गयी होगी। न मज़ा चखाया चन्दन साहको तो इन्दरसिंह बुन्देला नाम नहीं।

[टापें पास आती हैं]

तैयार हो जाओ लाल भैया, है कोई हथियार यहां।

अमानख़ाँ : बन्दूक़ मेरे पास है। मैं दरोगाजीके साथ आते वक़्त ले आया था। दरोगाजी भी लाये हैं।

इन्दरसिंह : दरोगाजीकी बन्दूक़ मुझे दो। दरोगाजी पीछे रहें। हम दो ही इन गोरोंके लिए काफ़ी हैं।

[घोड़े रुकते हैं]

टर्नबुल : [ऊँची आवाज़में] सूबेदार लालबहादुर किड़र हाय।

लालबहादुर : सलाम ट्रम्बुल साहब।

टर्नबुल : सैल्यूट नहीं बोलटा, काला आडमी। गोलीसे उड़ा डेगा। एकडम सारा पल्टन जो इडर है, फालइन करना माँगटा।

इन्दरसिंह : [आगे बढ़कर] खबरदार, जो काला आदमी फिर कहा।

टर्नबुल : एरेस्ट हिम परसेल।

परसेल : बन्डूक नीचे रखो। इन्डरसींग। एकडम।

इन्दरसिंह : बन्दूक़ नीची नहीं हो सकती। समझे।

परसेल : सुनटा है कि नयी। बन्डूक नीचे रखो।

लालबहादुर : जो कुछ तुम्हें कहना है हमसे कहो। यह सब क्या तमाशा है ?

टर्नबुल : तमाशा बोलटा है ! इडर टुम साब इटना डेर तक काहेके वास्टे ठा। टुम खुफिया क्या बाट करटा ठा। असको साब पटा है। टुम इडर म्यूटिनी करना चाहटा। हम टोपसे उड़ा डेगा।

लालबहादुर : देखिए, लफ़टेण्ट साहब। हम यह आपकी गाली गुफ़्तार बरसोंसे सुनते आ रहे हैं। अबतक सहा पर अब नहीं सहेंगे। समझे। जबान सम्भालकर ठीक-ठीक बात करिए। वर्ना खैर नहीं होगी।

टर्नबुल : ओ टुम आँख डिखाता। टुम्हारा आँख निकल जायेगा।

अमानख़ाँ : [आगे बढ़कर] आँख निकालनेवालेकी आखें निकल जायेंगी, समझे।

टर्नबुल : ओ, टुम भी शामिल हैं। टुम लोगोंको किसने बड़काया हैं। हमने सुना इडर एक जोगन एक मेण्डीकेण्ट आया ठा। हमने उसे पकड़वा बुलाया हाय। डेखो वह आटा। [पैरोंकी आवाज़]

जोगन : छोड़ ललमुँहे। छोड़। नहीं मानता। [चिल्लाती है]

लालबहादुर : [आगे बढ़कर] यह क्या, जोगनको घसीटे ला रहा है टेलर साहब [लाल होकर] ट्रम्बुल साहब, जोगनको फ़ौरन छोड़नेका हुक्म दीजिए। वरना बहुत बुरा होगा।

इन्दरसिंह : और बैरागी बाबा कहाँ है?

टर्नबुल : और बैरागी मेण्डीकेण्ट जाब नहीं आया। मारपीट किया टो हामने उसे शूट कर डिया।

इन्दरसिंह : [चीख़कर] शूट कर दिया। क्या!

लालबहादुर : बैरागी बाबाको शूट कर दिया तुमने। ट्रम्बुल।

टर्नबुल : जोगन आया। अच्चा है। मज़ेडार है।

लालबहादुर : ट्रम्बुल। ख़बरदार जो जबान निकाली वर्ना...

टर्नबुल : वर्ना—क्या, परसेल। रेडी

इन्दरसिंह : [आगे बढ़कर] वर्ना यह [शूट कर देता है]

टर्नबुल : [आगे बढ़कर] आह!! [मर जाता है]

अमानख़ाँ : और यह ले मरदूद [शूट कर देता है]

परसेल : ऊँख [मर जाता है]

लालबहादुर : बस ख़बरदार। अब न चलाना इधर उस गारेपर वर्ना जोगनके गोली लग जायेगी। दौड़कर पकड़ो उसे।

इन्दरसिंह : गोलीके बदले तलवार काम करेगी [भागते हुए] ठहर क़साई।

अमानख़ाँ : अरे रे रे—एक झटकेमें गोरेकी गरदन ही इन्दरसिंहने उड़ा दी। शाबाश। चलो एक दम अब कण्टूमेण्ट चलें वर्ना खबर लगते ही हथियार एक नहीं मिलेगा। मैं सबको लेकर चलता हूँ, लाल, लो यह बन्दूक़।

लालबहादुर : भैया, तुम यहाँ देखना। सबको सम्भालना। मैं अभी आता हूँ।

[तमाम आवाज़ें-शोर]

इन्दरसिंह : चलो भवानी कहीं चोट तो नहीं लगी।

जोगन : चोट। क्या कहूँ, पहले ही लग चुकी है।

लालबहादुर : [आगे बढ़कर] जोगन बहन यह क्या हो गया।

जोगन : मुझे तुम अपनी बिन्नूके पास तुरन्त पहुँचा दो भैया।

लालबहादुर : अभी ले चलता हूँ। इन्दरसिंह, तुम साथ चलो, दरोगाजी भी चलें।

इन्दरसिंह : हाँ चलो अभी फ़ैसला होना है।

[विलयन]

[वही रात, शहरमें रानीमहलके पास। पहरेदार आवाज़ें लगा रहे हैं। भारी पद चापें]

पहरेदार : खबरदार, होशियार। कौन हो तुम लोग जल्दी बोलो, एक-दो।

लालबहादुर : हम हैं, फ़ौजके सूबेदार लालबहादुर।

पहरेदार : इस वक़्त यहाँ बाई साहबके महलोंपर आनेका सबब।

लालबहादुर : ज़रूरी काम है। ज़रा सुनो [पास आते हुए]

पहरेदार : वहीं खड़े रहो। आजकी रात ख़तरेकी है। क्या काम है वहीं खड़े-खड़े बताओ।

बख़्शीशअली : ठहरो, मैं बात करता हूँ। भाई हम हैं जेल दरोगा, बख़्शीशअली ! पहचानते हो।

पहरेदार : हाँ, पहचान गया । दरोगा साहब, इस वक़्त कैसे ? क्या काम है ?

बख़्शीशअली : अरे कौन इमामबख्श ।

पहरेदार : हाँ दारोग़ाजी !

बख़्शीशअली : यह सूबेदार लालसिंह हैं । इनकी बहन सोना महलोंमें बाई साहबकी खिदमतमें हैं । जानते हो । उनसे इन्हें फ़ौरन मिलना है । अपने साथमें एक जोगन बाई हैं उन्हें भी सोना बाईके पास पहुँचाना है ।

पहरेदार : रातमें महलोंपर किसीसे मिलनेकी इजाज़त नहीं है, दरोगा साहब आप तो जानते हैं । तिसपर अन्दर बहन-बेटीसे तो बिलकुल नहीं ।

बख़्शीशअली : बहुत ज़रूरी काम है इमामबख्श । जानते हो कितनी मुश्किलोंसे इन जोगन बाईको गोरोंके फन्देसे छुड़ाया है ।

पहरेदार : सुना आज पल्टनने ग़दर कर दिया । तबसे खतरा और बढ़ गया है । महलोंपर दोहरा पहरा है ।

बख़्शीशअली : [धीरेसे] ग़दरके बारेमें महारानी बाई साहबको खबर पहुँचानी है ।

पहरेदार : अच्छा तब तो ठीक है। मैं दूसरे पहरेदारको बुलाकर यहाँ तैनात कर दूँ तब भीतर जाऊँ ।

बख़्शीशअली : ठीक है ।

[विराम]

इन्दरसिंह तुम यहीं ठहरो । हम इधर खड़े हैं ।

[विराम]

लालबहादुर : सोनासे कहकर इसी वक़्त बाई साहबकी आज्ञा लेना ज़रूरी है दरोगाजी ।

बख़्शीशअली : बिलकुल ठीक है। ताकि सुबहसे काम पूरा कर लिया जाये।

लालबहादुर : पल्टनमें इसी वक़्त गड़बड़ हो रही होगी, ऐसा लगता है। दो गोरे मारे गये उधर हमारा रहना ज़रूरी था। बाई साहब जाने क्या कहें।

बख़्शीशअली : अरे कैसी बातें करते हो। वह तो ऊपरसे चुप हैं। मौक़े-की राह देख रही हैं। याद है उन्होंने मेजर इर्विसनसे क्या कहा था "अपनी झाँसी नहीं दूँगी"। झाँसी उनकी है और रहेगी। वही हमारी मालिक हैं।

लालबहादुर : कल फिरंगियोंका सफ़ाया करके चारों तरफ़ डोंड़ी पिटवा दी जाये कि आजसे बाई साहब ही मालिक हैं।

बख़्शीशअली : वह सब हम कर लेंगे। शहर पनाहकी मोर्चाबन्दी भी फ़ौरन करनी होगी। बानपुरवाले राजा मरदनसिंह, नवाब बाँदा, नाना साहब, तात्या टोपे सबको मददके लिए ख़बर देनी होगी। शहरमें, गोला, बारूद, हथियार, रसदका इन्तजाम कराना होगा।

लालबहादुर : वह सिर्फ़ हमें अपनी शरणमें ले लें। बाक़ी तो जान लिया जायेगा।

[क्रासफेड]

इन्दरसिंह : तो तुम्हारे कहाँ चोट लगी थी, बता दो जोगन।

जोगन : कहीं नहीं लगी।

इन्दरसिंह : झूठ मत बोलो, अभी तो कहा था कि कहीं लगी थी।

जोगन : तो किसीको क्या ? लगी होगी कहीं।

इन्दरसिंह : पहली बार तुम्हें देखा तो आँखें पथराके रह गयीं।

जोगन : बाबाने कहा था बच्चा मनको कस। पर तुम्हारा तो मनुवा बहुत उड़ता है।

इन्दरसिंह : तो हम क्या करें। हर बखत थोड़े ही उड़ता है, अभी-तक तो सिर्फ़ एक ही बार उड़ा है।

जोगन : उड़कर किधर चला गया।

इन्दरसिंह : कहीं पास ही।

जोगन : वापस नहीं आया।

इन्दरसिंह : नहीं आया। अब नहीं आयेगा।

जोगन : तो किसीने मन्तरसे बांधकर रख लिया होगा।

इन्दरसिंह : हाँ कामरूपकी चमकदार आँखोंका मन्तर चल गया।

जोगन : बाबा रहे नहीं। अब मैं कहाँ जाऊँगी। अपना कहीं कोई घर नहीं।

इन्दरसिंह : घर तो है। पर चूने चनखारीका नहीं है, और फिर वह दिखता भी नहीं है।

जोगन : कहाँ है ?

इन्दरसिंह : इधर है, मेरे शरीरमें बायों तरफ़ धड़क रहा है।

जोगन : हिलते-धड़कते घरमें कौन रहे।

इन्दरसिंह : रहनेवाला आयेगा तो हिलना-डुलना बन्द हो जायेगा।

जोगन : और जो झाँसीमें ग़दर हुआ तो ?

इन्दरसिंह : देख ही चुकी हो सुन्दर जोगन। पहली पूजा तो फिरंगीका सिर चढ़ाकर मैंने की है। ग़दर हुआ तो अपना चढ़ा दूँगा।

जोगन : एक नहीं दो सिर। काल भवानो मागेंगी तो अब दो सिर साथ चढ़ेंगे।

इन्दरसिंह : सच्ची।

जोगन : सच्चो। [रुककर] बाँह छोड़ दो। लाल भैया आ रहे हैं। तैयार रहना। अभी सिरफ रोटी दी थी तुम्हें।

जिस दिन कमल भेजूँ तुम बाहर प्रलै मचाना, मैं भीतर क़िलेसे आग बरसाऊँगी।

[विराम]

लालबहादुर : सोना, यह जोगन बाई हैं। बड़ी मुश्किलसे आज जान बची इनकी।

सोना : आओ भैया। अब कुछ डर नहीं होगा।

जोगन : नहीं, डर तो पहले भी नहीं था। जान जानेके पहले मेरी कटारसे उस फिरंगीकी जाती।

सोना : तुम तो साच्छात भवानी हो, बहन।

लालबहादुर : दो भवानी मिल गयी इन्दर, अब चारों तरफ़ बिजै-ही-बिजै है।

इन्दरसिंह : मेरी तो छाती दुगनी हो गयी। अब हमारे सामने कोई नहीं टिक सकेगा।

लालबहादुर : दरोगा साहब, यह है मेरी बिन्नू सोना।

बख़्शीशअली : ख़ुश रहो बेटी, आनपर आँच नहीं आये।

लालबहादुर : बिन्नू, तो तुमने महारानी बाई साहबसे पल्टनकी अरदास कही, क्या हुक्म दिया उन्होंने ?

सोना : भैया, अगर कलयुगमें कहीं दुर्गा मैयाका औतार हुआ है तो अपनी बाई साहबमें। उतनी ही दयालु हैं और समयपर उतनी ही चण्डी। [धीरेसे] बाई साहब बहुत दिनोंसे फिरंगियोंकी चाल-ढाल परख रही हैं। जब भी झाँसीके हाथसे जानेकी बात मनमें आती है—मुँह उगते सूरज-सा लाल हो जाता है। पर वे अबतक चुप रहीं क्योंकि महलमें हर तरहसे घिरी हुई हैं। फ़ौज कम है। हथियार, साज सामान और भी कम। थोड़ेसे विलैती हैं जो हर बखत जान देनेको तैयार

रहते हैं। पर इतने थोड़े-से आदमियोंसे क्या हो सकता हैं। जबतक और प्रबन्ध न हो जाये, जंग कैसे शुरू की जाये।

लालबहादुर : वह तो हम सब कर लेंगे। बाई साहब बस आज्ञा दे दें।

बख़्शीशअली : कल दोपहर तक सब इन्तज़ाम हो जायेगा। सोना बाई हमारी प्रार्थना बस उनसे कर दो।

लालबहादुर : तुमपर बहुत भरोसा है उनका, तेरी बातको टालेंगी नहीं।

सोना : टालनेकी बात ही नहीं है। हम तो सब भरी बैठी हैं। बाई साहबने सुन्दर-मुन्दर, हमें और बहुत-सी बहनोंको घुड़सवारी युद्ध कला पूरी तरह सिखा दी है।

[अमानख़ाँ आता है। घोड़ेकी टापें]

अमानख़ाँ : [तेज़ीसे आते हुए] लाल भैया जल्दी चलिए। हमारी पल्टनने वहांके आधेसे ज़्यादा फिरंगी खत्म कर दिये—गोला बारूद तोपोंपर क़ब्ज़ा कर लिया है। जो बचे-खुचे फिरंगी थे वे भागकर बाई साहबके पास आये हैं। क़िलेमें शरण लेनेको।

बख़्शीशअली : यह बड़ा अच्छा हुआ। सब कुछ हमारे हाथ आ गया। फ़ौरन छावनीमें चलकर सब कुछ हाथमें ले लेना चाहिए।

[मुन्दर भीतरसे आती है]

मुन्दर : सोना बहन, सोना [लालसे] सोना कहाँ है ?

सोना : यह रही मैं। मुन्दर ! क्या है। कोई खास खबर ?

मुन्दर : इधर आओ जल्दीसे।

[विराम]

सोना : [धीरेसे] हां बताओ क्या है ?

मुन्दर : फिरंगी बाईसाहबकी शरण आये हैं। स्कीन, गोर्डन, डनलप साहब और उनके बीवी बच्चे भी हैं।

सोना : और बाई साहबने क्या कहा ? जल्दी बता।

सुन्दर : बाई साहबने कहा : "हम सरनागतकी रक्षा ज़रूर करेंगे। पर आगे क्या होगा, सो भगवान् जाने। अब तो प्रलय हो रही है, भगवान् ही तुम्हारी रक्षा करेगा।"

सोना : उलट गया तख़त। अबतक बाई साहब घिरी थीं फिरंगियोंसे। अब फिरंगो घिरे हैं। लाल भैया—

लालबहादुर : हाँ बिन्नू।

सोना : गोरे लोग, स्कीन, गोर्डन डनलप सब बाई साहबकी सरन आ गये। दारोग़ा साहब भी सुन लें।

बख़्शीशअली : कहाँ छिपे हैं ?

सुन्दर : क़िलेमें हैं।

बख़्शीशअली : क़िलेकी चाबी किसके पास है ?

सुन्दर : वह तो सुन्दरके पास है।

बख़्शीशअली : वह हमें दे दो।

सुन्दर : और सोना बहन, गोरोंने बाई साहबसे अरदास की है कि वे झाँसीकी बागडोर सम्भाल लें और उनकी रक्षा करें।

लालबहादुर : जय हो लक्ष्मी बाईकी। अब सब काँटे दूर हुए।

ज़ोगन : [पास आकर] काँटे अभी चारों तरफ़ लगे हैं, जबतक एक-एक कर सब न उखाड़ फेंके जायें, हमें तैयार रहना होगा।

लालबहादुर : कोई फ़िकर नहीं। बीन-बीनकर काँटें फेंक देंगे।

सुन्दर : और गोराके साथ चन्दन साह भी सरनमें छिपने आये हैं।

इन्दरसिंह : चन्दनसाहको तो मैं समझ लूँगा।

अमानख़ाँ : नहीं, चन्दनसाहने जो कुछ किया अपनी जानकी बचतके लिए किया। सजा तो उन्हें मिल ही जायेगी। पर उनके भतीजे उत्तमचन्द जो दोनोंके बाद सारी जायदादके मालिक हैं वे पल्टनसे मिल गये हैं। रुपया रसद सब

देनेका वायदा किया है। वे फिरंगियोंसे बहुत बेइज़्ज़त हो चुके थे। अब नहीं सहेंगे।

लालबहादुर : बस दरोगाजो, हम कण्टूमेण्ट चलते हैं। सुबह होनेवाली है। आप डोंडी पिटवानेका इन्तज़ाम कीजिए। [विराम]

[शोर-ग़ुल। सारी फ़ौज महलपर आ जाती है]

आवाज़ें : बाई साहबकी जय हो। झाँसीकी जय हो।

एक आवाज़ : फिरंगीका तख्त उलट गया। झाँसीका तख्त बना रहे।

[डोंडी पिटती है]

आवाज़ : "खल्क ख़ुदाका, मुल्क बादशाहका, राज महारानी लक्ष्मीबाईका !"

आवाज़ें : दरसन दो महारानी।

और आवाज़ें : दरसन दो।

[डोंडी फिर पिटती है]

"खल्क ख़ुदाका, मुल्क बादशाहका, राज महारानी लक्ष्मीबाईका"

जोगन : बुन्देला कुँवर, बाबा कहते थे एक तखत पलटेगा, दूसरा बिराजेगा, कमल-सा तख्त होगा, रोटी-सी रैयत फले-फूलेगी। सो हो गया।

[डोंडी फिर सुनाई देती है]

इन्दर : धरतीसे भार उतर गया।

जोगन : भार उतर गया। अभी और उतरेगा। कमल और रोटी जहाँतक जायेंगी भार उतरता जायेगा।

[दूर डोंडी सुनाई देती है]

■

पात्र-परिचय

'जनम क़ैद' [मनोवैज्ञानिक ट्रेजेडी]

पृष्ठभूमि	:	द्वितीय महायुद्ध ।
बलराज	:	सत्याका भाई ।
पिता	:	सत्याके वृद्ध तथा रुग्ण पिता ।
सतीश	:	बलराजका मित्र तथा सत्याके पति कैप्टेन महेन्द्रका सहपाठी ।
शोभा	:	बलराजकी पत्नी ।
सत्या	:	बलराजकी एकमात्र बहन, नाटककी हीरोइन ।
कैप्टेन महेन्द्र	:	[परोक्षमें] सत्याका पति । द्वितीय महायुद्धमें बर्मा फ्रण्टपर शत्रु-द्वारा बन्दी, फिर लापता ।
रमेश, मोहन, शोभा, कल्पना, रेखा	:	अतिथि ।

'मध्यस्थ' [सामाजिक व्यंग्य]

लीला	:	एक मध्यवर्गीय गृहिणी : मनोहरकी पत्नी ।
मनोहर	:	विनोदी प्रकृतिका सुखी गृहस्थ : मध्यवित्त पदाधिकारी ।
मौसी	:	[परोक्षमें टेलेफ़ोनपर] लीलाकी मौसी ।
ब्रजमोहनलाल	:	[परोक्षमें टेलेफ़ोनपर] मनोहरके मित्र तथा दफ़्तरमें सह-कर्मचारी ।
नन्दू	:	मनोहरका नौकर ।
चन्द्रमोहन	:	ब्रजमोहनलालका पुत्र तथा सरलाका नव-विवाहित पति ।
सरला	:	लीलाकी मौसेरी बहन ।

'बारात चढ़े' [व्यंग्य]

प्रृष्ठभूमि : मध्यवर्गीय परिवारमें विवाहका समय।

प्रकाश : एक नफ़ासत पसन्द शिक्षित नवयुवक, आधुनिक एटीकेटका क़ायल : वरका मित्र।

रमा : प्रकाशकी पत्नी। वरपक्षके परिवारसे दूरका रिश्ता।

रामसिंह : प्रकाशका नौकर।

प्यारे मोहन : वरके बहनोई। अत्यन्त विनोदी प्रकृतिके व्यक्ति, प्रकाशसे हँसी-मज़ाक़का सम्बन्ध मानते हैं।

मुन्शीजी : वरके पिता।

मामा शौक़तराय : वरके मामा।

श्यामू : वरका छोटा भाई।

भोला : नाई।

पण्डित : ....

राजू : नयी उम्रका दूल्हा : कुपढ़ तथा दिमाग़से ठस, कृत्रिम रूपसे शरमीला, विवाहके स्वाँगसे गौरवान्वित।

चम्पालाल : वरका होनेवाला साला।

सरोज, शान्ति, किरन : आधुनिक शिक्षा-प्राप्त फ़ार्वर्ड लड़कियाँ, होनेवाली वधूकी मित्र तथा रिश्तेदार।

गुलज़ारीलाल : वधू पक्षके सम्बन्धी। किरनके बड़े भाई।

आवाज़ें : वरपक्षके घरमें काम करनेवाले सम्बन्धी।

'लाउड स्पीकर' [सामाजिक व्यंग्य]

पृष्ठभूमि : शहरमें बाज़ारसे लगा शोर-भरा गुंजान मुहल्ला।

स्वरूप : एक चिड़चिड़ी गृहिणी।

बुद्धू : बहरा नोकर। ऊँचा बोलनेवाला और ऊँचा ही सुननेवाला।

सुधा : स्वरूपकी सातवर्षीय पुत्री : जन्मसे रोनी।

दयाल : एक स्वतन्त्र साहित्यजीवी लेखक।

'संवत्सर' [परिकल्पना]

पृष्ठभूमि : शकोंके आक्रमणकी छायासे आक्रान्त मालवाधिपति विक्रम-का विभूतिमय युग।

युग देवी : परिवर्तनशील इतिहासकी थकी आत्मा।

संवत्सर : सामयिक परिवेशकी सीमामें निबद्ध चिरन्तन प्रवाह-मान काल।

कालिदास : महाकवि, विक्रमादित्यका मानस-मित्र और सलाहकार।

विक्रम : मालव गणराज्यका अधिपति, शकारि, विक्रमादित्य, अमरत्वका पथिक।

स्वर्णश्री : स्वर्ण-युगकी आत्मा। विक्रमकी इष्टदेवी और महत्त्वा-कांक्षाओंकी प्रेरक शक्ति।

[गान, युद्ध-वाद्य]

'पिकनिक' [कौमेडी]

पृष्ठभूमि : मध्यवर्गकी सतही रोमानी भावना तथा कैशोर उदासी। ज़िन्दगीकी थोथी समस्याओंको तूल देकर महत्त्वपूर्ण माननेकी प्रवृत्ति।

अजीत : एक शिक्षित बेकार। सांस्कृतिक कार्योंमें दिखावटी रुचि रखनेवाला, गम्भीर (सीरियस) समस्याओंके प्रति उदासीन।

नौकर : बुड्ढा नौकर, जिसने सारी उम्र अजीतके घर नौकरीमें बिता दी है।

श्याम : अजीतका मित्र। इंजीनियर, रोमानी उदासी तथा मध्य-वर्गीय थोथेपनका मज़ाक़ उड़ानेवाला।

राजेन्द्र : अजीतका मित्र। अजीतके नाट्य-समारोहका एक कलाकार।

किशन : कलाकार, नाटकमें भाग लेनेवाला।

रमा : अजीतकी अविवाहित बहन, कॉलेजकी छात्रा।

माँ : अजीतकी माता। अधेड़ विधवा।

रेखा : यूनिवर्सिटीमें अजीतकी सहपाठिनी।

प्रकाश : रेखाके बहनोई।

चन्द्रा : रेखाकी बड़ी बहन।

'कमल और रोटी' [ऐतिहासिक]

पृष्ठभूमि : १८५७ की सशस्त्र क्रान्तिका आशंकापूर्ण वातावरण। तेज़ीसे बदलते इतिहासकी पीठिकापर टूटती हुई सामन्ती पद्धतियाँ तथा तद्‌जनित गहरा सामाजिक असन्तोष। इतिहास-प्रसिद्ध व्यक्तियोंसे अलग, क्रान्तिमें पड़े सामान्य लोगोंका चित्र, जो सही अर्थमें विप्लवके परिचालक थे।

इन्दरसिंह बुन्देला : कम्पनीकी सेनाका मामूली किन्तु प्रबुद्ध सिपाही।

लालबहादुर : कम्पनीकी फ़ौजमें सूबेदार तथा उस युगके अनुसार अच्छा शिक्षित। फ़ौजका सर्वप्रिय अगुआ।

अमानख़ाँ : हवलदार। फ़ौजमें सबसे अनुभवी तथा बुद्धिमान् व्यक्ति। झाँसी-क्रान्तिकी प्रेरक तथा नियामक शक्ति।

बैरागी : धर्मके माध्यमसे नयी चेतनाका प्रतीक। विद्रोहका दूत, क्रान्तिकी आग स्थानसे स्थानपर ले जानेवाले अज्ञातनामा व्यक्तियोंमें-से एक।

जोगन : बैरागीकी शिष्या, भजन-कीर्त्तनके माध्यमसे विद्रोहकी भावनाको उभारने और फैलानेमें सहायक। बादमें इन्दर-सिंहकी प्रेयसी।

आवाज़ें : छावनीके बाज़ारमें एक फ़ौजी सिपाही।

चन्दन साह : शहरके सबसे धनी व्यापारी। छावनीमें कमसरियटके ठेकेदार। अंगरेज़ोंके खैरख्वाह तथा जासूस।

बख़्शीश अली : जेल दारोग़ा। सबसे अधिक शिक्षित व्यक्ति। विद्रोहके नेता।

टर्नबुल : अँगरेज़ लेफ़्टीनेण्ट।

पर्सल : अँगरेज़ सार्जण्ट।

पहरेदार : रानी लक्ष्मीबाईके महलोंके प्रमुख द्वारका प्रहरी।

सोना : लालबहादुरकी बहन। रानी लक्ष्मीबाईकी प्रधान अंग-रक्षिकाओंमें एक।

सुन्दर : रानी लक्ष्मीबाईकी अंगरक्षिका, सोनाकी सखी।

[डौंडी फिरनेकी आवाज़]

■

डा. डिल्ली रमण रेग्मी
कल्याणी रेग्मी स्मारक
पुस्तकालय
9042

२९८३२
मा ८२८५

गिरिजाकुमार माथुर

जन्म : २२ अगस्त १९१९, अशोक नगर (मध्यप्रदेश)। शिक्षा : एम० ए०, एल-एल० बी०, लखनऊ विश्वविद्यालयसे। १९४३ से आकाशवाणीसे सम्पर्क। बीचमें कुछ समय न्यूयार्क, इंग्लैण्ड, युरॅप, रूस, चेकोस्लोवेकिया, स्विटज़रलैण्ड तथा नैपालमें बीते। सम्प्रति केन्द्र निदेशक, आकाशवाणी, जालन्धर।

अबतक प्रकाशित कृतियाँ हैं : मंजीर (कविताएँ, १९४१), नाश और निर्माण (कविताएँ, १९४६), धूपके धान (कविताएँ, १९५४) जनम क़ैद (श्रव्य नाटक संग्रह, १९५७), शिला पंख चमकीले (कविताएँ, १९६१)। शीघ्र ही प्रकाश्य : पृथ्वीकल्प (नाटक-काव्य), तथा कविता-संग्रह।

● ●

भारतीय ज्ञानपीठ

उद्देश्य

ज्ञानकी विलुप्त, अनुपलब्ध
और अप्रकाशित सामग्रीका
अनुसन्धान और प्रकाशन
तथा लोक-हितकारी
मौलिक-साहित्यका निर्माण

संस्थापक
साहू शान्तिप्रसाद जैन
अध्यक्षा
श्रीमती रमा जैन

मुद्रक : सन्मति मुद्रणालय, दुर्गाकुण्ड रोड, वाराणसी–५